❁ श्री कृष्ण अक्षरातीताय नमः ❁

श्री परमधाम पटदर्शन

❖ प्रकाशक ❖

श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र के संस्थापक

परमपूज्य ‘‘वाणी आचार्य’’, श्री दीनदयालजी महाराज

बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

❁ श्री कृष्ण अक्षरातीताय नमः ❁

द्वितीय संस्करण	:	१००० प्रति
विजयाभिनन्द	:	३३८
वि. सं.	:	२०७२
ई. स.	:	२०१६
सेवा	:	रु. ५०१/-

प्रकाशक :

श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र

३, सुंदरधाम, जामली गली,

बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

दूरभाष क्र. : २८९९ ८७५८

श्री अक्षरातीत पचीस पक्ष के चित्रपट का अनुक्रम

क्र.	विषय	क्र.	विषय
	अनुभूमिका	२९.	लाल चबूतरा नं.२
	मंगलकामना	३०.	ताड़वन
१.	मूल मंदिर (श्री रंगमहल)	३१.	ताड़वन का एक बगीचा
२.	श्री रंगमहल के दरवाजे के हाँस की विशेषता	३२.	श्री यमुनाजी व सात घाट नं. १
३.	श्री रंगमहल	३३.	श्री यमुनाजी का पाल व सात घाट नं. २
४.	चाँदनी चौक		**दूसरी परिक्रमा**
५.	धाम का एक मंदिर	३४.	श्री यमुनाजी, पाट घाट तथा दोनों पुल
६.	रसोई चौक	३५.	श्री यमुनाजी और दोनों पुल
७.	पाँचवाँ चौक - मूल मिलावा	३६.	वट का घाट
८.	मूल मिलावा का खड़ा दृश्य	३७.	कुंज-निकुंज वन
९.	चौरस हवेलियों की चार हार	३८.	हौज कौसर ताल
१०.	दूसरी भोम, भूल-भूलवनी नं.१	३९.	तीन घाट
११.	दूसरी भोम, भूल-भूलवनी नं.२	४०.	झुण्ड का घाट
१२.	तीसरी भोम	४१.	सोलह देहुरी के घाट का खड़ा दृश्य नं.१
१३.	चौथी भोम	४२.	सोलह देहुरी के घाट का खड़ा दृश्य नं.२
१४.	पाँचवीं भोम	४३.	सोलह देहुरी का घाट
१५.	पाँचवीं भोम का चौक	४४.	सोलह देहुरी के घाट के आगे का भाग
१६.	छट्ठीं भोम	४५.	चौरस पाल के ऊपर देहुरी, वृक्ष एवं हिंडोले
१७.	सातवीं भोम	४६.	पाल की देहुरियाँ
१८.	आठवीं भोम	४७.	पाल अंदर की महलातें नं. १
१९.	नौवीं भोम	४८.	पाल अंदर की महलातें नं. २
२०.	दसवीं भोम	४९.	टापू महल
२१.	देहलानों की चाँदनी	५०.	टापू महल की चाँदनी
२२.	दसवीं चाँदनी पर गुमटियाँ	५१.	चौबीस हाँस का महल
	प्रथम परिक्रमा	५२.	चौबीस हाँस के महल की चाँदनी
२३.	सोलह हाँस का चहबच्चा	५३.	पश्चिम की चौगान
२४.	वट पीपल की चौकी	५४.	दूब दुलीचा नं. १
२५.	फूलबाग के एक सौ बगीचे	५५.	दूब दुलीचा नं. २
२६.	फूलबाग का एक बगीचा	५६.	अन्नवन
२७.	नूरबाग	५७.	पुखराज का चबूतरा
२८.	लाल चबूतरा नं. १	५८.	पुखराज की तरहटी
		५९.	बंगलों की तरहटी

श्री अक्षरातीत पचीस पक्ष के चित्रपट का अनुक्रम

क्र.	विषय
६०.	अधबीच के कुण्ड की तरहटी
६१.	ढँपे चबूतरे की तरहटी
६२.	मूलकुण्ड की तरहटी
६३.	पुखराज की छट्ठीं भोम
६४.	पुखराज की चाँदनी
६५.	हजार हाँस की चाँदनी
६६.	पुखराज पर्वत की चाँदनी का बड़ा द्वार
६७.	आकाशी महल नं. १
६८.	आकाशी महल नं. २
६९.	आकाशी महल की एक हवेली
७०.	आकाशी महल की चाँदनी
७१.	पश्चिम-उत्तर की घाटी
७२.	पुखराज पर्वत की सीढ़ियाँ तथा महलातें
७३.	पुखराजी ताल
७४.	जवेर के महल
७५.	अधबीच का कुण्ड
७६.	अधबीच के कुण्ड की छट्ठीं भोम
७७.	खास महल
७८.	अधबीच के कुण्ड की सोलह चादरें
७९.	बंगला का चबूतरा
८०.	एक बंगले का दृश्य
८१.	बंगला की एक भोम में मंदिरों की पाँच भोम
८२.	बंगले की चाँदनी
८३.	ढँपा चबूतरा और मूलकुण्ड
८४.	मूलकुण्ड तथा ढँपी यमुनाजी
८५.	ढँपी - खुली यमुनाजी
८६.	पुखराज पर्वत का खड़ा दृश्य
	तीसरी परिक्रमा
८७.	जवेरों की नहर
८८.	चार पहल का महल
८९.	आठ पहल का महल
९०.	सोलह पहल का महल
९१.	बत्तीस पहल का महल
९२.	चौंसठ पहल का महल
९३.	जवेरों की नहर का एक महल
	चौथी परिक्रमा
९४.	माणिक पहाड़
९५.	माणिक पहाड़ की एक हवेली
९६.	माणिक पहाड़ की तथा टापू महल की चाँदनी
९७.	माणिक पहाड़ के चाँदनी का तालाब
९८.	माणिक पहाड़ के टापू महल की चाँदनी
९९.	माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य नं. १
१००.	माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य नं. २
१०१.	माणिक पहाड़ की चाँदनी तथा जमीन पर बगीचे, नहरें व महानद
	पाँचवीं परिक्रमा
१०२.	वन की नहर का एक पहल (ऐसे बत्तीस (३२) पहल फिरे हैं)
	छट्ठीं परिक्रमा
१०३.	छोटी राँग (चार हार हवेली) नं. १
१०४.	छोटी राँग (चार हार हवेली) नं. २
१०५.	छोटी राँग की एक हवेली
	सातवीं परिक्रमा
१०६.	बड़ी राँग (दुर्ग-किला) का एक पहल (ऐसे बत्तीस (३२) पहल फिरे हैं)
१०७.	बड़ी राँग की एक हवेली
१०८.	सागर (मध्य भाग की संधियाँ तथा टापू महल)
१०९.	सागर का एक टापू महल
११०.	श्री परमधाम के पचीस पक्ष नं. १
१११.	श्री परमधाम के पचीस पक्ष नं. २
११२.	श्री राजजी का मुकुट

अक्षरातीत -
निष्कलंकावतार महामति श्री प्राणनाथजी

हे धनी!

मैं यह परमधाम पटदर्शन, आपकी हे देन आपके श्री कोमल युगलचरणों में समर्पित करता हूँ।

-दीनदयाल.

- श्री राज -
महामति श्री प्राणनाथजी

श्री धनीजी को जोश आतम दुलहिन, नूर हुकुम बुध मूल वतन।
ए पाचों मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत ।।

- (तारतम सागर।)

❁ अनुभूमिका ❁

इस अथाह, अपरम्पार विश्व संसार के बीच में आध्यात्मिक विषयों के उत्कृष्ट जिज्ञासुओं ने अनेकों उपायों तथा विभिन्न मार्गों द्वारा अपनी आत्मा के सम्बन्धी जिन शाश्वत - परब्रह्म तत्त्व को खोजने का अथवा उस पर विचार - विवेक करने का प्रयत्न किया, उस परमतत्त्व की खोज के विषय में सृष्टि के आद्यकाल से ही भारत वर्ष (खण्ड) का उत्तमातिउत्तम एवं सर्वोच्च स्थान रहा है क्योंकि भारत भूमि अनादि काल से ही आस्तिक भावनामय तपोभूमि रही है। परन्तु आत्म - तत्त्व के सम्बन्धी उस अगम, अगोचर ब्रह्मत्त्व को प्राप्त करना, वहाँ के धाम एवं स्वरूप के दर्शन करना, इतना सहज, सरल अथवा सुगम विषय नहीं है। परमात्मा तत्त्व को प्राप्त करने की विफलता का सभी धार्मिक सद्ग्रन्थादि एवम् वेद - शास्त्रों में निर्देश किया गया है, किंतु वास्तविकता तो यह है कि नाना प्रकार के उपायों तथा विभिन्न प्रकार के क्रिया - कलापों से भी इस अगम्य तत्त्व की उपलब्धि नहीं हो सकती। इसी कार्य- कारण से तो निम्नोक्त प्रकार से निर्देश किया गया है। जैसे -

''अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोक" - (छांदोग्य ८-१)

अर्थात् यह सम्पूर्ण ब्रह्मलोक अक्षरातीत श्री परमधाम ''अपहतपाप्मा" अर्थात् निर्मल आत्मायुक्त पुरुषों को ही प्राप्त होता है क्योंकि यह तो ''सत्यकाम: सत्य संकल्प:" - सत्य कामना और सत्य संकल्पों का भण्डार है, जो सत्पुरुषों को ही प्राप्त होने की वस्तु है।

वस्तुत: परब्रह्म के मूल स्वरूप में सम्पूर्ण ब्रह्मधाम ही रहस्यपूर्ण रूपेण संनिहित है। इस तथा ऐसे गहन रहस्य को स्पष्ट करने के लिए ही ''ब्रह्मपूर पुण्डरीक वेश्म्"- मूल मंदिर के भीतर जो वस्तु है, उसे विशेष रूप से जानने को कहा गया है । अत: ''ब्रह्मस्वरूप पुण्डरीक वेश्म"- मूल मंदिर किन-किन अचिन्त्य अलौकिकताओं से परिपूर्ण है?

वेद-श्रुतियों में परब्रह्म परमात्मा के अक्षरातीत परमधाम के सच्चिदानन्द स्वरूप, लीला आदि पदार्थों का जिस प्रकार का निर्देश किया गया है, उसी तरह पुराणादि में भी विस्तार से ब्रह्मधाम का वर्णन पाया जाता है। अत: निम्नोक्त श्रुति वचनों का अवलोकन अत्यावश्यक है, जैसे - **''ब्रह्मलोके तृतीयस्यां मितो दिवि। तदैरं मदीयं सरस्तदश्वत्थ सोमसवन:" - (छांदोग्य, प्र. ८, खं.५-३)।**

अर्थ:- इत: = यहाँ से, - तृतीयस्यं दिवि ब्रह्मलोके = तीसरा जो दिव्य ब्रह्मलोक है; तद् ऐरं मदीयं सर: अर्थात् तद् - वहाँ पर; ऐरम् - अन्न वन हैं, मदीयं सर: - हर्षोत्पादक सरोवर - तालाब है; तद्अश्वत्थ: सोमसवन: = वहीं पर अश्वत्थ अर्थात् पीपल का वन और सोमसवन अर्थात् अमृत वन - आम का वन भी है।

श्रुति कथित उक्त वचनों से परब्रह्म - परमात्मा के धाम को तृतीय लोक बताया गया है क्योंकि श्रुति वचनों के अनुसार क्षर, अक्षर और उत्तम अक्षरातीत - ये तीनों पुरुष हैं और लोक भी तीन ही हैं। हद अर्थात् नारायणी सृष्टि के नाशवान होने से वन सब क्षर लोक कहलाता है। उससे पर अविनाशी अक्षर लोक बेहद भूमिका कहलाती है। उससे भी मतलब बेहद से भी परे जो पचीस पक्ष अक्षरातीत परमधाम है, वह तीसरा लोक कहलाता है। वहीं पर मदीय - अमृतमय सरोवर, हौज कौसर तालाब, अश्वत्थ वन अर्थात् पीपल वन और सोमसवन अर्थात् अमृत वन है। पुन: निम्नोक्त श्रुति वचन इस तरह निर्देश करते हैं। जैसे -

यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनाऽऽवृतां पुरम।
तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददूः ।।

- (अथर्ववेद, कां. १०, अनु. १, सू. २, मं.२९)।

अर्थ:- यः = जो ज्ञानी विद्वान्; वै = निश्चय; अमृतेन आवृताम् = अमृत नामक वन से आवृत; ब्राह्मणः= ब्रह्म की; तां पुरम् = उस पुरी - धाम को; वेद = जानता है; तस्मै = उसके लिए; ब्रह्म = परमात्मा; च = और; ब्राह्मी प्रजा अर्थात् ब्रह्मसृष्टि; चक्षुः= दिव्य दृष्टि; प्राणम् = प्राण; च = और; प्रजाम् = उत्तम संतान अथवा ज्ञान को; ददूः = देते हैं।

उपरोक्त श्रुति कथित वेदमंत्र ब्रह्म की पुरी अर्थात् धाम का स्पष्ट वर्णन कर रहे हैं। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि ब्रह्म से भिन्न "पुरी वा धाम" नहीं है। अतः वेद - श्रुतियों के उक्त वचनादि इस कथन को प्रमाणित करते हैं कि जिन उपायों, साधनों से हम विचार- विवेक करते हैं या तदर्थ प्रयत्न करते हैं, देखने, सुनने, सोचने किंवा प्रयत्न करने की वे सारी प्रबल शक्तियाँ हमें उन्हीं से उपलब्ध होती हैं। इन प्रकृतिजन्य मन, प्राणादि से ब्रह्म को कैसे जाना जा सकता है? क्योंकि हमारी शक्तियाँ, हमारा ज्ञान, हमारी सुझ-बुझ बहुत ही सीमित एवं प्राकृतिक प्रभावों से युक्त हैं। अतः जिसे प्रकृति के परे से भी परे "अक्षरात्परतः परः" कहा है, उस असीम तत्त्व को परम कृपालु परमात्मा की असीमित अनुकम्पा के सिवाय कैसे जाना जा सकता है? इसीलिए तो संसार के आद्यकाल से लेकर अभी (वि.सं. १७३५-३८) तक साकार-निराकार दर्शन प्रति हुए विचार - विमर्शादि के बोलबाला का ही विकास हो पाया है तथा होते आया है, उसके आगे का नहीं। अन्यथा वेद- श्रुति, शास्त्रादि में निम्नोक्त प्रकार से साकार - निराकार के परे से भी परे का वर्णन किस "कार" के अंतर्गत किया गया है? अतः हम निः संकोच ही प्रमाणशः जानकर यह मान सकते हैं कि वे तत्त्व तो "शुद्ध साकार" हैं। जैसे -

एवं विदित्वा परमात्मरुपं गुहाशयं निष्कलमद्वितीयम् ।
समस्त साक्षिं सदसद्विहीनं प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम् ।।

-(कैवल्य)।

अर्थः- जो तत्त्वज्ञ श्रद्धा, भक्ति और निरन्तर चिन्तन द्वारा ह्रास - वृद्धिरहित अक्षरातीत ब्रह्मधाम में स्थित अद्वितीय परब्रह्म के स्वरूप को जानकर सबके साक्षीभूत, सत-असत (साकार-निराकार) से परे विशुद्ध स्वरूप - "शुद्ध साकार" परात्पर अद्वैत परब्रह्म को भजता है, वही उस परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

पुनः

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष, आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्।।

-(मुण्डक ३, खण्ड २-३)।

अन्वयार्थ :- अयम् = यह; आत्मा = परब्रह्म परमात्मा; न प्रवचनेन = न तो प्रवचन से; न मेधया = न बुद्धि से; न बहुना श्रुतेन = न बहुत सुनने से ही; लभ्य := प्राप्त हो सकते हैं; एष: = यह; यम् = जिसको; वृणुते = स्वीकार कर लेता है; तेन एव = उसके द्वारा ही; लभ्य: = प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि; एष: = यह; आत्मा = परमात्मा; तस्य = उसके लिए; स्वाम् तनुम् = अपने यथार्थ स्वरूप को; विवृणुते = प्रकट कर देते हैं।

भावार्थ:- उक्त मंत्र द्वारा यह बात समझायी गई है कि परमात्म न तो उनको मिलते हैं, जो शास्त्रों को पढ़-सुनकर लच्छेदार भाषा में परमात्मा तत्त्व का नाना प्रकार से वर्णन करते हैं, न उन तर्कशील बुद्धिमान मनुष्यों को ही मिलते हैं, जो बुद्धि के अभिमान में प्रमत्त होकर तर्क द्वारा विवेचन करके उन्हें समझाने की चेष्टा करते हैं और न उन्हीं को मिलते हैं, जो परमात्मा के विषय में बहुत कुछ सुनते रहते हैं। वे ब्रह्म - परमात्मा तो उन्हीं को प्राप्त होते हैं, जिन्हें वे स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। पुन: वे स्वीकार भी उन्हीं को करते हैं, जिन्हें उनके लिए उत्कट इच्छा होती है, जो उनके बिना नहीं रह सकते, जो अपनी बुद्धि या साधन पर भरोसा न करके केवल उनकी कृपा-दया की ही प्रतिक्षा करते रहते हैं। ऐसी कृपा - दया पर निर्भर रहनेवाले साधकों पर ही परमात्मा कृपा-मेहेर एवं दया करते हैं और योगमाया का पर्दा हटाकर उनके सामने अपना धाम, स्वरूप, लीलादि प्रकट कर उन्हीं से जाहिर भी करा देते हैं।

परम श्रद्धावान धामस्थ सुंदरसाथजी! उक्त ब्रह्मधाम से इस नश्वर संसार का असत्, जड़ एवम् दु:खरूपी नाटक देखने आई हुई द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं के कारण ही इस दिव्यातिदिव्य धाम का ज्ञान यहाँ प्रकट हुआ है। ''अक्षरात्परत: पर:'' अविनाशी अक्षर ब्रह्म के दूसरे लोक अर्थात् बेहद भूमिका से परे स्थित तृतीय लोक उत्तम पुरुष परमात्मा अक्षरातीत के ब्रह्मधाम पचीस पक्ष की इस चित्रावली (चर्चनी पटदर्शन) में परमधाम के महल-मंदिर, नदी-नहर, नद-सागर, वन-उपवन, गिरि-पर्वत, द्वार-कमानादि सच्चिदानंद स्वरूप यावत् पदार्थों की विभिन्न जातियों के रेखाचित्र दिए गए हैं। इस चित्रावली पद्धति की शुरुवात श्री निजानन्द स्वामी सद्गुरु ने ही की थी। जैसे -

चित्र लिखे मंदिर बिषे, जमुना धाम बनाइ।
सात घाट अक्षर सहित, लखैं साथ उत जाइ ।।

-(वृतान्तमुक्तावली, प्र. ३७/चौ.३८)

उसके अनन्तर महामति श्री प्राणनाथजी ने परमधाम के दिव्य चिन्मय पदार्थों का विस्तार सहित वर्णन किया। पुन: अपने धर्म-पर्याटन के दौरान स्वयं महामति श्री प्राणनाथजी ने उदयपुर के तालाब (झील) की हवेली में परमधाम पचीस पक्ष के ''चित्रपट'' खिंचवाए थे। जैसे -

वहाँ पटका काम चले, लिखावें बैठे श्री राज।
मुकुन्ददास दरोगा रहे, बैठा था इन काज ।।

-(श्री लालदासकृत बीतक, प्र. ४९/चौ.८८)।

उस समय वहाँ पर हद-बेहद के विराट पट तथा परमधाम के चर्चनी पटदर्शन का कार्य चला करता था। श्री जी स्वयं चित्रपट का क्रमश: वर्णन करके चित्रावली सहित विरत लिखवाते थे। मुकुन्ददासजी इस कार्य की देख-रेख के लिए निरीक्षक के रूप में आगे बैठते थे।

अत: चर्चनी की चित्रावली का पट गहन मनन तथा पर्याप्त प्रयासों द्वारा तैयार किया है, जो धामस्थ सुंदरसाथ के लिए अत्यंत हृदयग्राही सिद्ध होगा। यद्यपि चित्रावली के अंतर्गत परमधाम के

महलों आदि की जैसी गणना बताई गई है, उसे उतना ही है, ऐसा नहीं समझना चाहिए। इतना अल्प वर्णन अथवा गणना तो हमारे दिल-दिमाग में समा सके, इसलिए किया गया है। सत्-चित्-आनन्दघन पदार्थों में इयत्ता परिच्छेद नहीं होती। प्रत्येक पदार्थ समूह अपरिमेय, असंख्य, अवर्णनीय, गणना में हैं। इसीलिए तो महामति श्री प्राणनाथजी ने कहा है कि -

''बेसुमार ल्याए सुमारमें, सो भी साथ करन"

इस अपरिमेय अनन्त अक्षरातीत ब्रह्मधाम का इतना सीमित वर्णन इन स्वरूपों को हमारे हृदय में भरने-भराने हेतु तथा हमारे चित्त द्वारा अविकल्प विश्वास सहित उनका नित्य स्मरण हो सके, इसीलिए किया गया है।

हे धामस्थ श्रद्धा सुमन साथजी! उपरोक्त सद्प्रमाणों को जानने तथा मनन करने के बाद आप सभी को इतना तो विदित हो ही गया होगा कि सद्कार्यों की प्रशस्ति के लिए ही परमहंस ब्रह्मस्वरूप सद्पुरुषों का अवतरण होता है। जिस तरह महंमद द्वारा कुरान, ईसा द्वारा बाईबलादि सद ग्रंथो का अवतरण हुआ, पुन: ये सभी ग्रंथ तो २८ वें कलियुग के बुद्ध-कल्कि अवतारों के अवतरण लीला, धाम, स्वरूपादि के साक्षी के रूप में अवतरित हुए, ठीक उसी प्रकार वह धाम जहाँ स्वयं साक्षात् अक्षरातीत परब्रह्म अपनी अंगनाओं सहित रहते हैं, जिस प्रकार की लीला करते हैं तथा उनके स्वरूप का सविस्तार वर्णन कराने हेतु परात्पर अद्वैत पूर्णब्रह्म परमात्मा अथवा हमारे धनी श्री राजजी ने अपनी असीम अनुकम्पा सहित अपना जोश प्रदान कर सद्गुरु श्री देवचंद्रजी तथा महामति श्री प्राणनाथजी को चुना तथा उनके द्वारा परमधाम पचीस पक्ष की यावत् सामग्रियों को इस नाशवंत ब्रह्मांड में ला खड़ा किया।

अत: आत्मोद्धार की जिज्ञासु, पिपासु हे आत्माओं! जिस बेशुमार को हम आत्माओं के लिए हमारे धनी ने शुमार में लाकर रख दिया, उसके लिए ऐसा सोचना कि अपने ही घर के महल, मंदिर, थंभ, गली आदि गिनने की क्या आवश्यकता अथवा धनी द्वारा विचार-विवेकवत् निश्चित कर ठहराए गए मूल बुनियाद २५ पक्ष में मनगढंत अटकलों द्वारा असोच्य प्रतिबिंब खड़े करना जीव सृष्टियों के मूढ़ अक्ल का प्रदर्शन ही कहलाएगा क्योंकि ब्रह्मात्माओं के लिए ही तो कहा गया है कि -

''नसीहत लै जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए"

पुनः

जो अरवाहें अरस की, सो यामें खेले रात दिन ।
ऊपर तले माहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन ।।

-(परिक्रमा, प्र. १३/चौ.८६, ८७)।

अत: जो धामस्थ अंकुरी आत्माएँ हैं, वे तो अवश्य ही अपने हादी के कदम पर कदम रखकर परमधाम की गलियों में भ्रमण करेंगीं और उन्हें करना ही पड़ेगा। उक्त कथित हस्त- चित्रित मूल पट की नकल का ही प्रचार - प्रसार आज श्रीमन्निजानन्द - श्री कृष्ण प्रणामी धर्म समाज में होता आया है। अत: इतनी ही अपेक्षा है कि धाम के इस अमूल्य खजाने द्वारा अक्षरातीत ब्रह्मधाम तथा स्वरूपों का मनन एवम् जतन होता रहे तथा होता जाय।

सुज्ञेषु किं बहुना -

- मेरे धामस्थ सुंदरसाथ को सादर प्रणाम।

- दीनदयाल

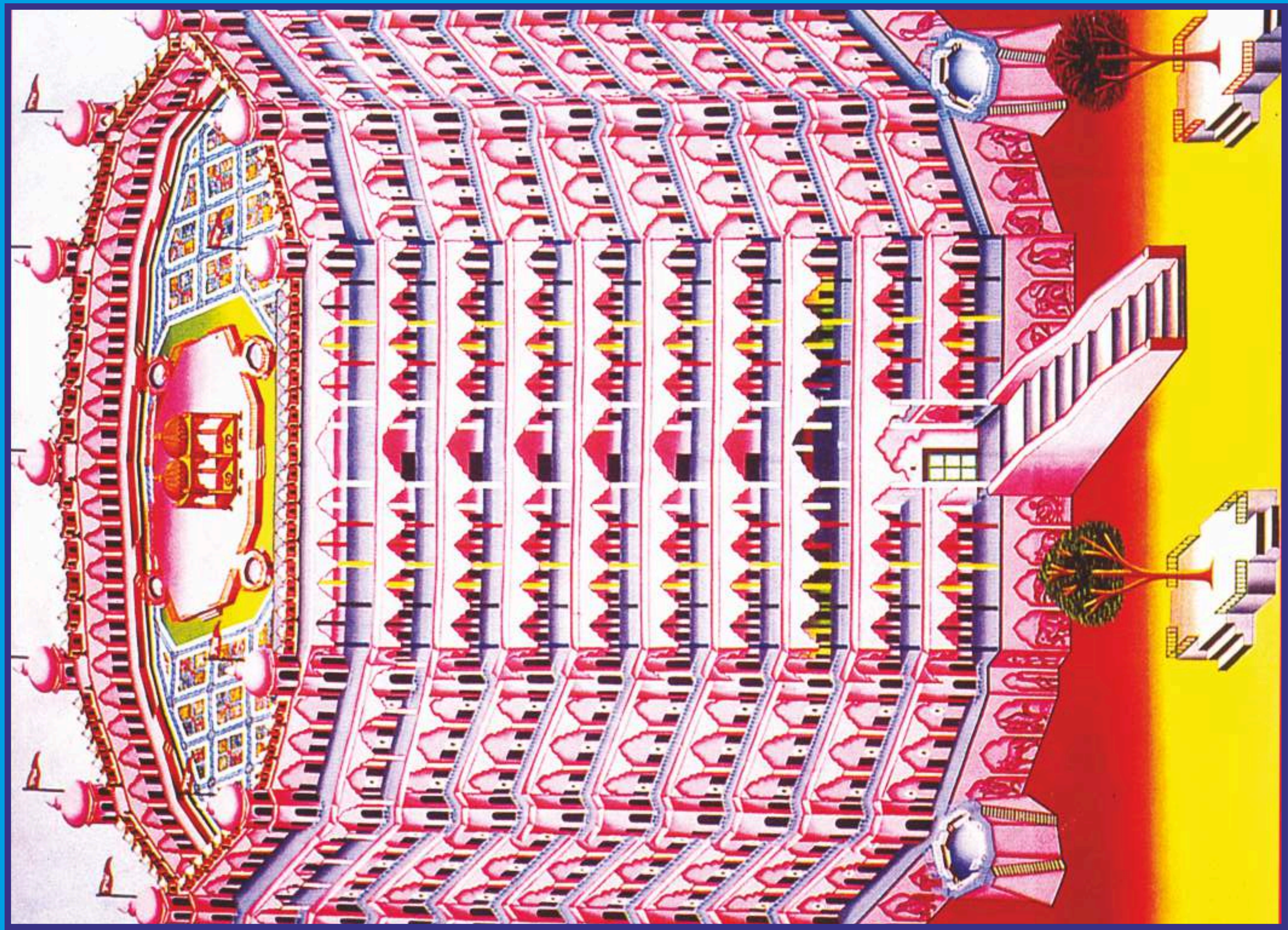

मूल मन्दिर (श्री रंगमहल)

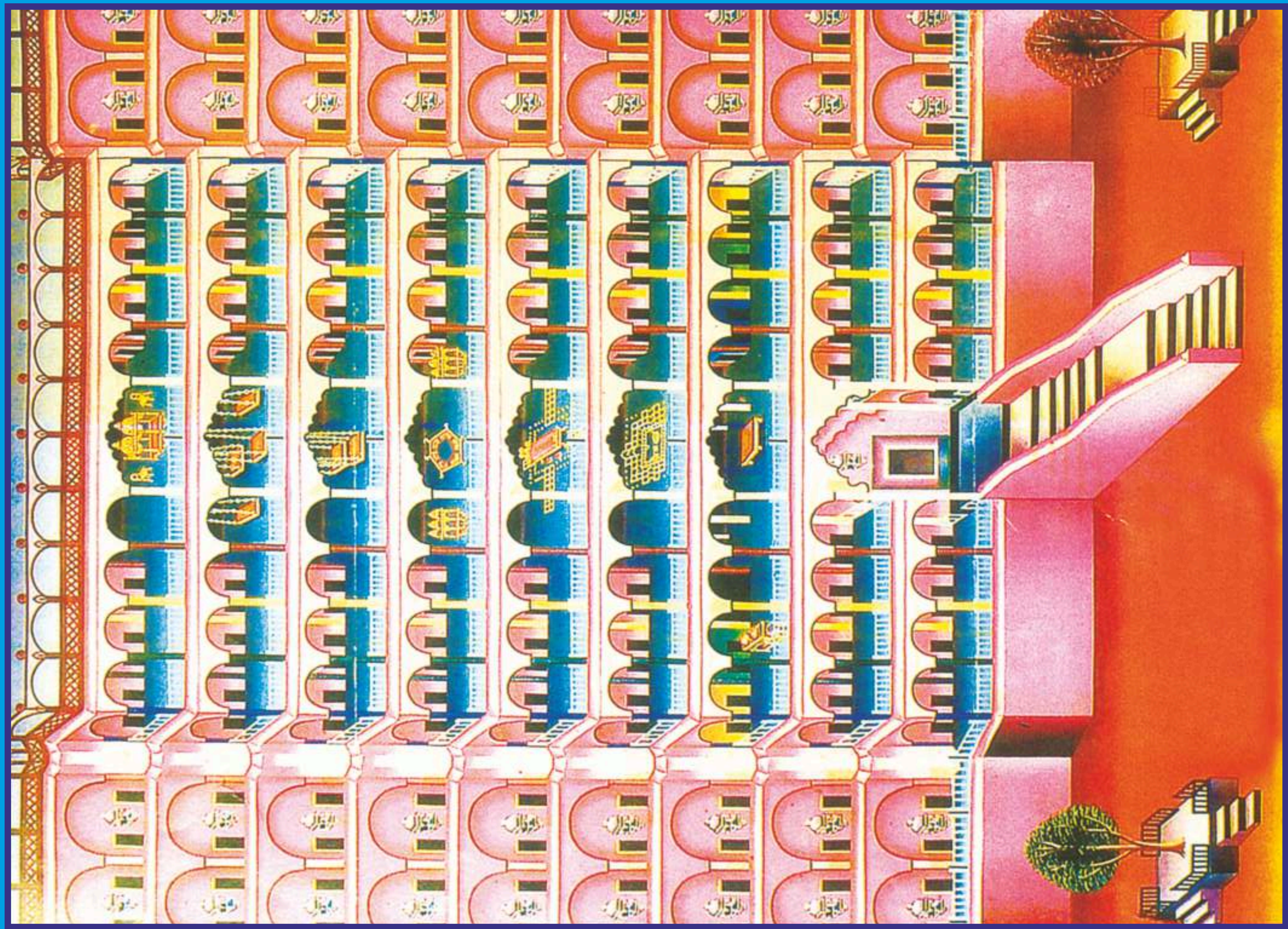

श्री रंगमहल के दरवाजे के हाँस की विशेषता

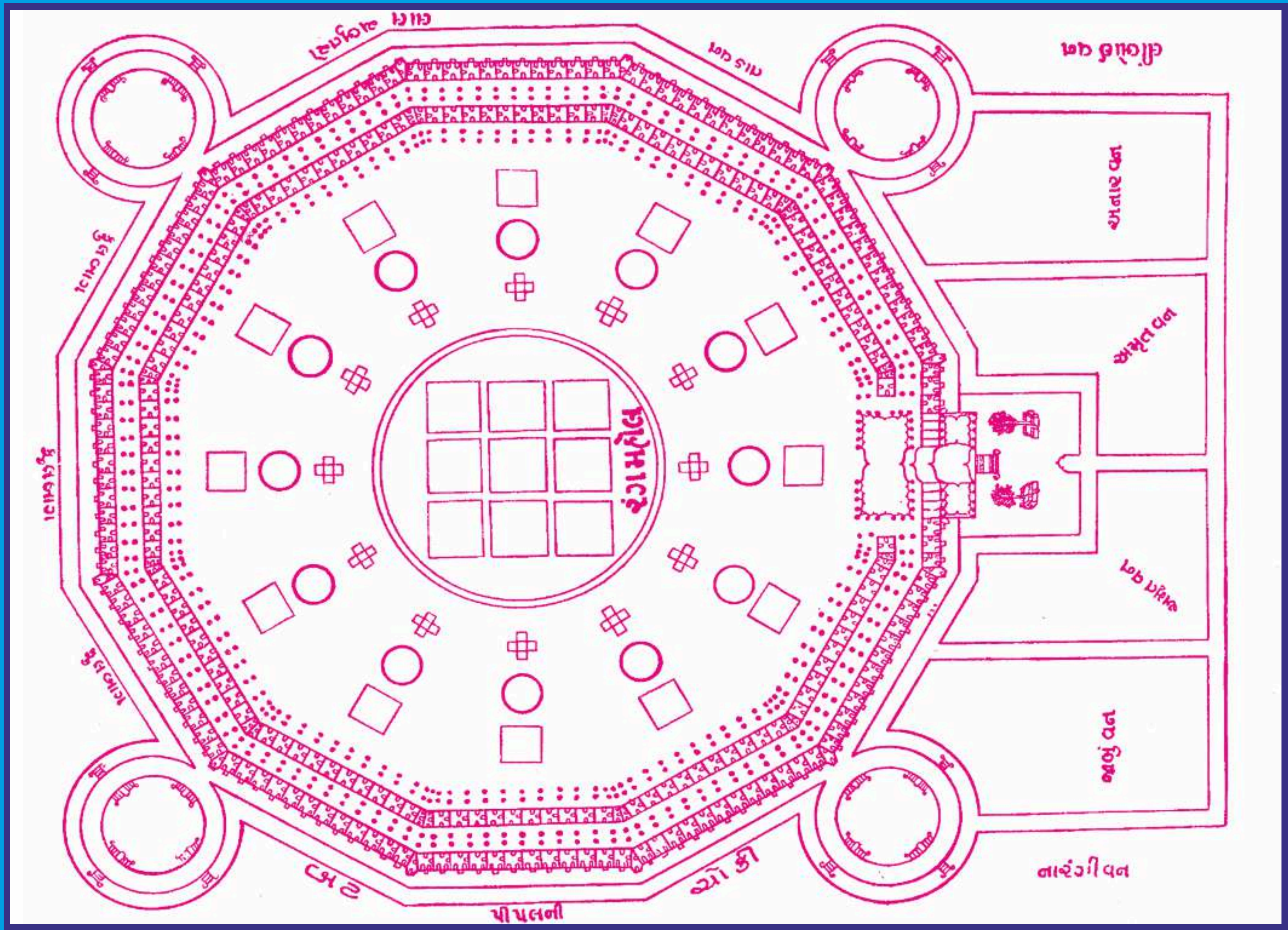

श्री रंगमहल

चाँदनी चौक

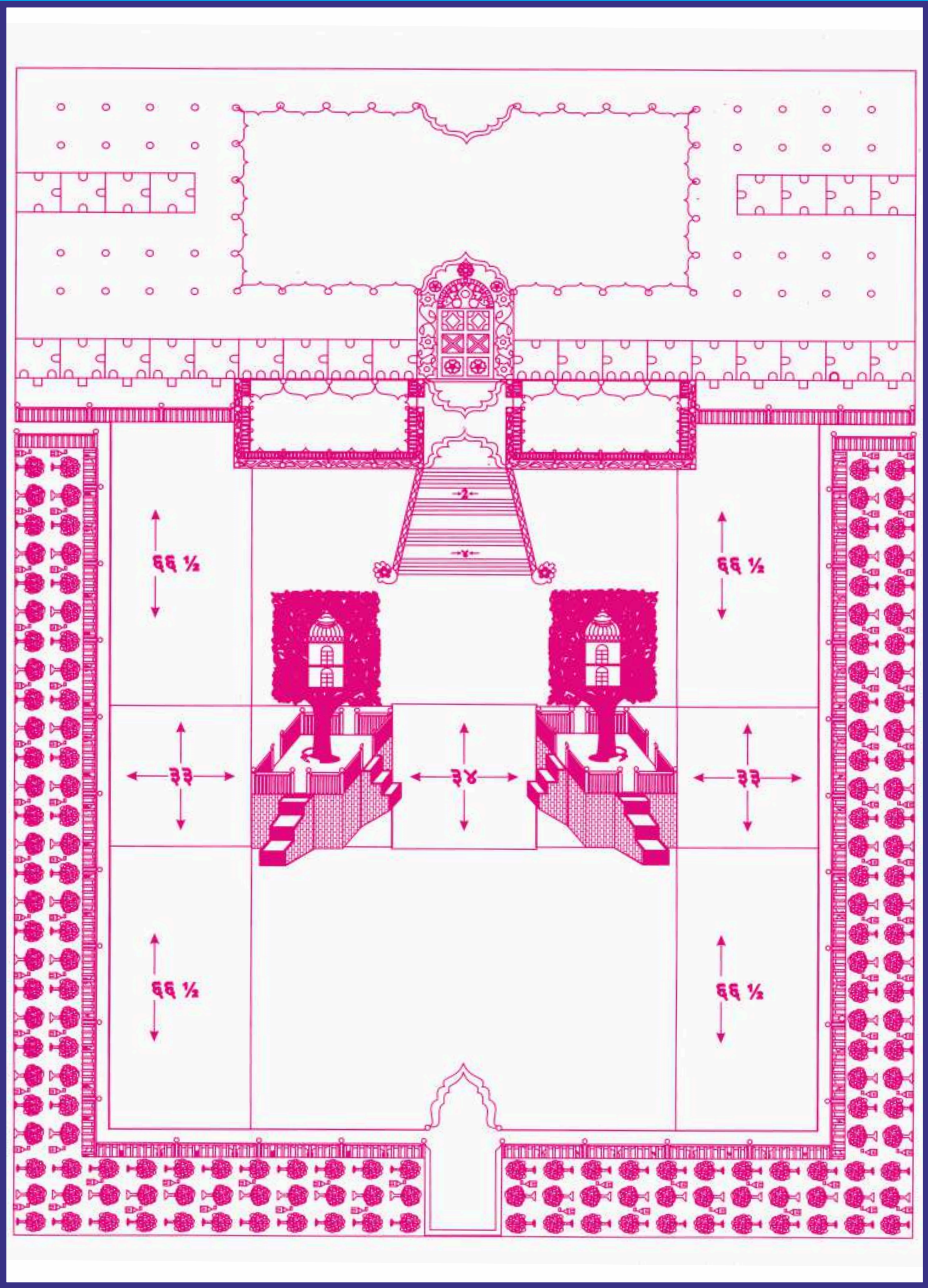

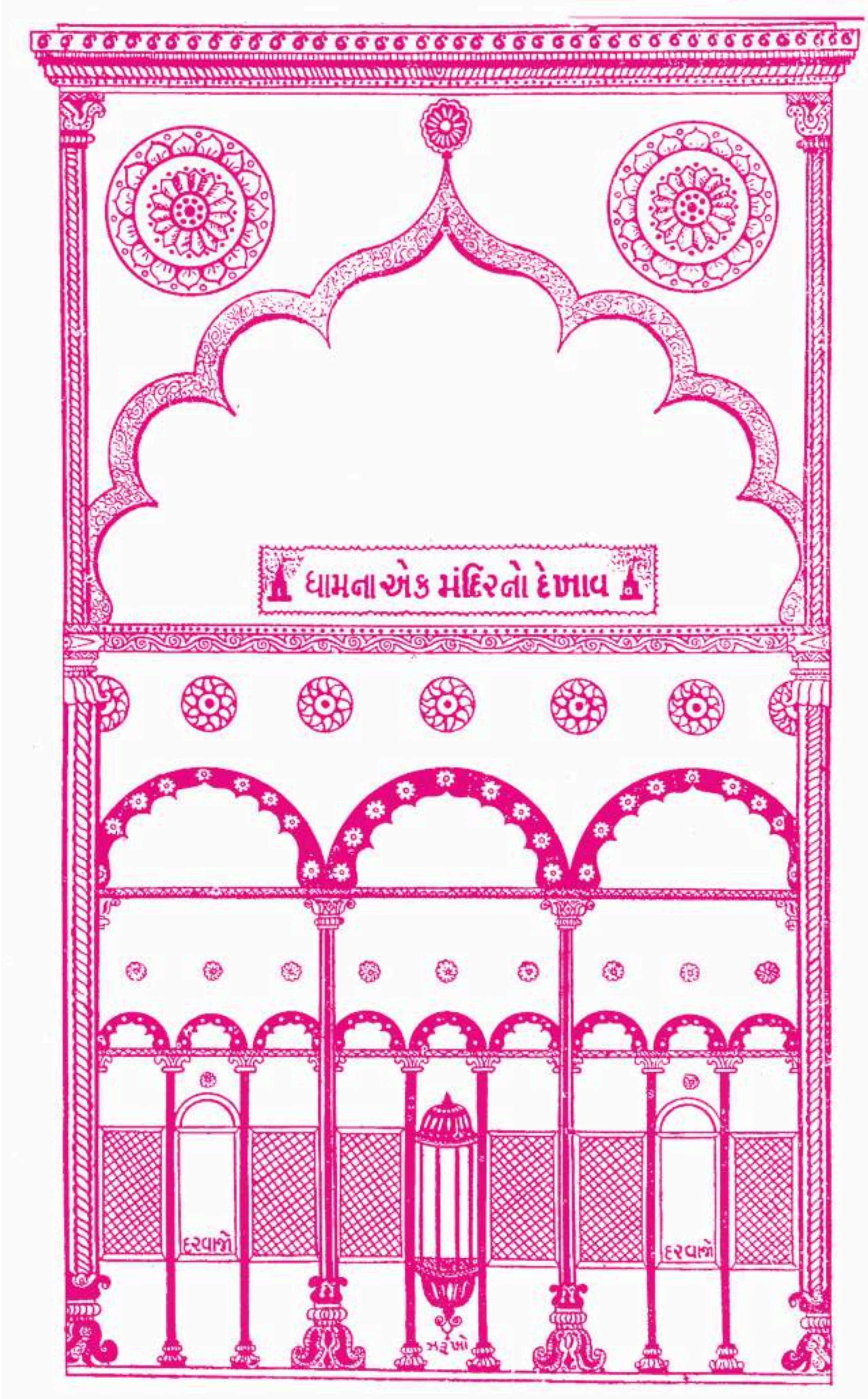

धाम का एक मंदिर

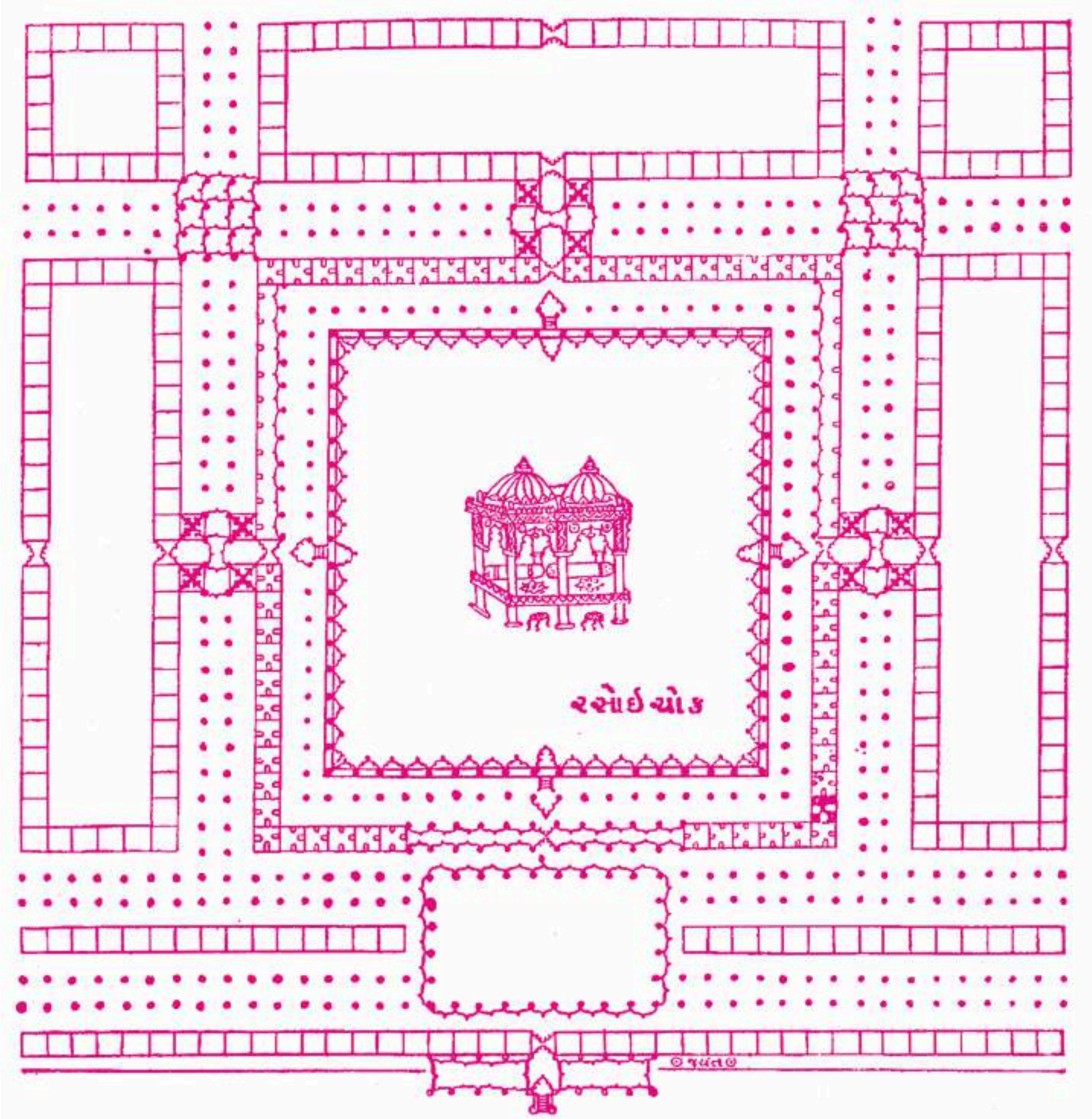

रसोई चौक

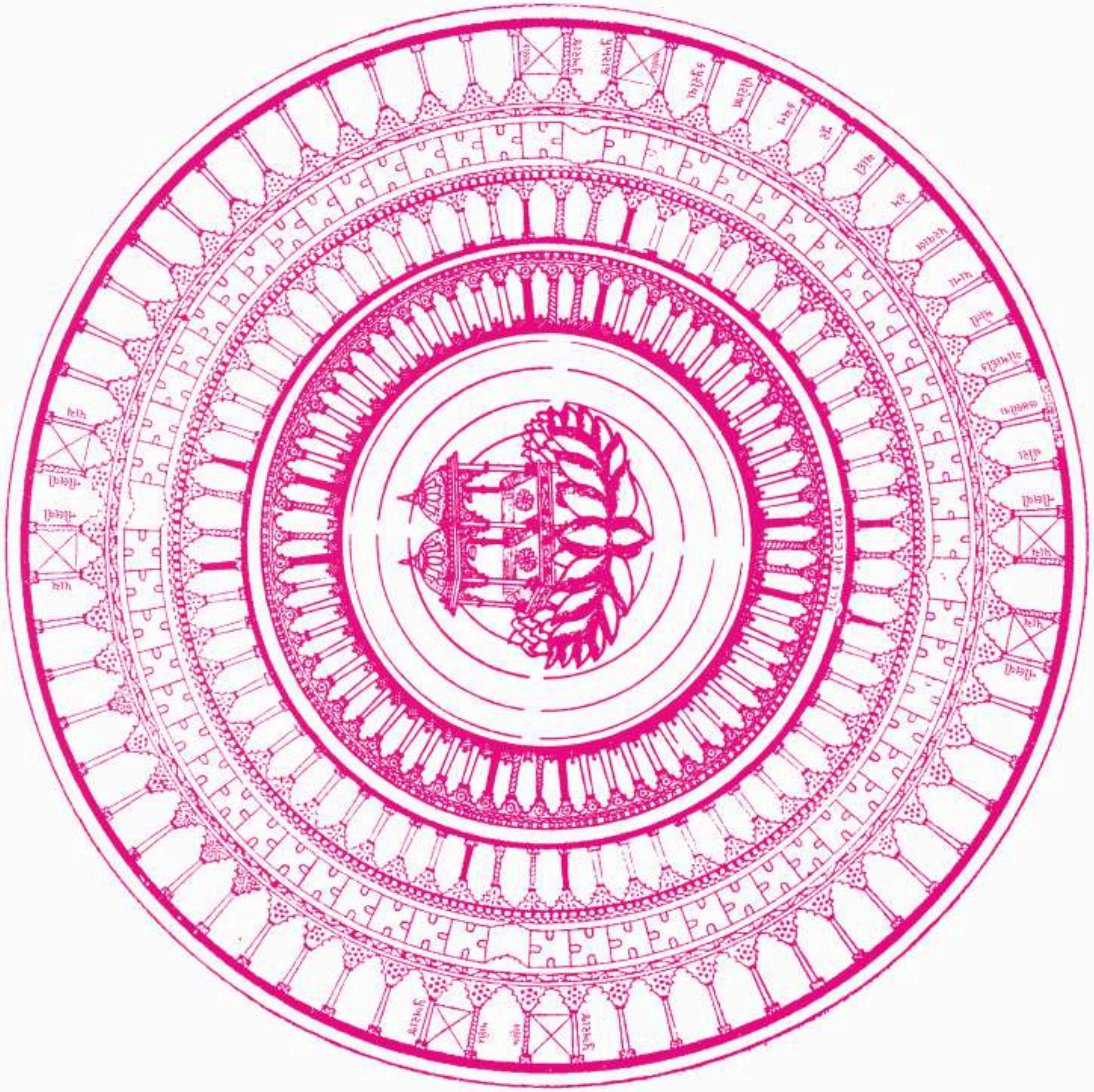

पाँचवाँ चौक-मूल मिलावा

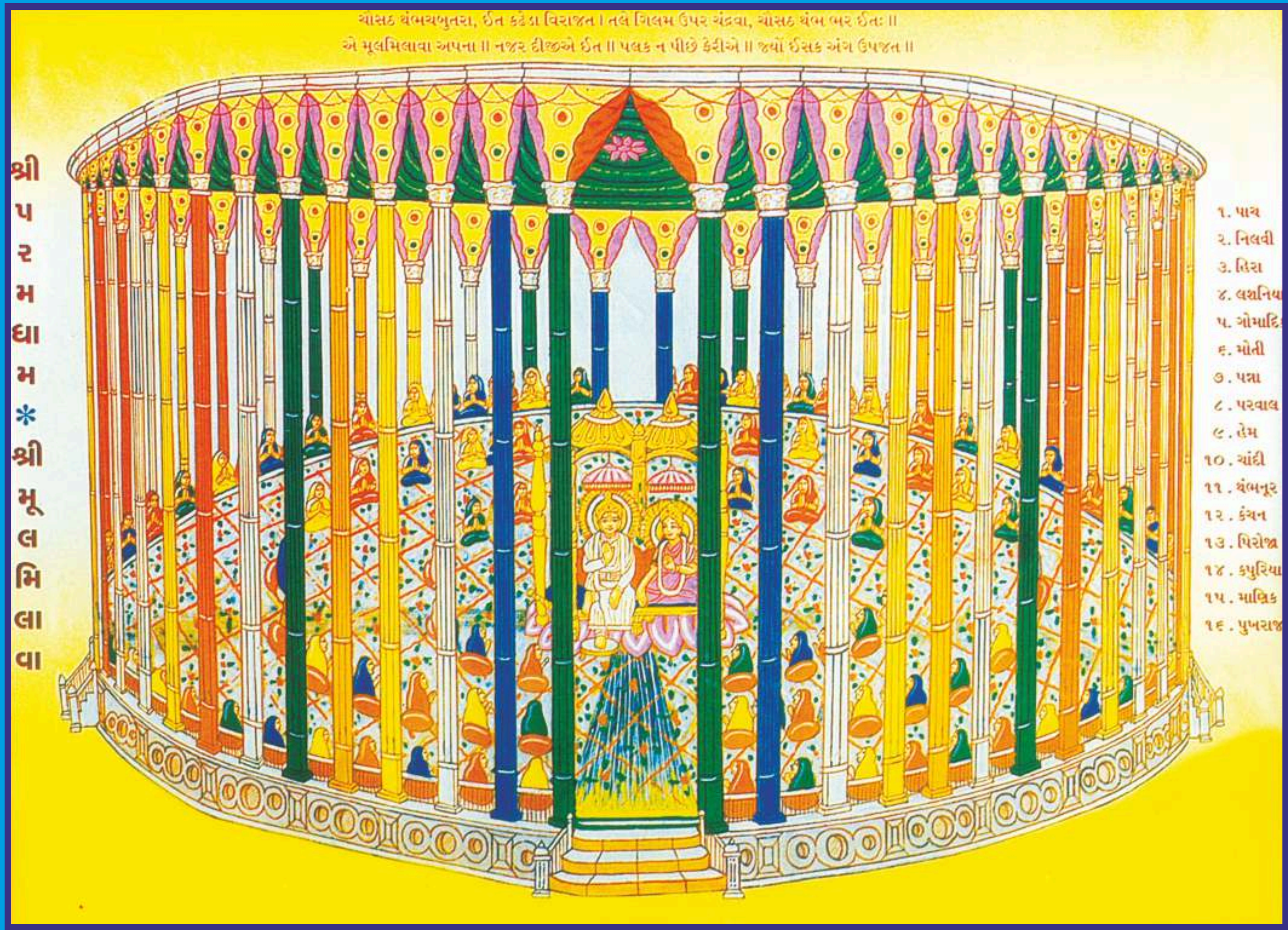

मूल मिलावा का खड़ा दृश्य

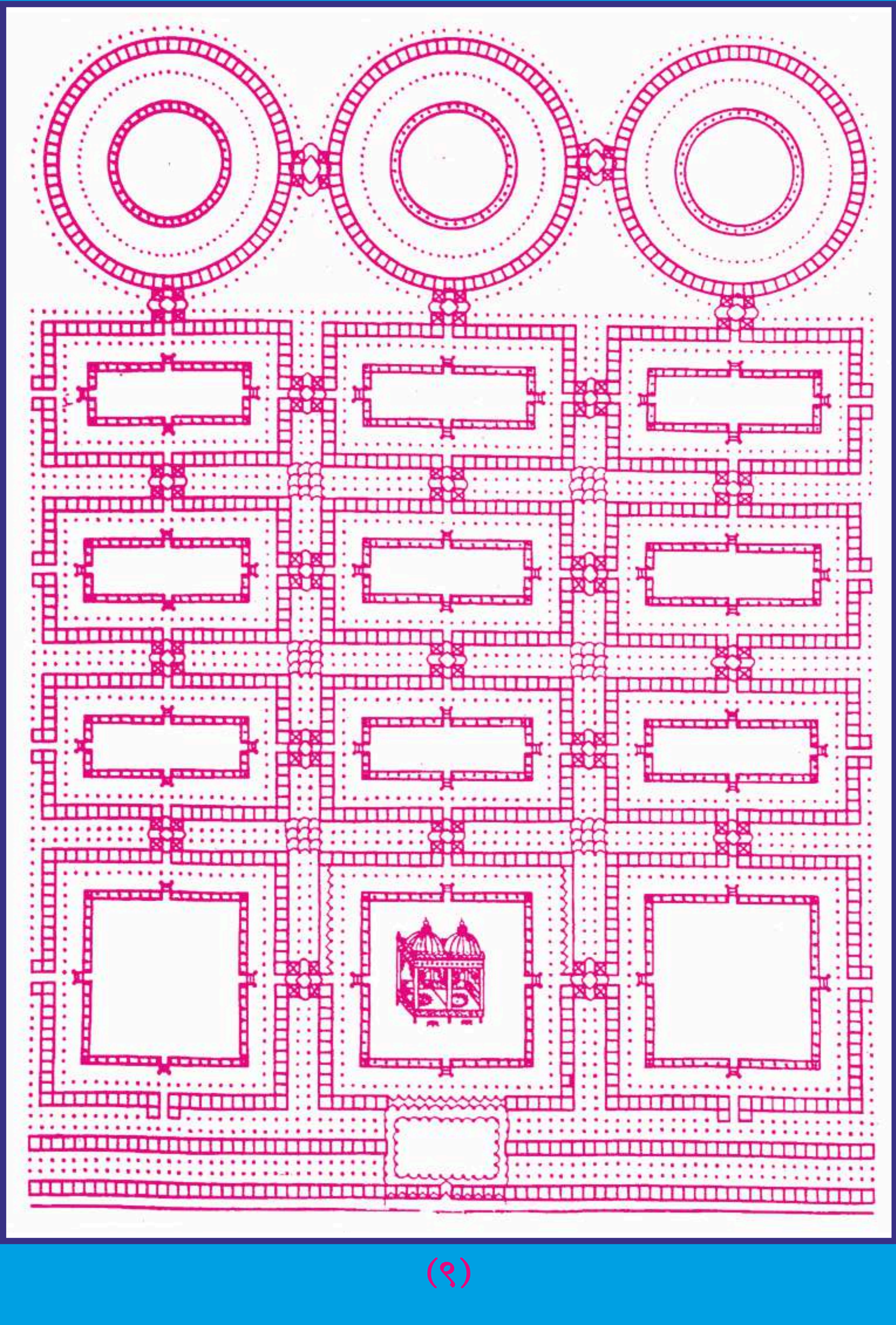

चौरस हवेलियों की चार हार

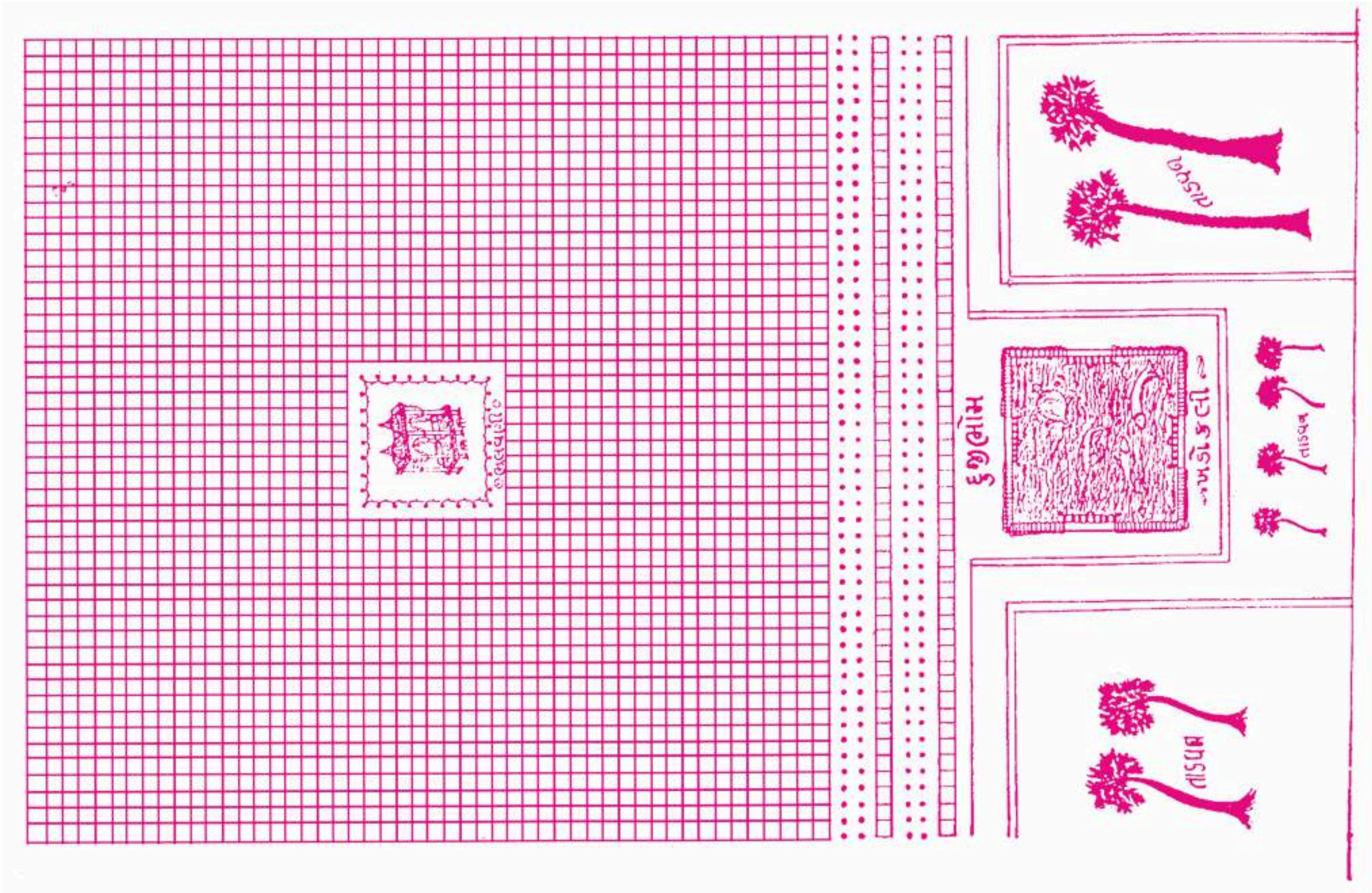

दूसरी भोम, भूल-भूलवनी नं १

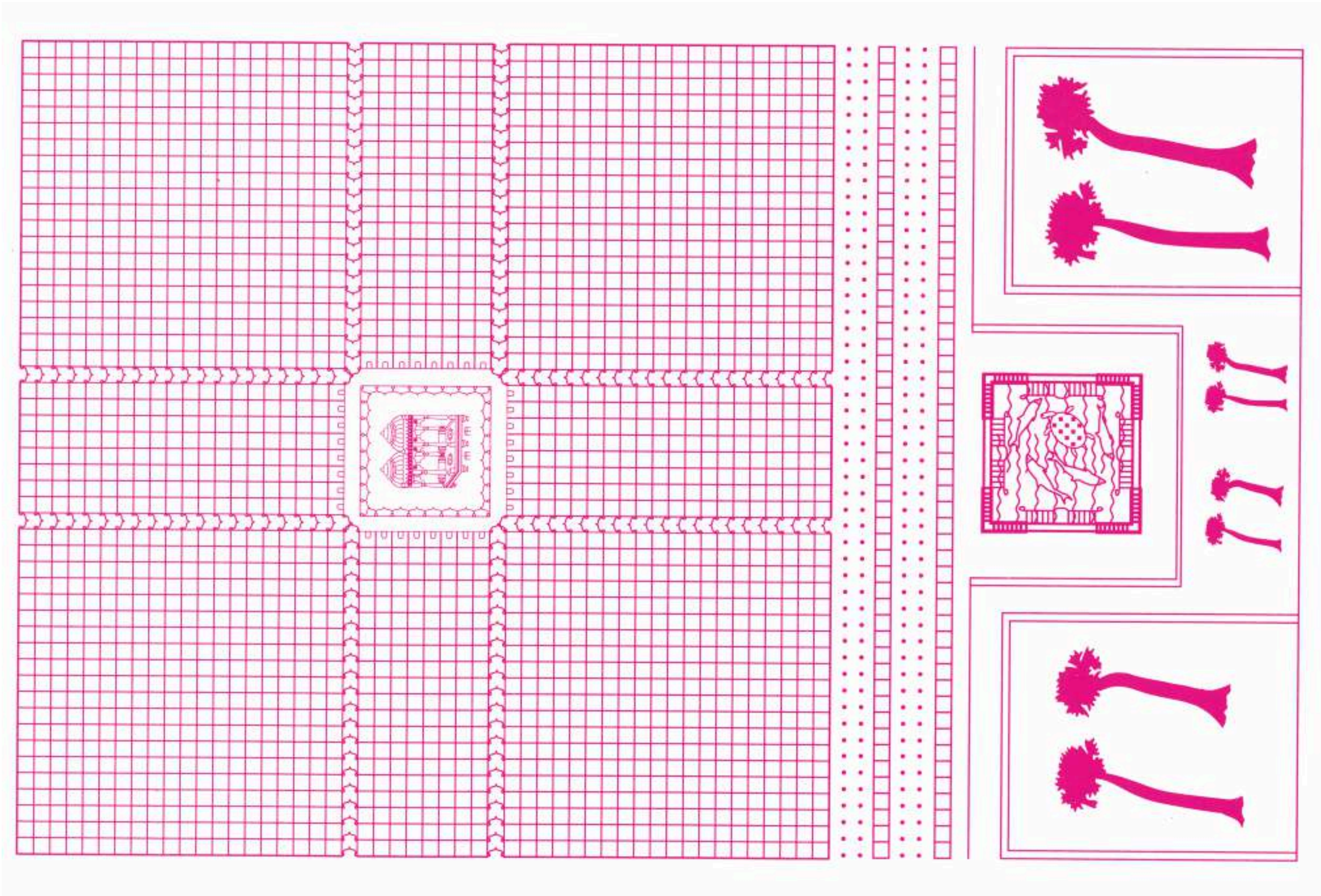

दूसरी भोम, भूल-भूलवनी नं २

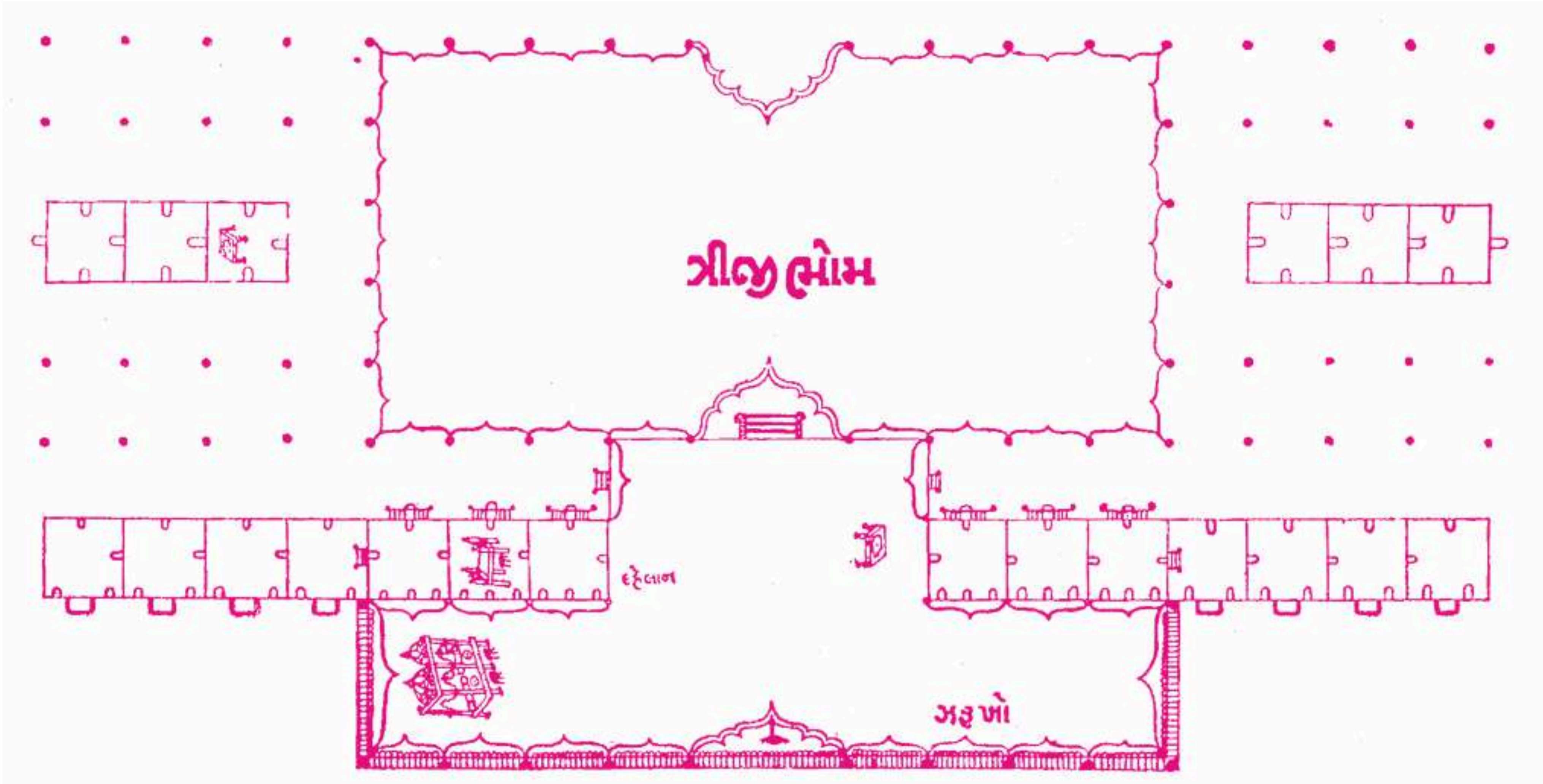

तीसरी भोम

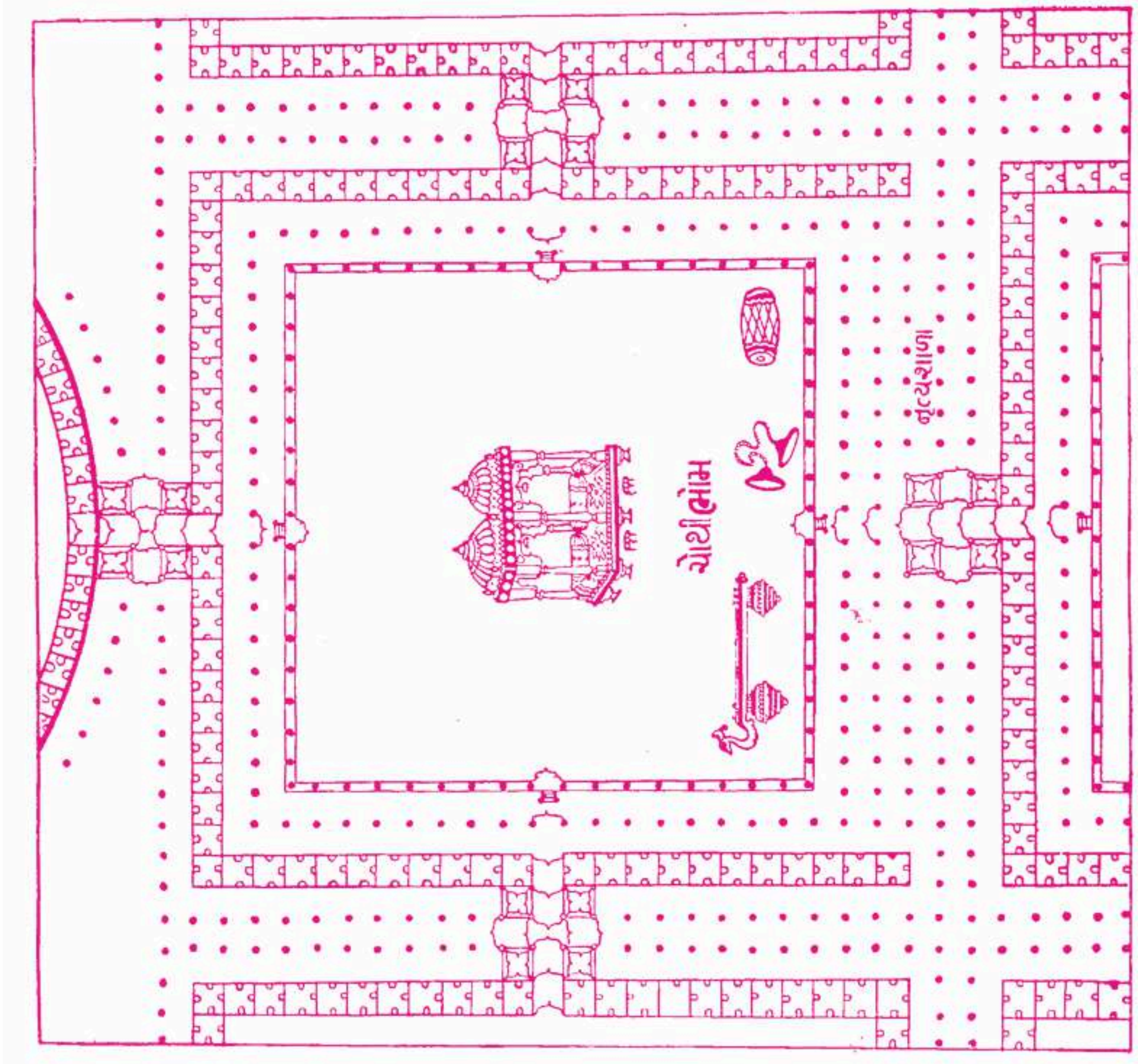

चौथी भोम

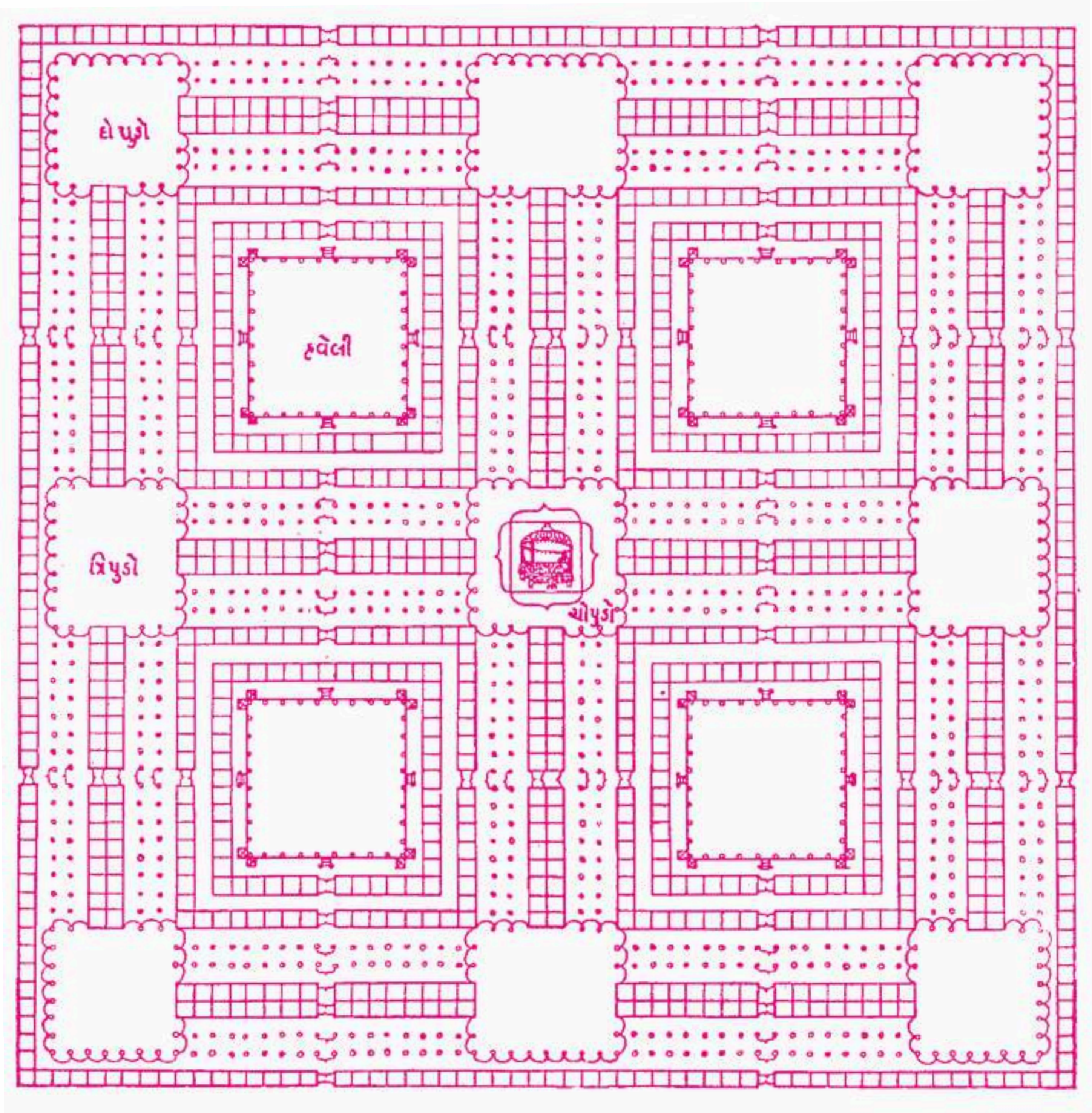

पाँचवीं भोम

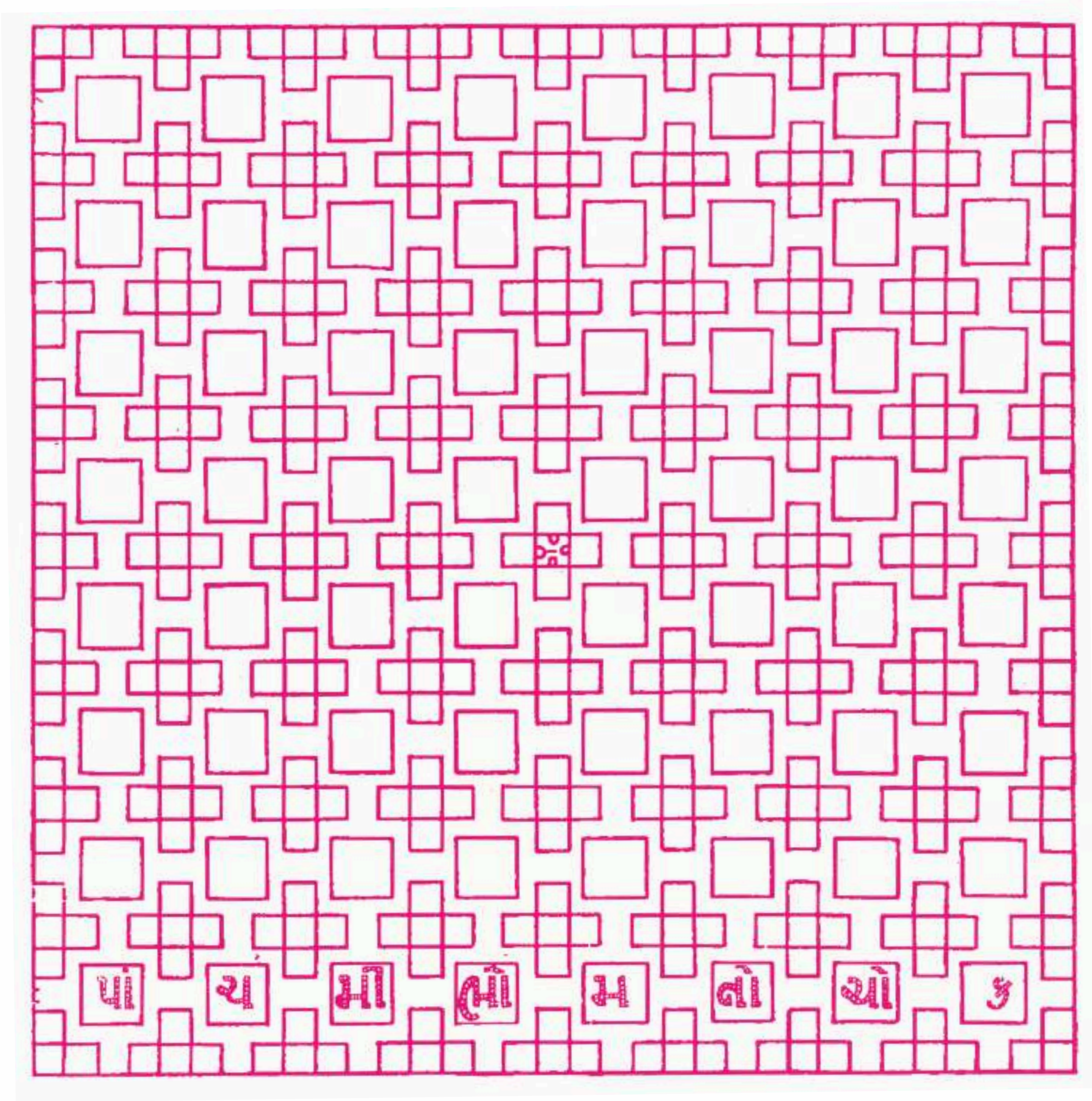

पाँचवीं भोम का चौक

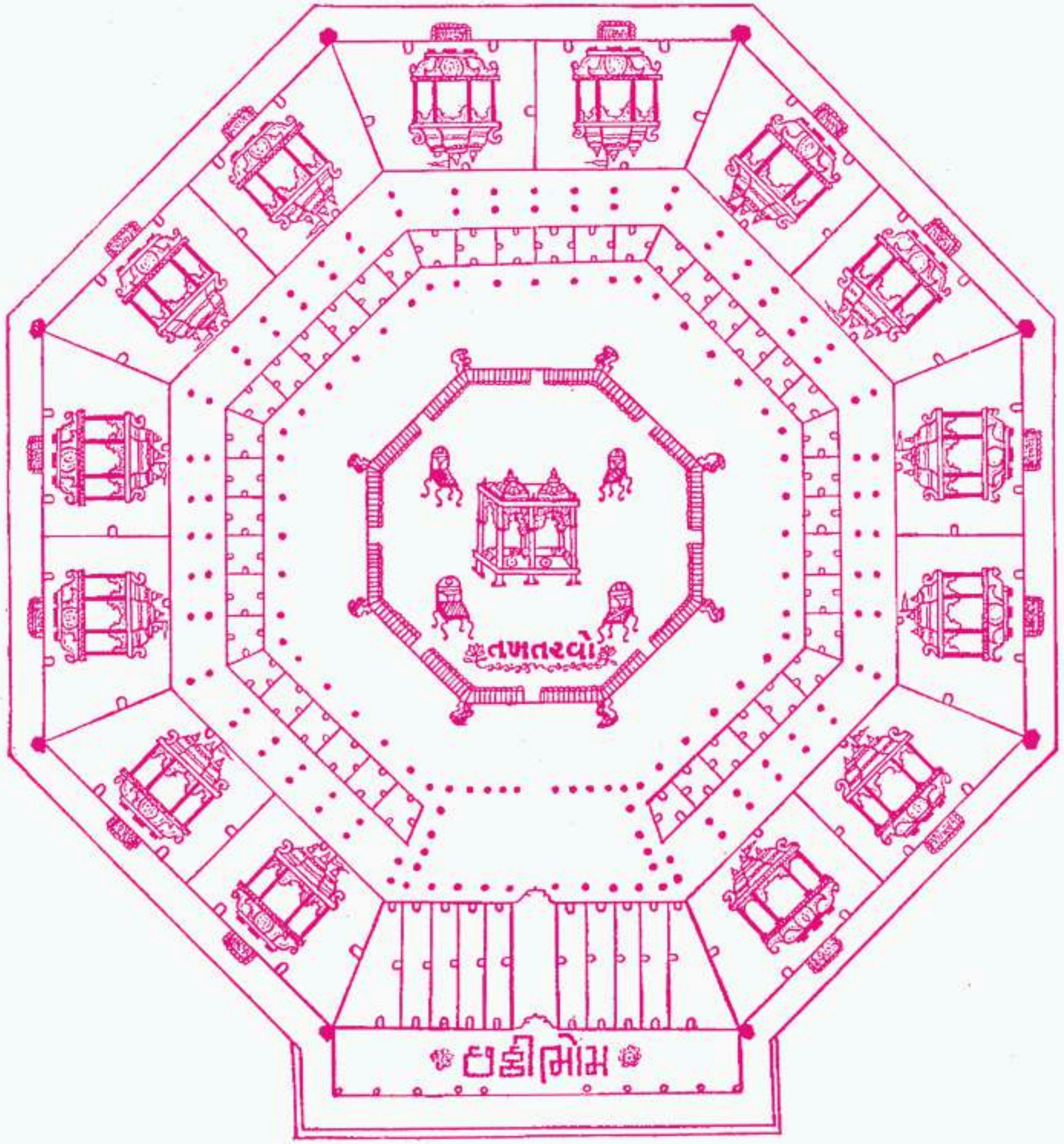

छट्ठीं भोम

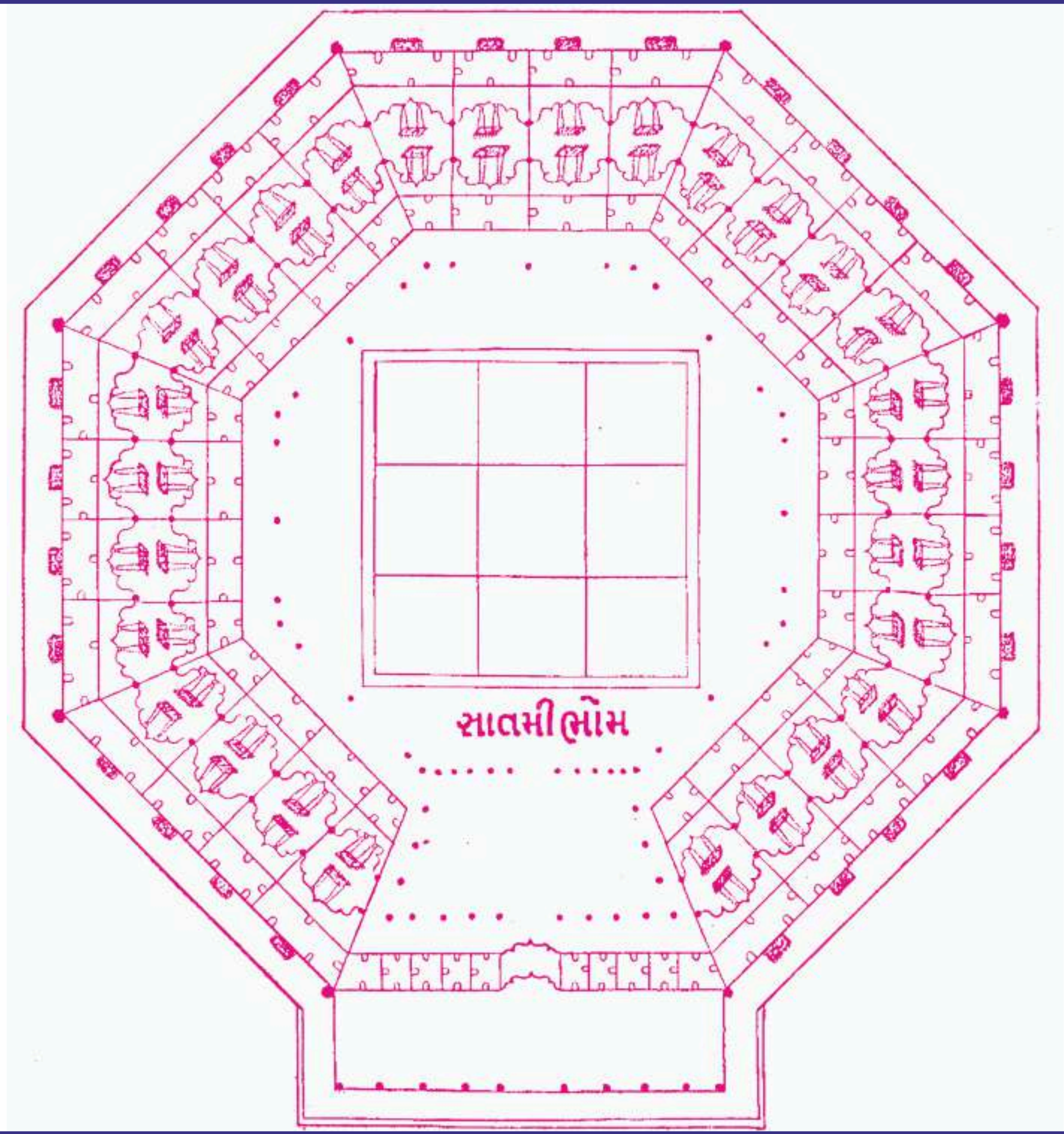

सातवीं भोम

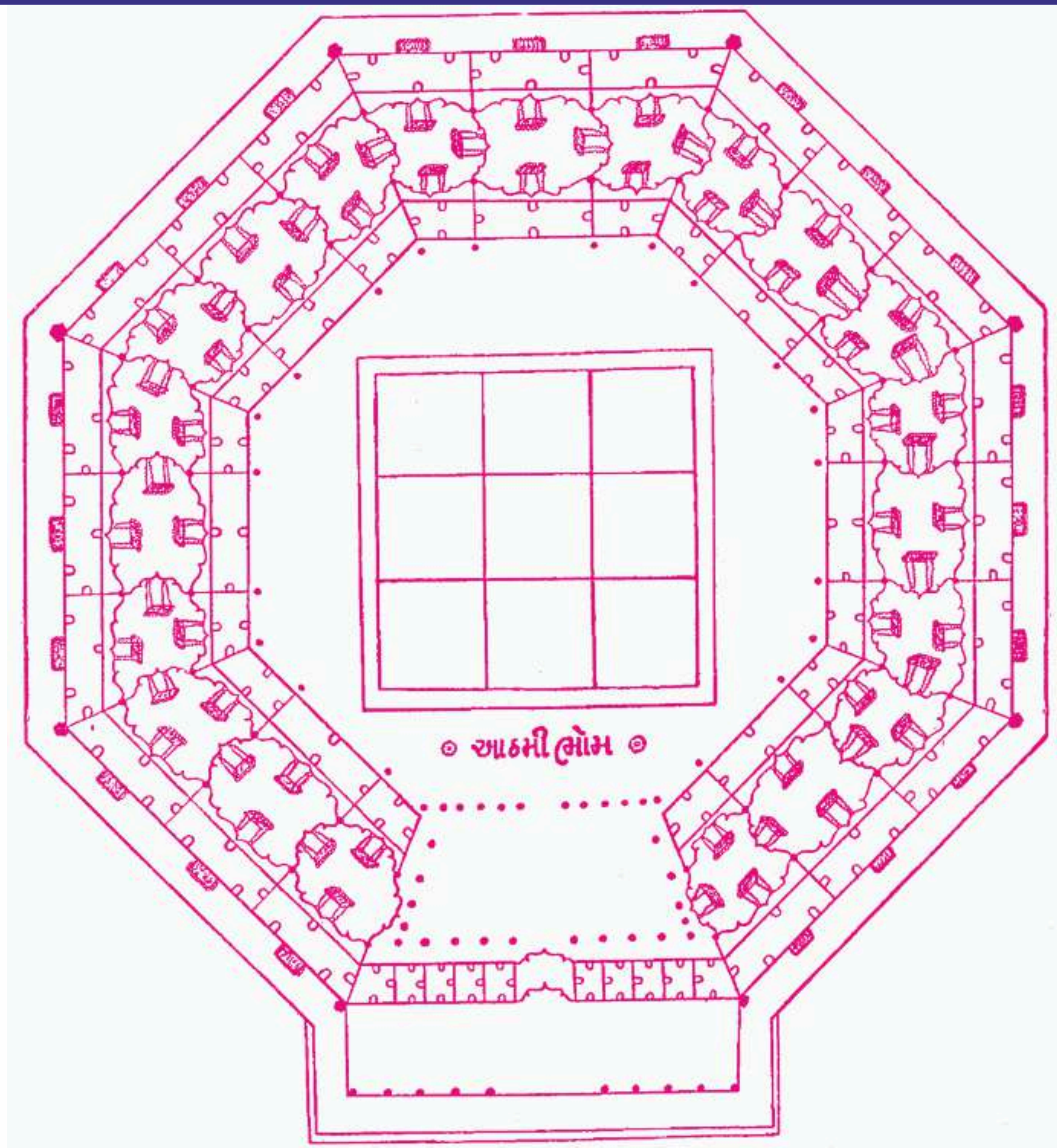

आठवीं भोम

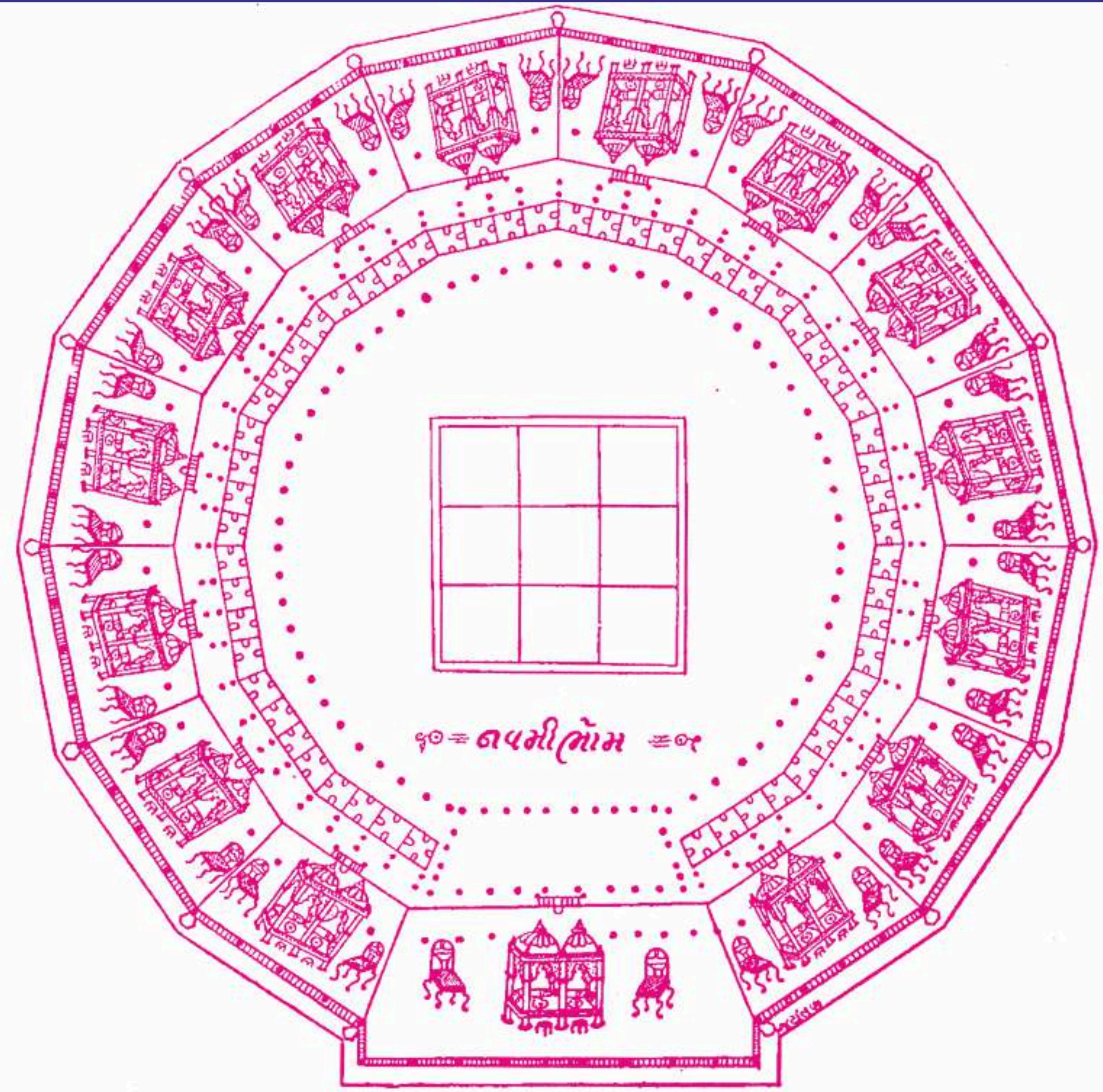

नौवीं भोम

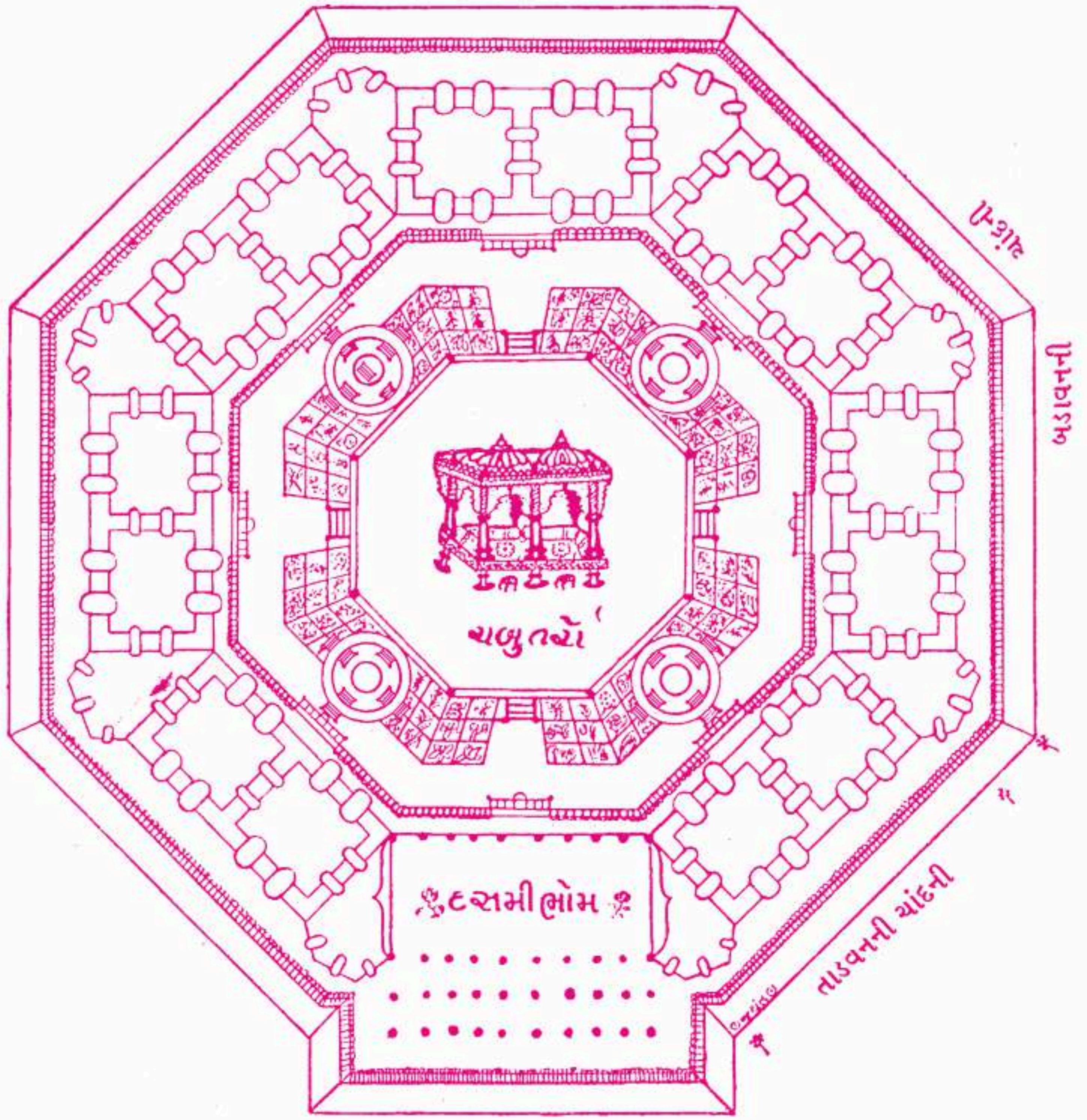

दसवीं भोम

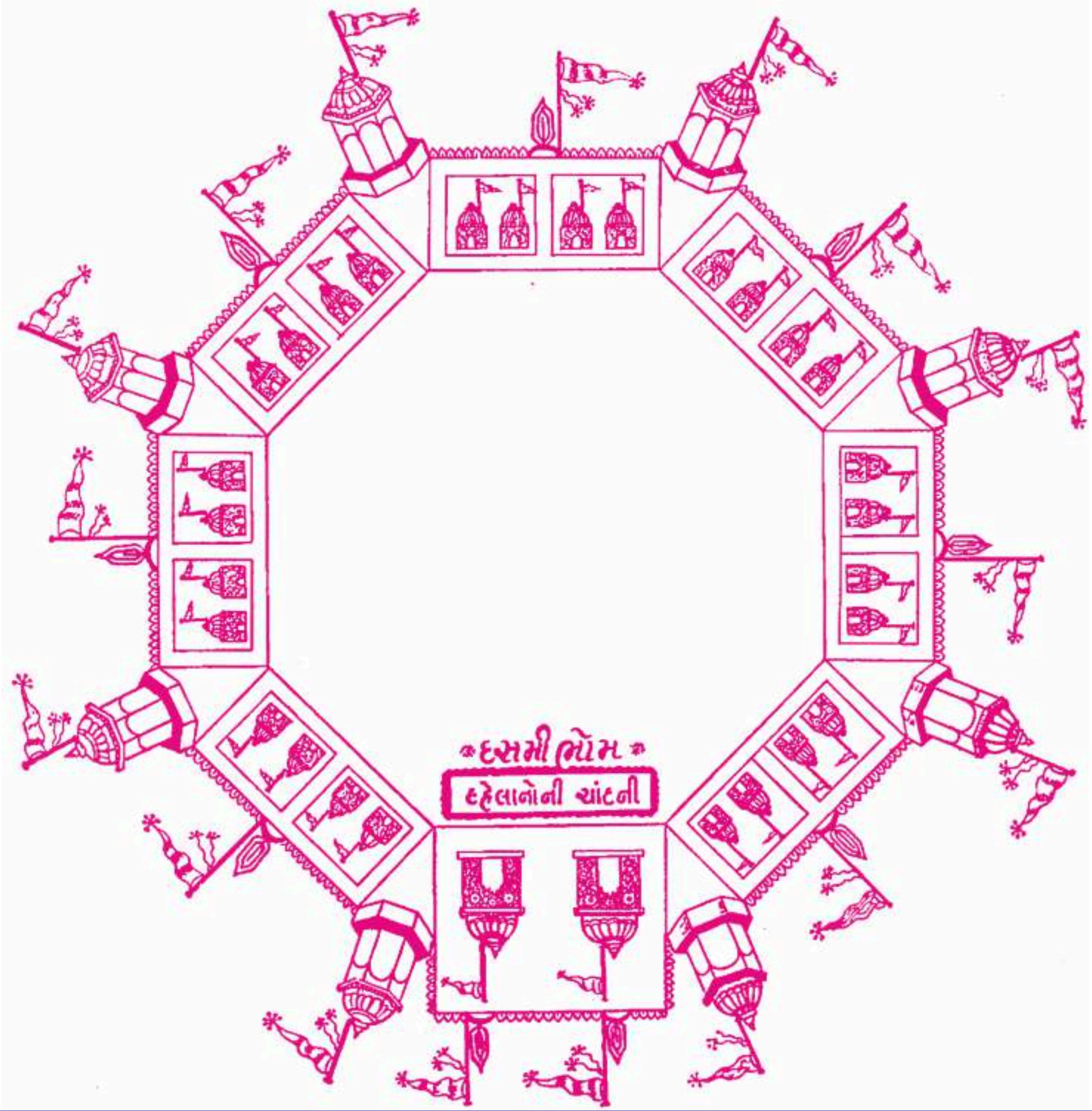

देहलानों की चाँदनी

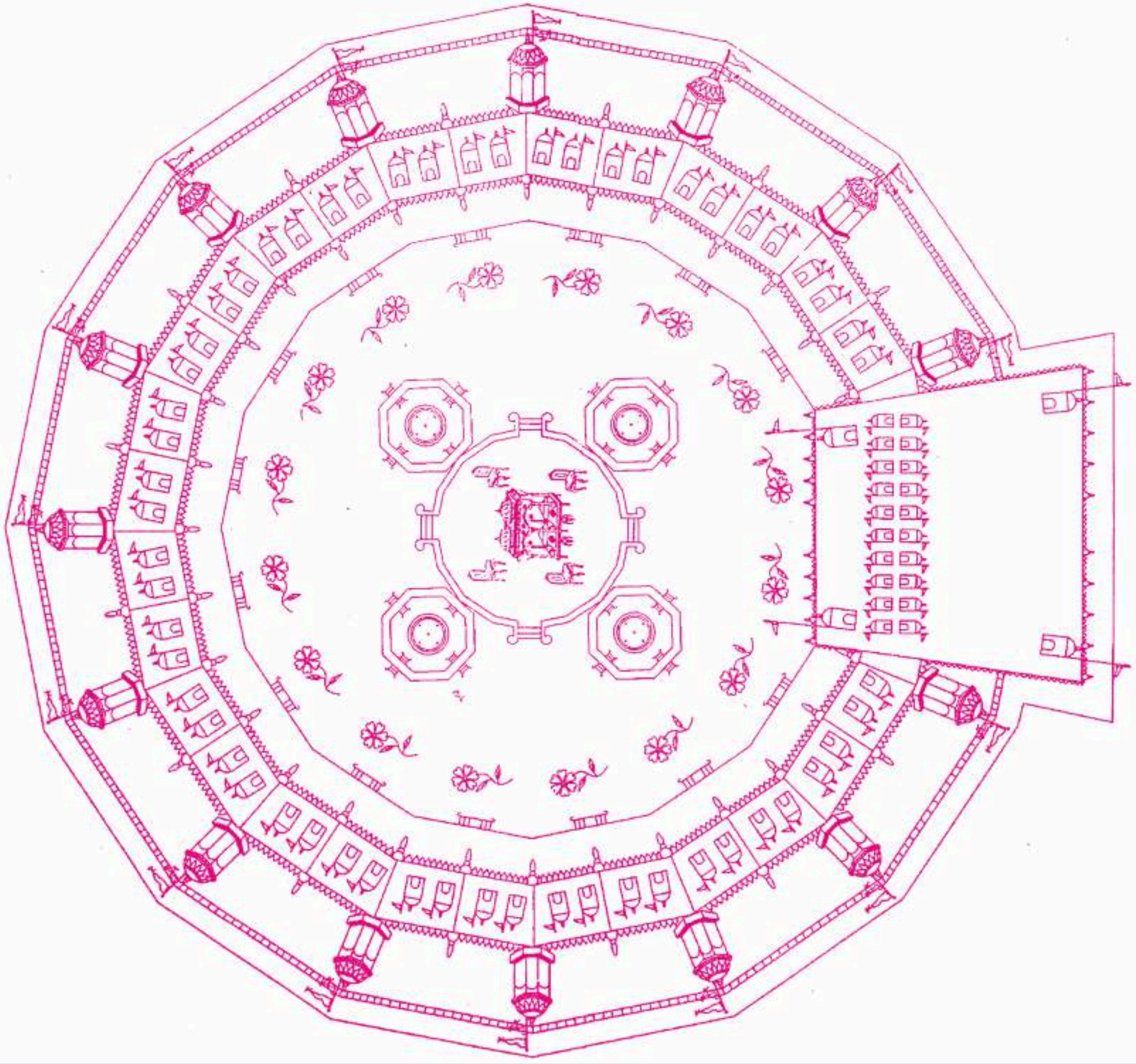

दसवीं चाँदनी पर गुमटियाँ

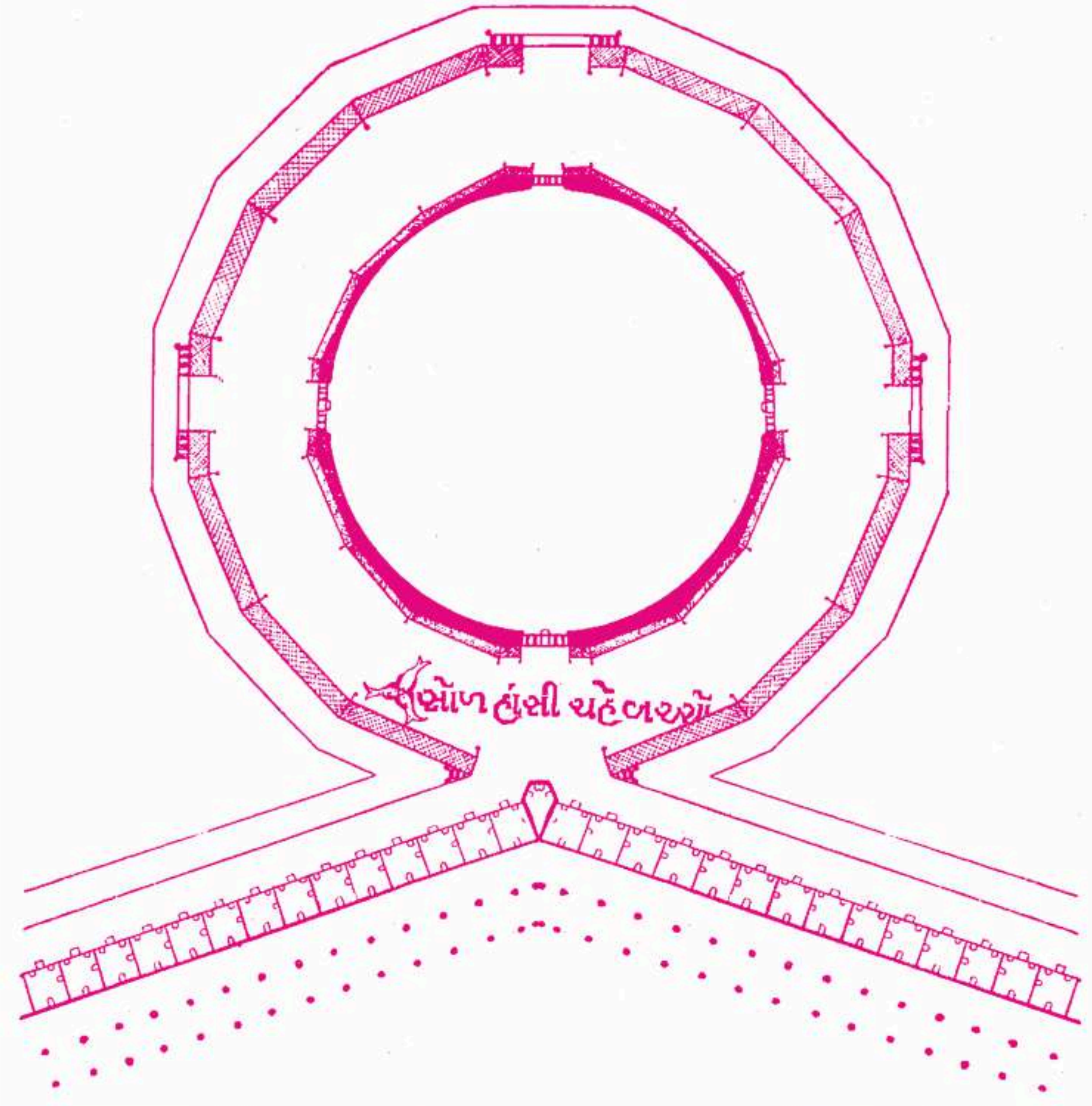

सोलह हाँस का चहबच्चा

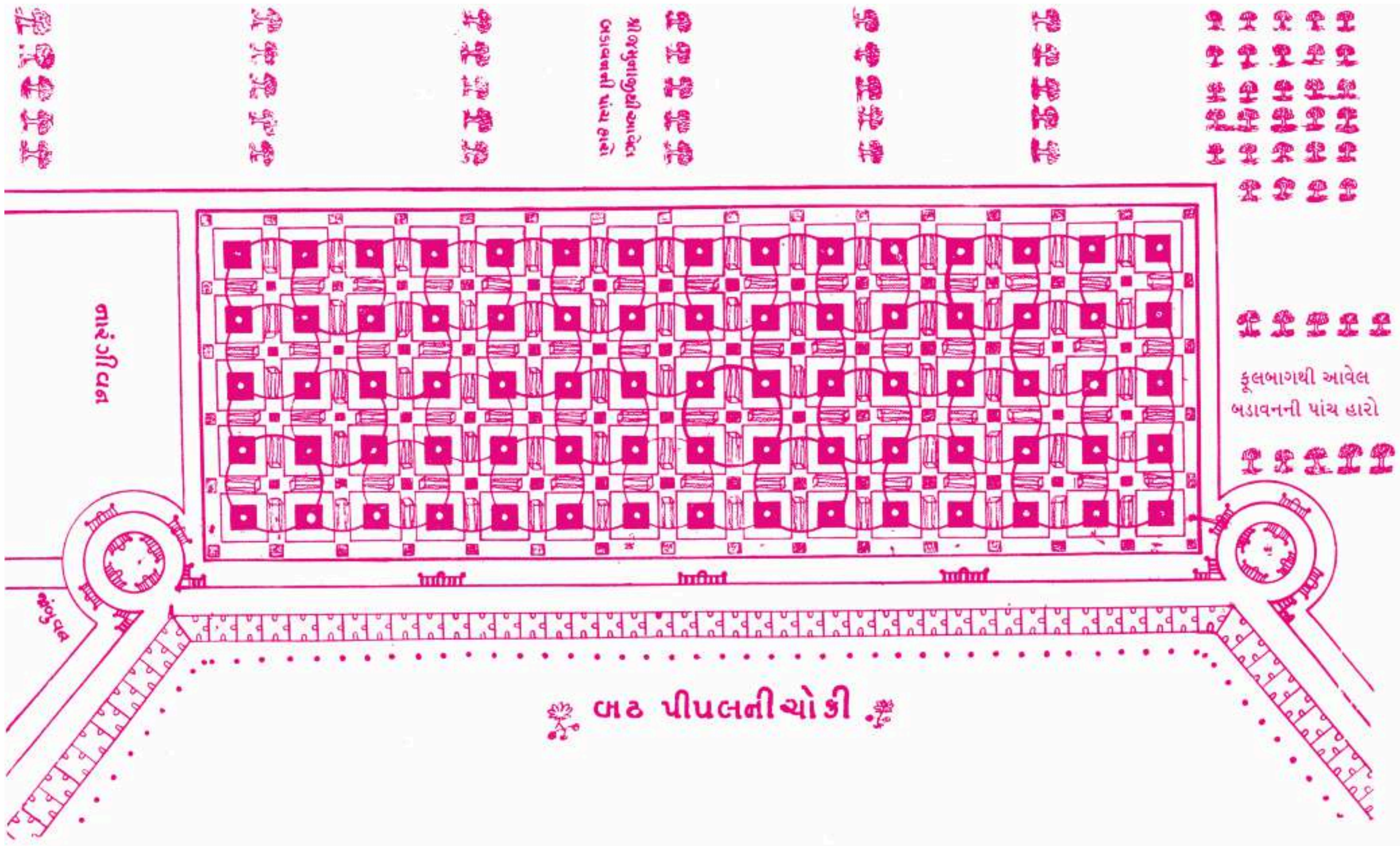

वट पीपल की चौकी

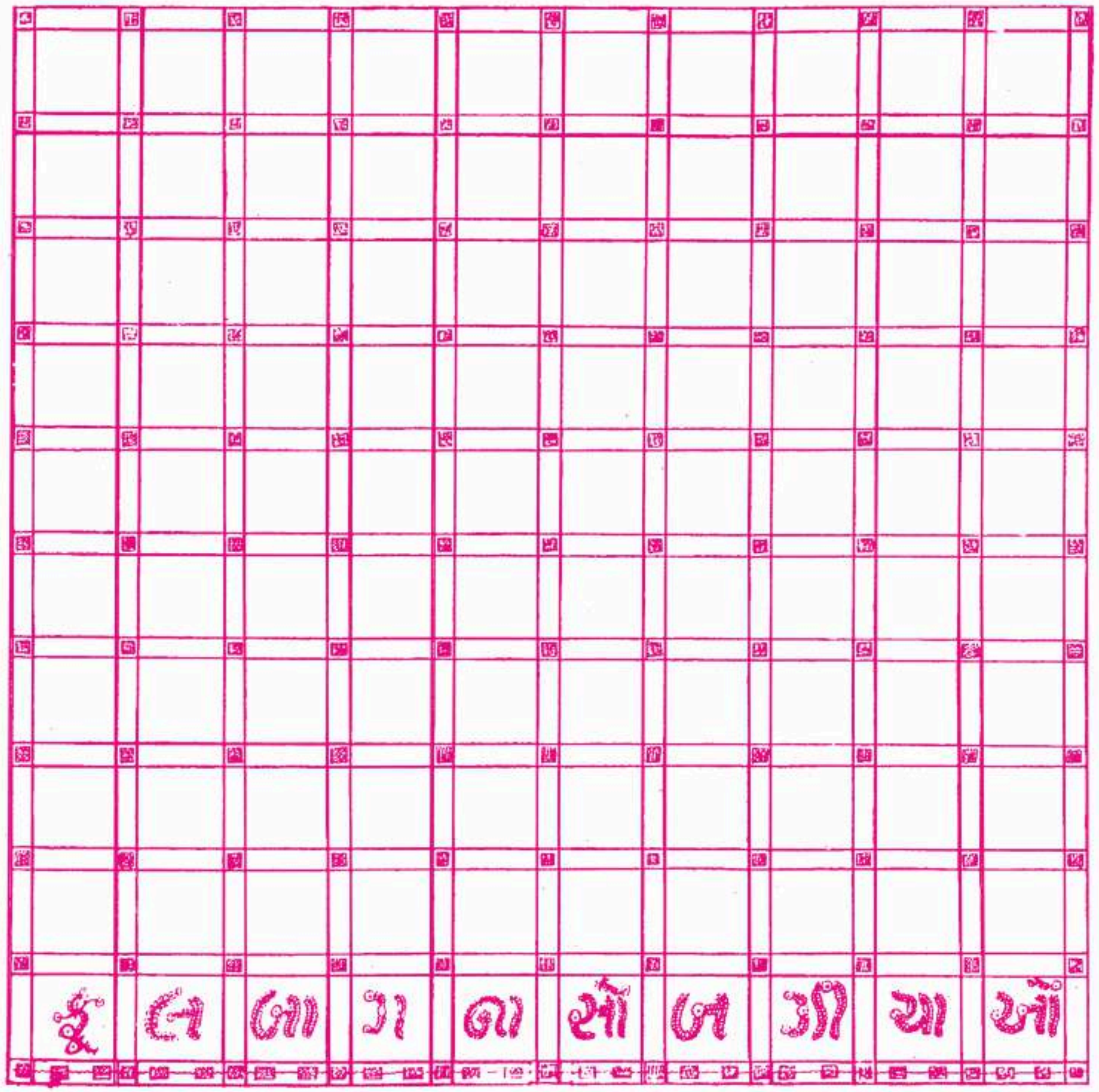

फूलबाग के एक सौ बगीचे

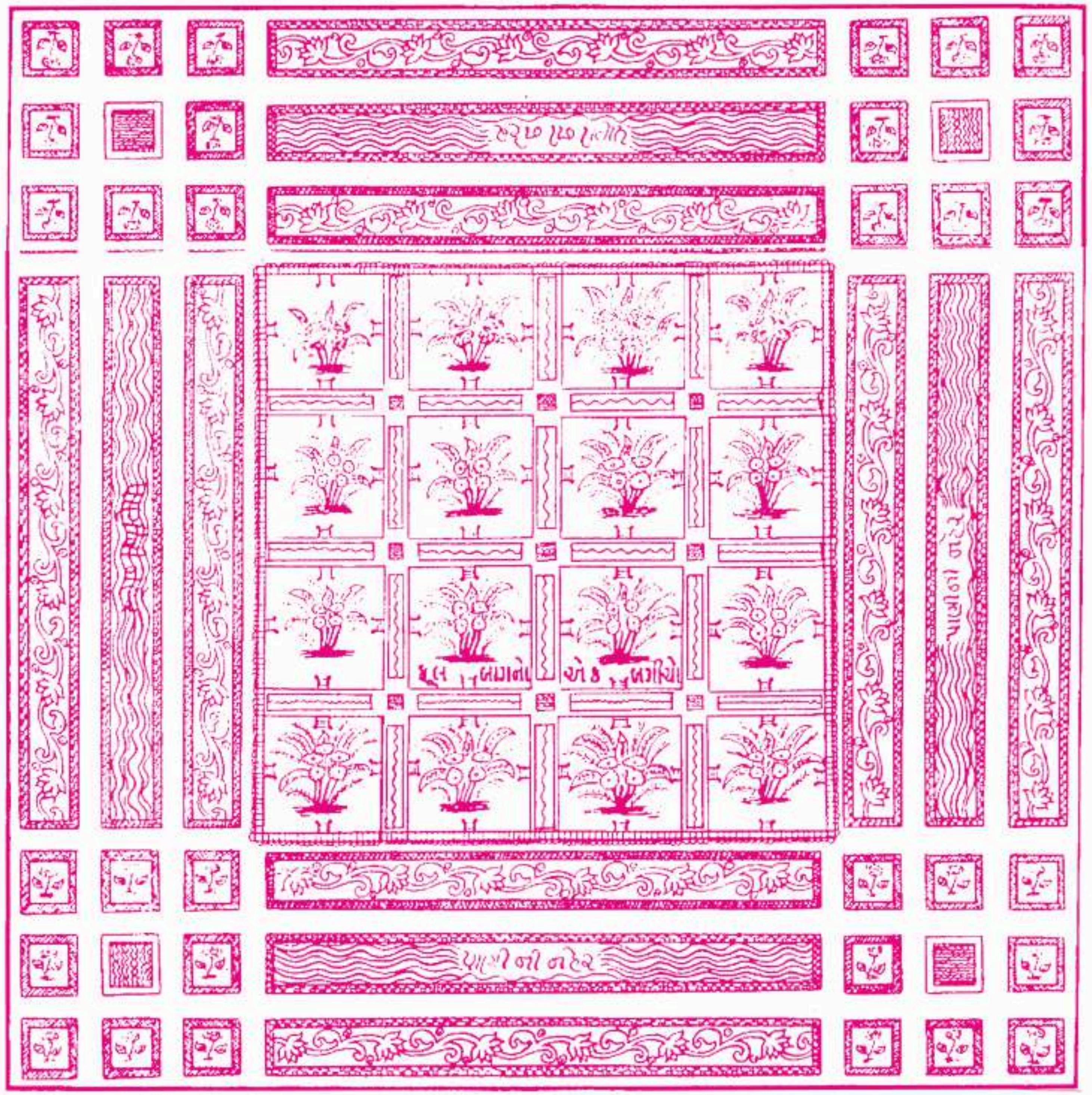

फूलबाग का एक बगीचा

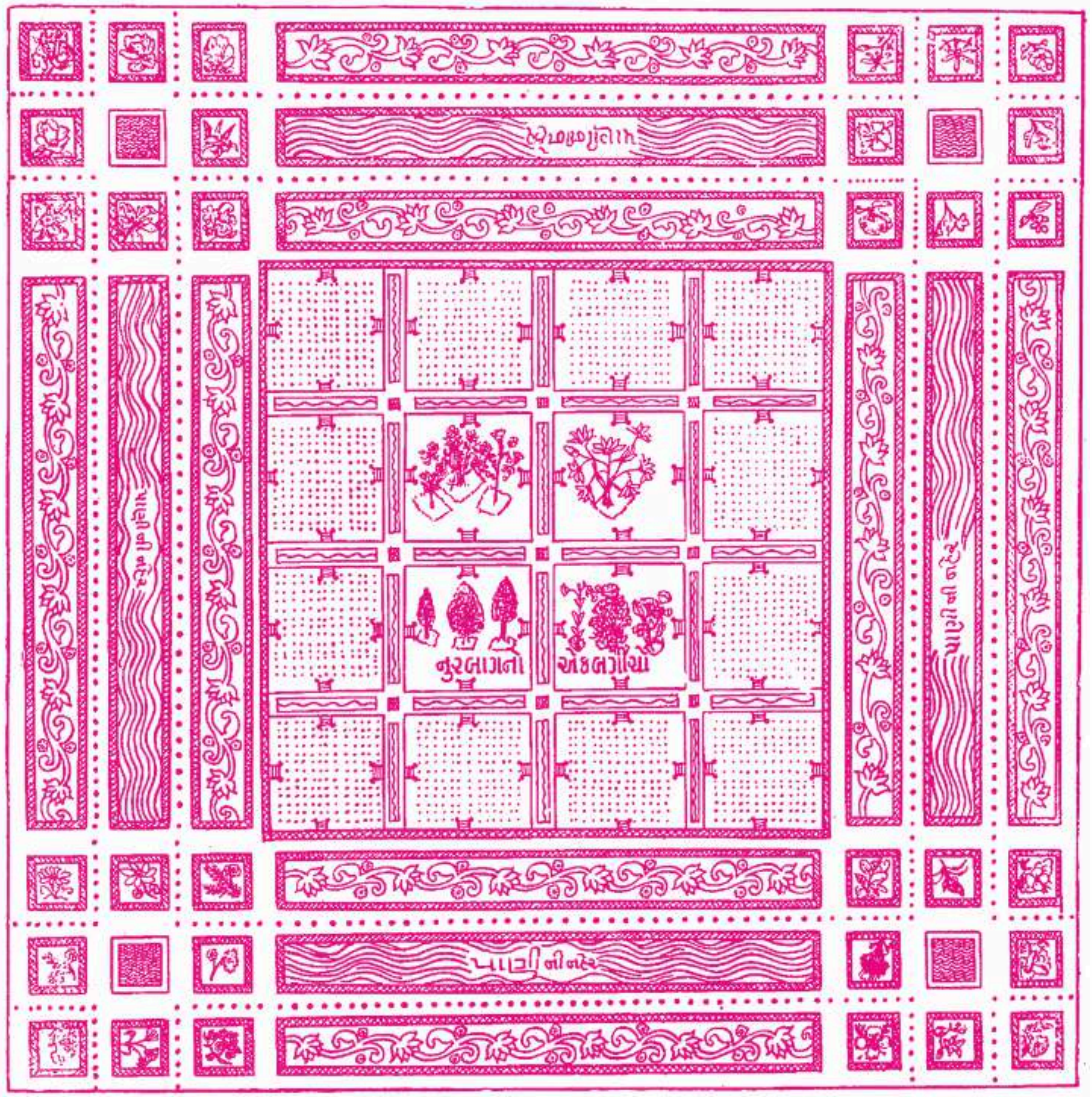

नूरबाग

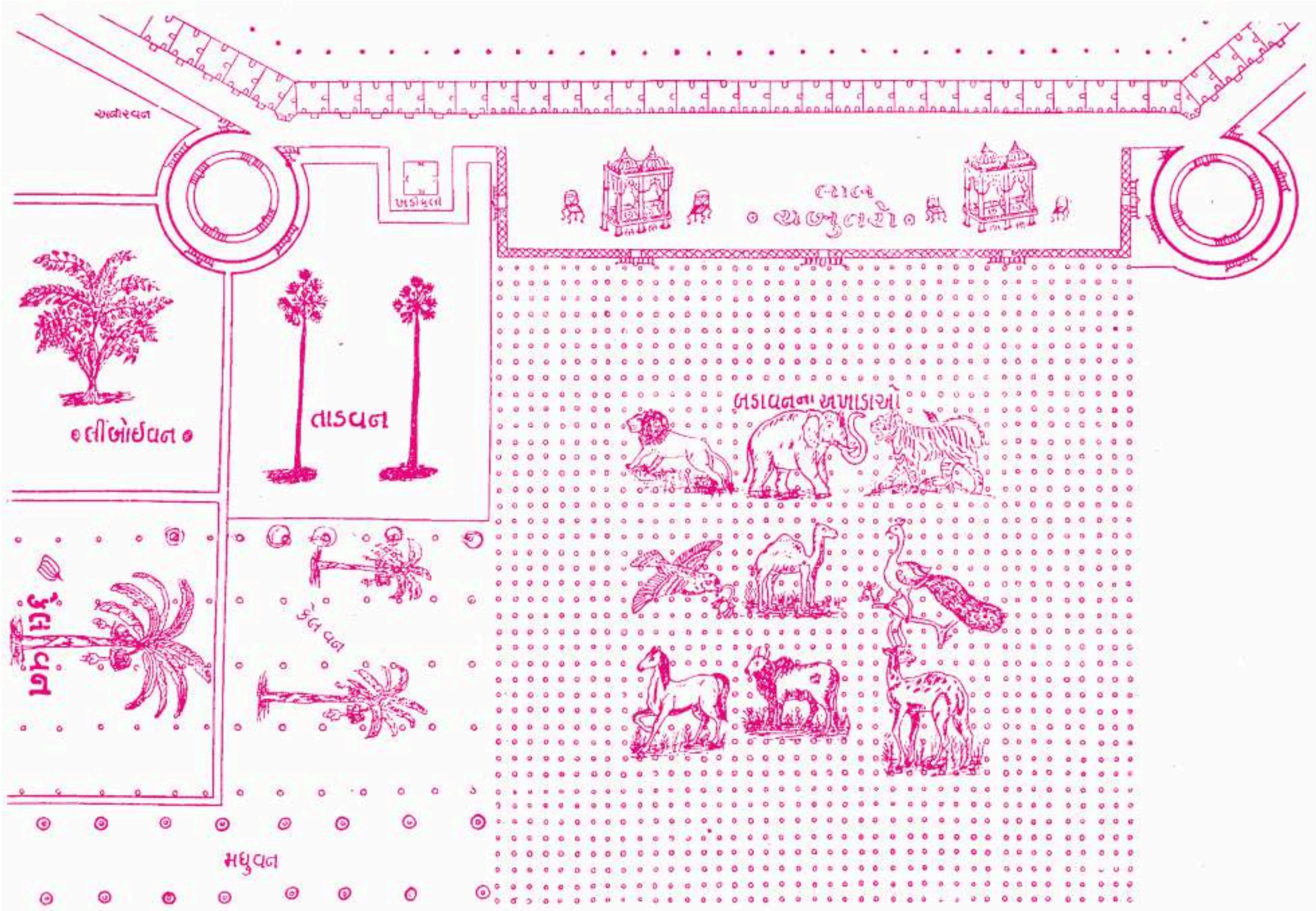

लाल चबूतरा नं १

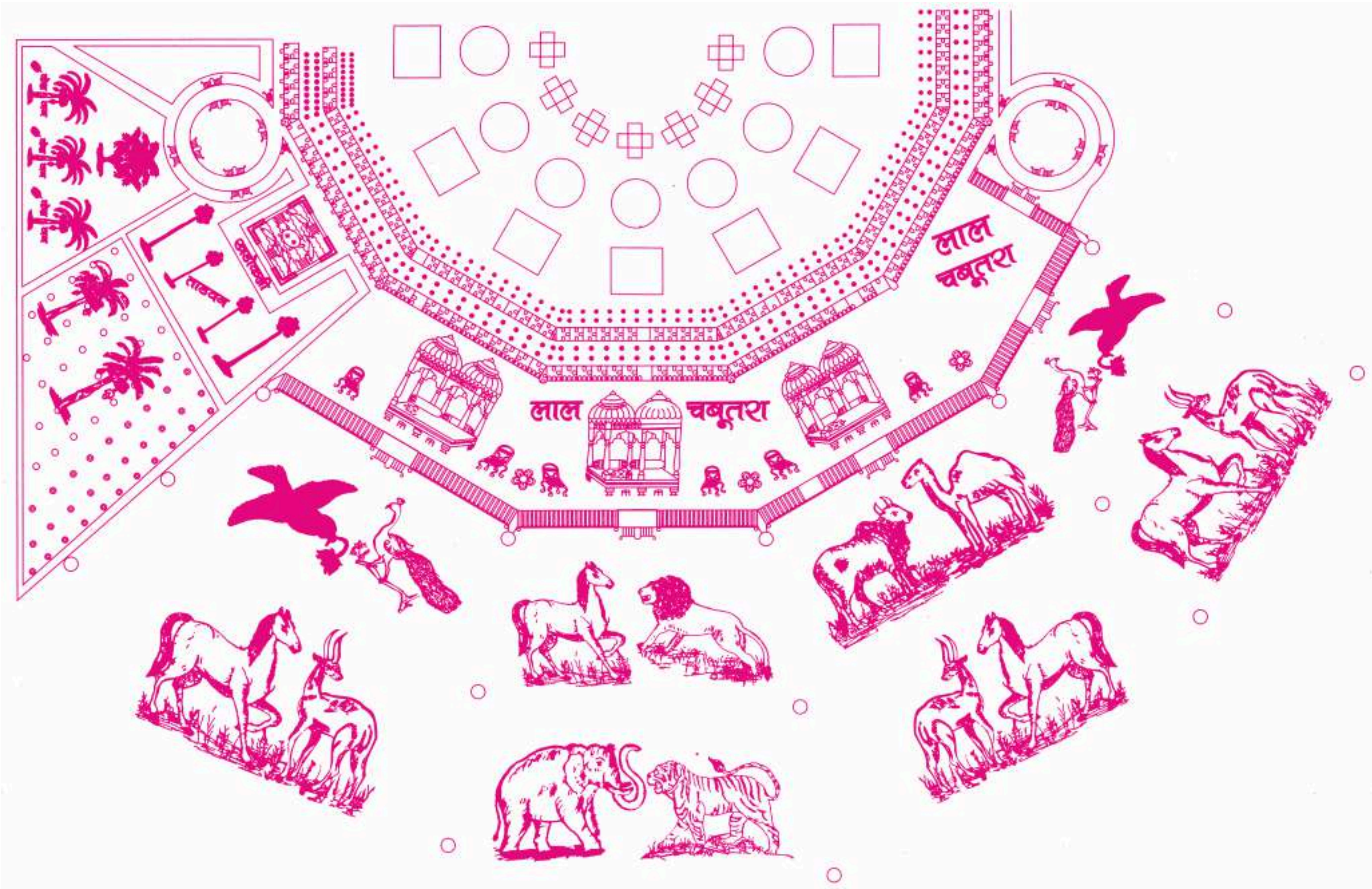

लाल चबूतरा नं २

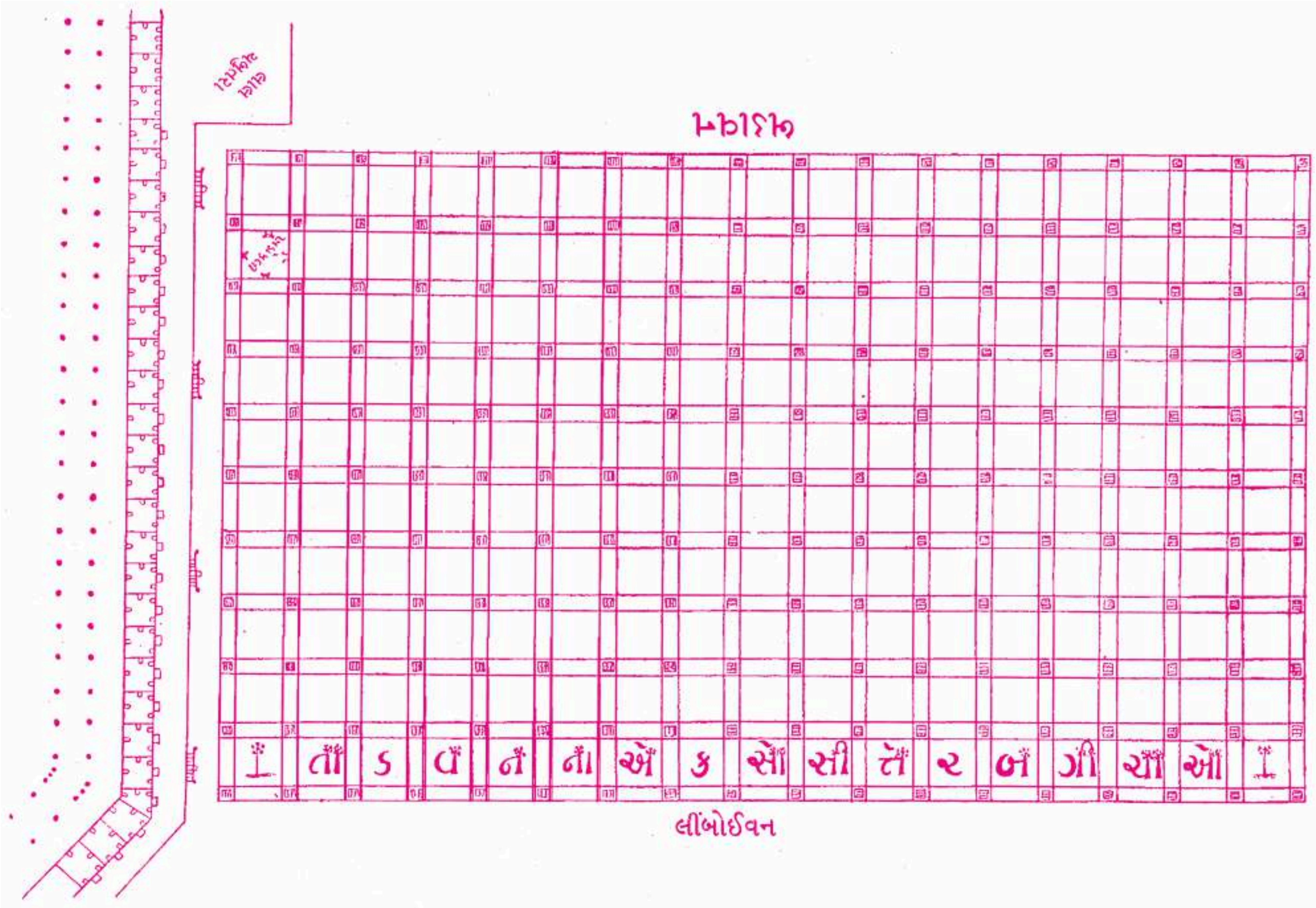

ताड़वन

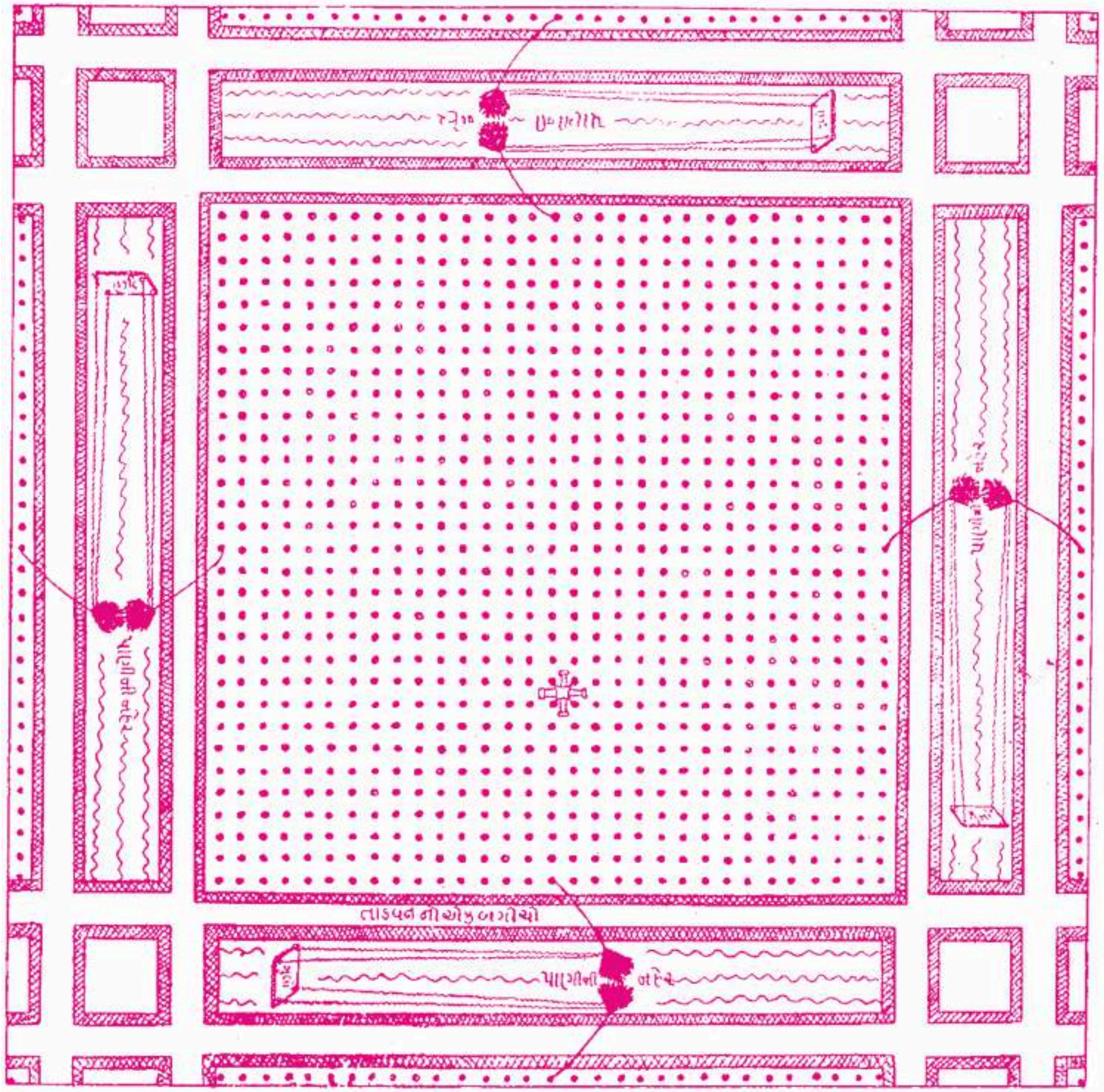

ताड़वन का एक बगीचा

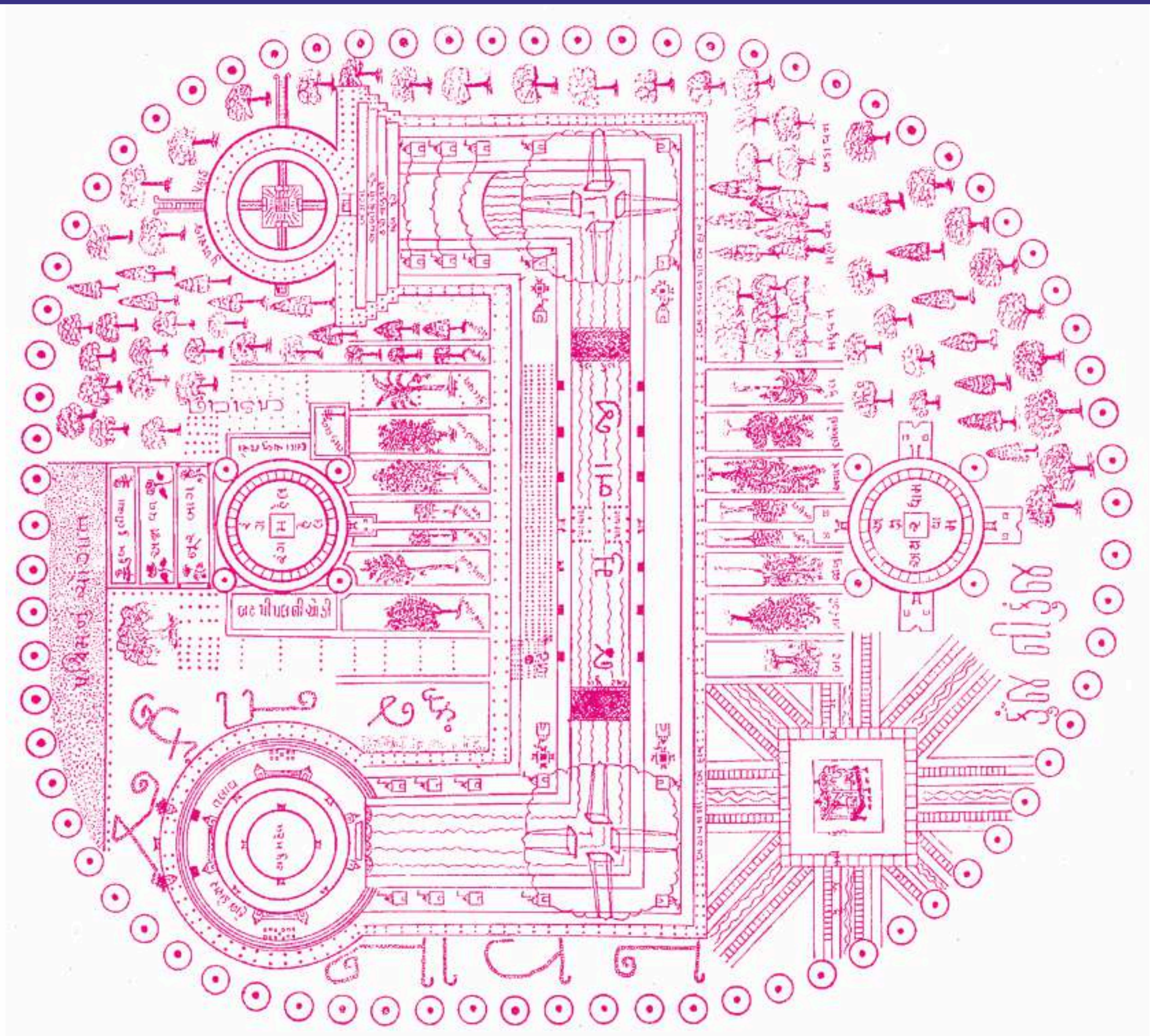

श्री यमुनाजी व सात घाट नं. १

श्री यमुनाजी का पाल व सात घाट नं. २

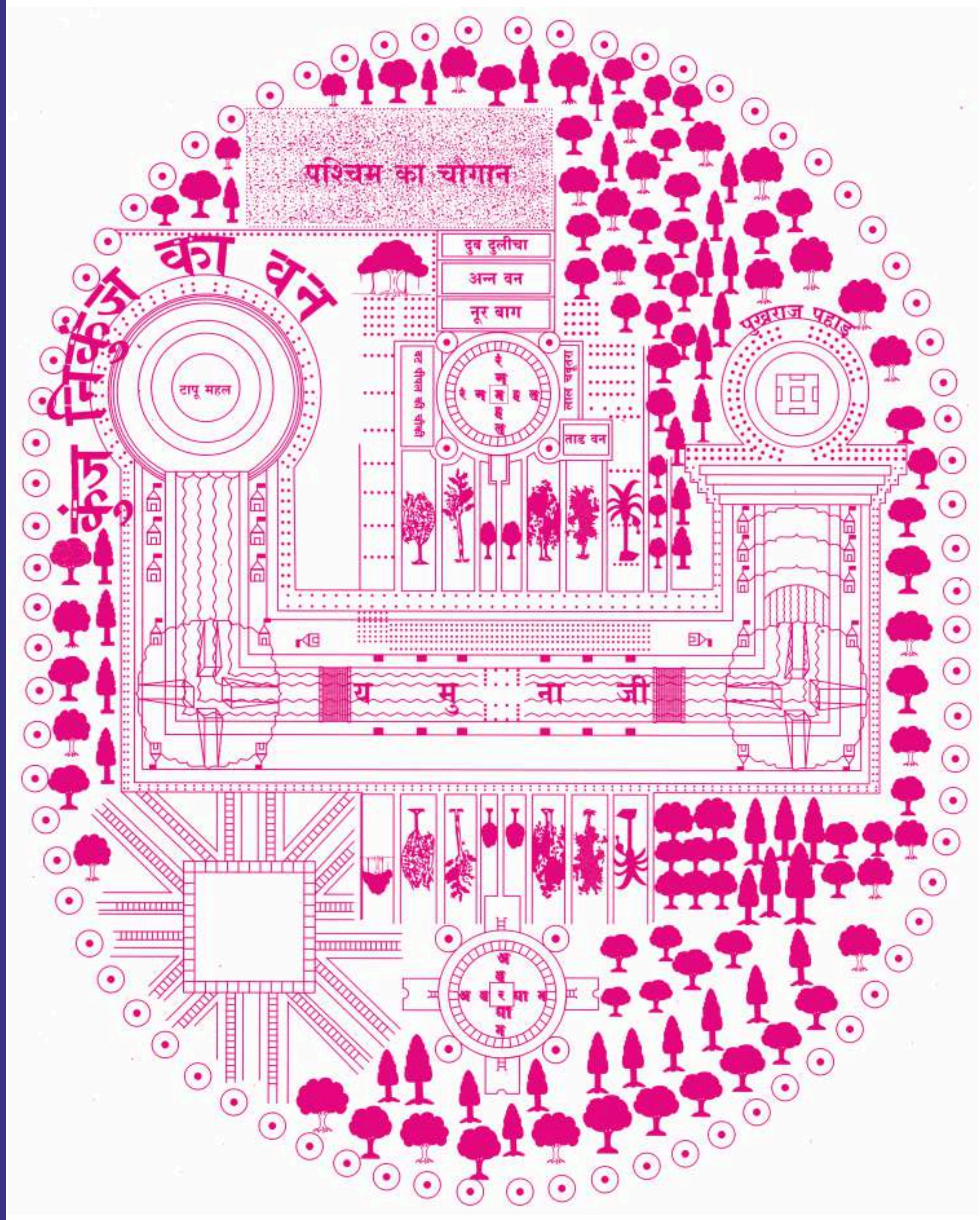

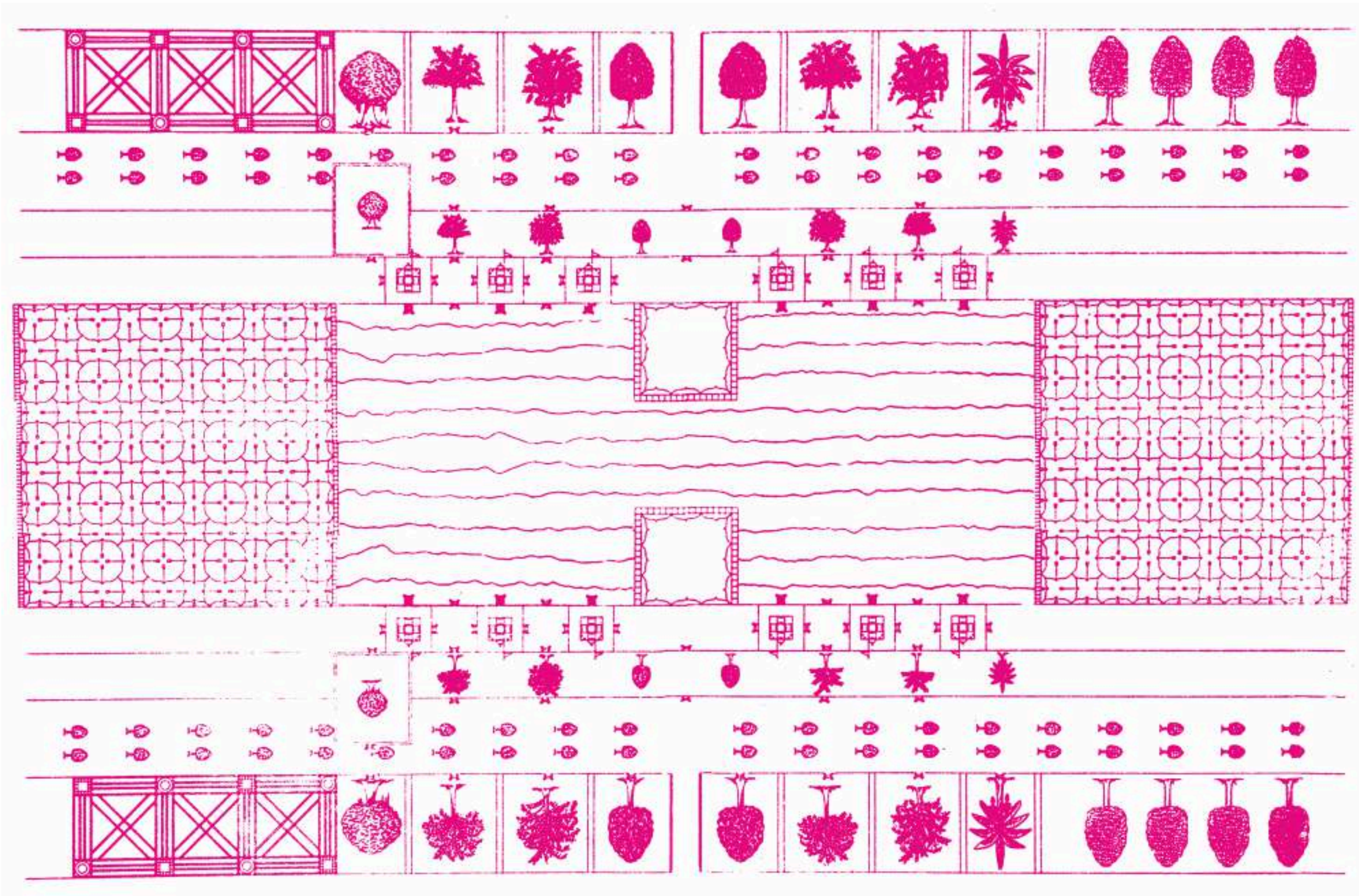

श्री यमुनाजी, पाट घाट तथा दोनों पुल

श्री यमुनाजी और दोनों पुल

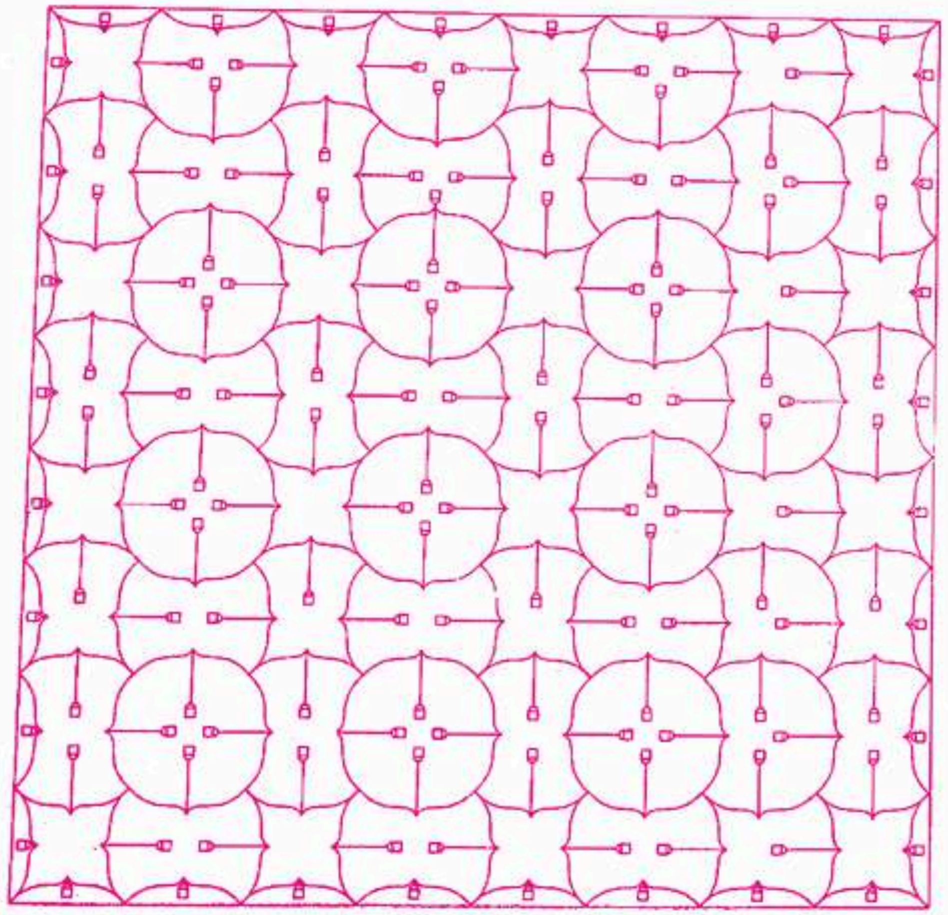

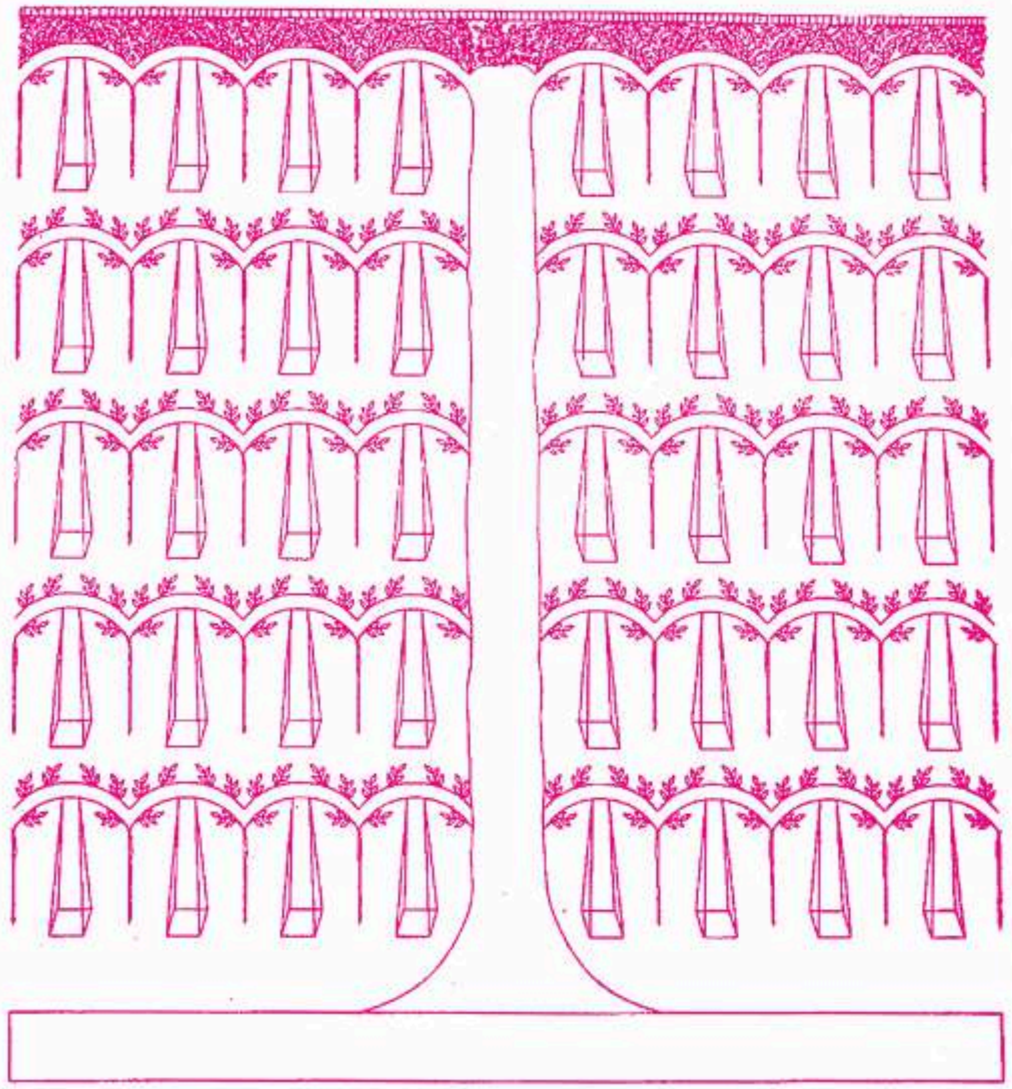

वट का घाट

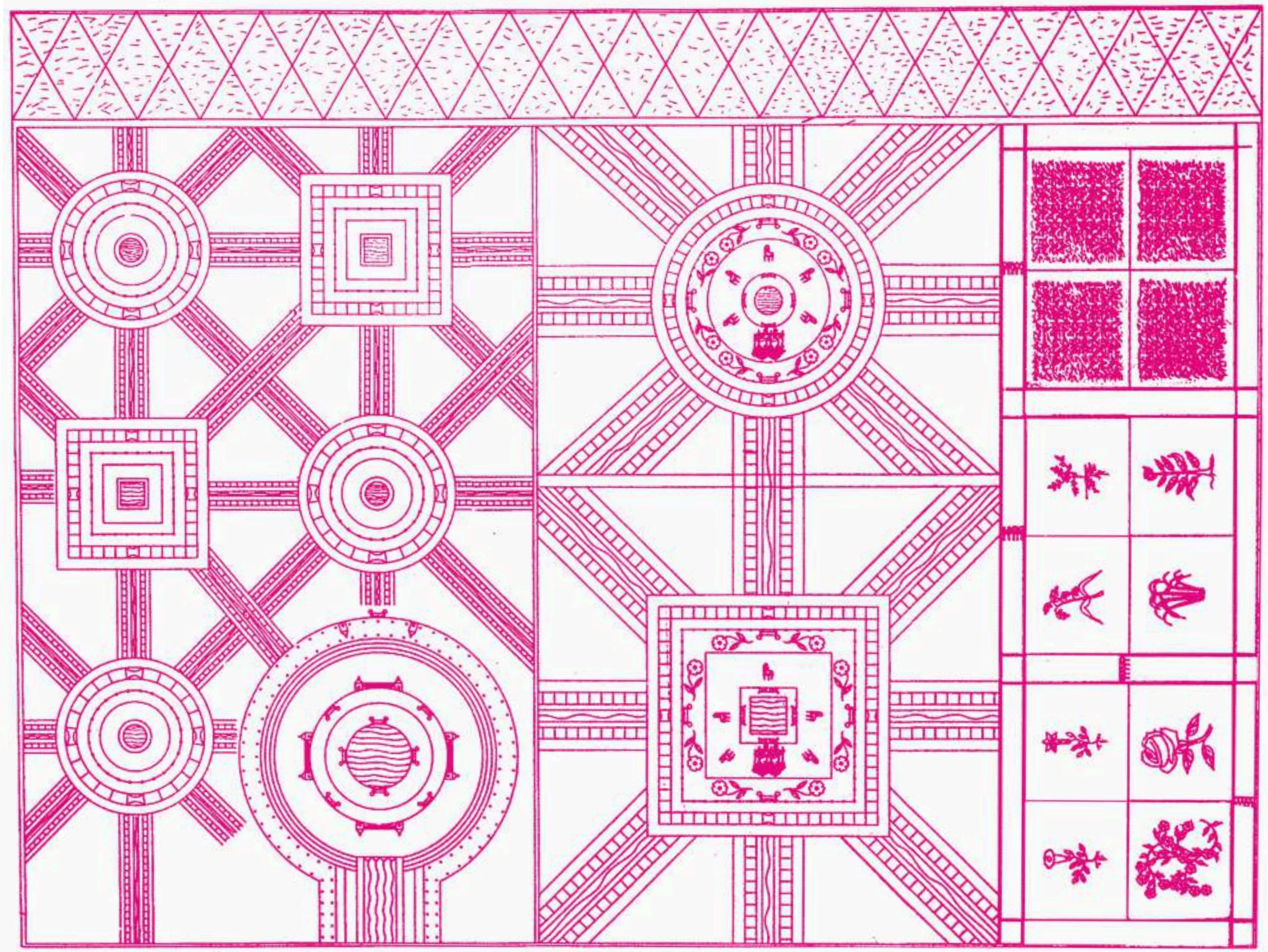

कुंज-निकुंज वन

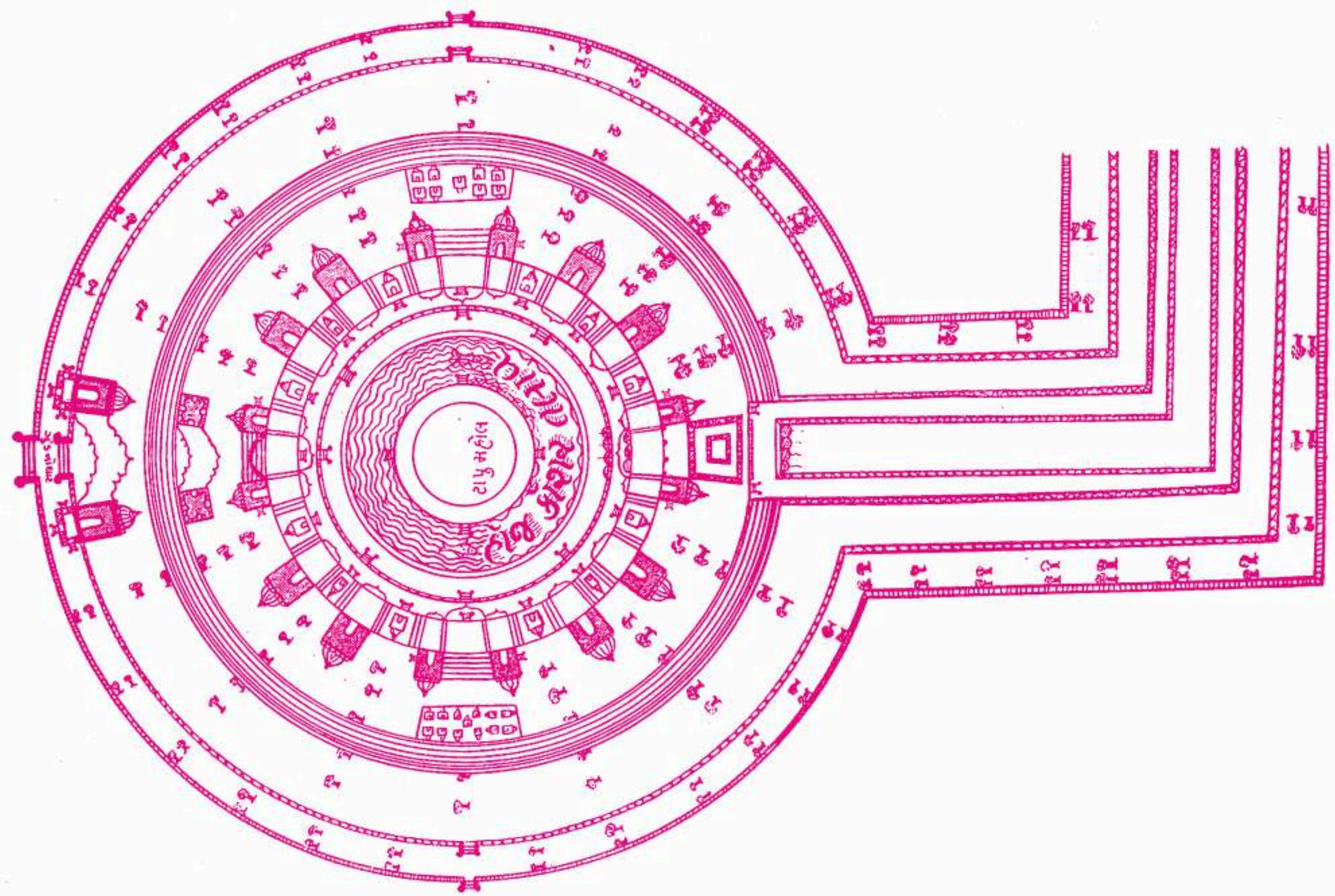

हौज कौसर ताल

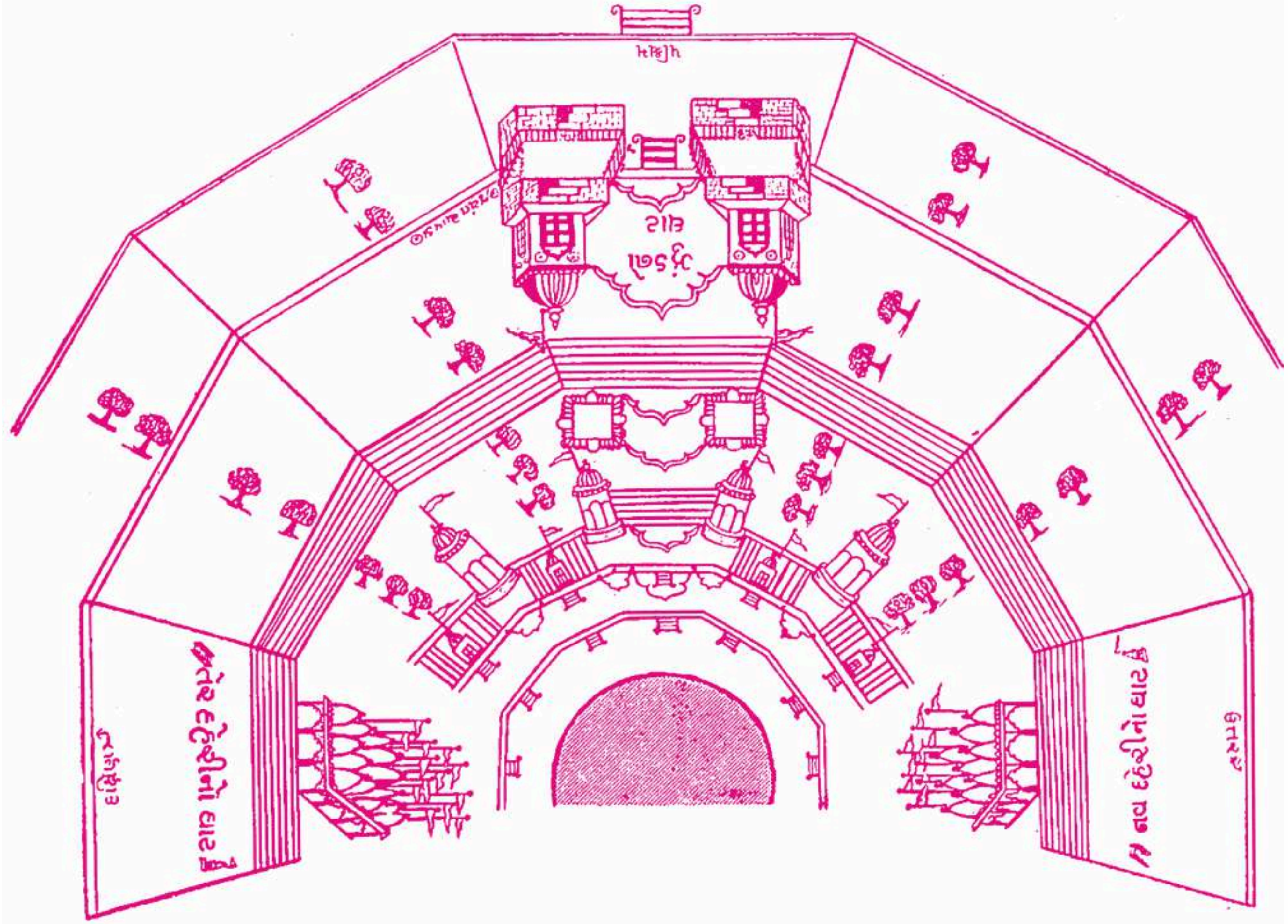

तीन घाट

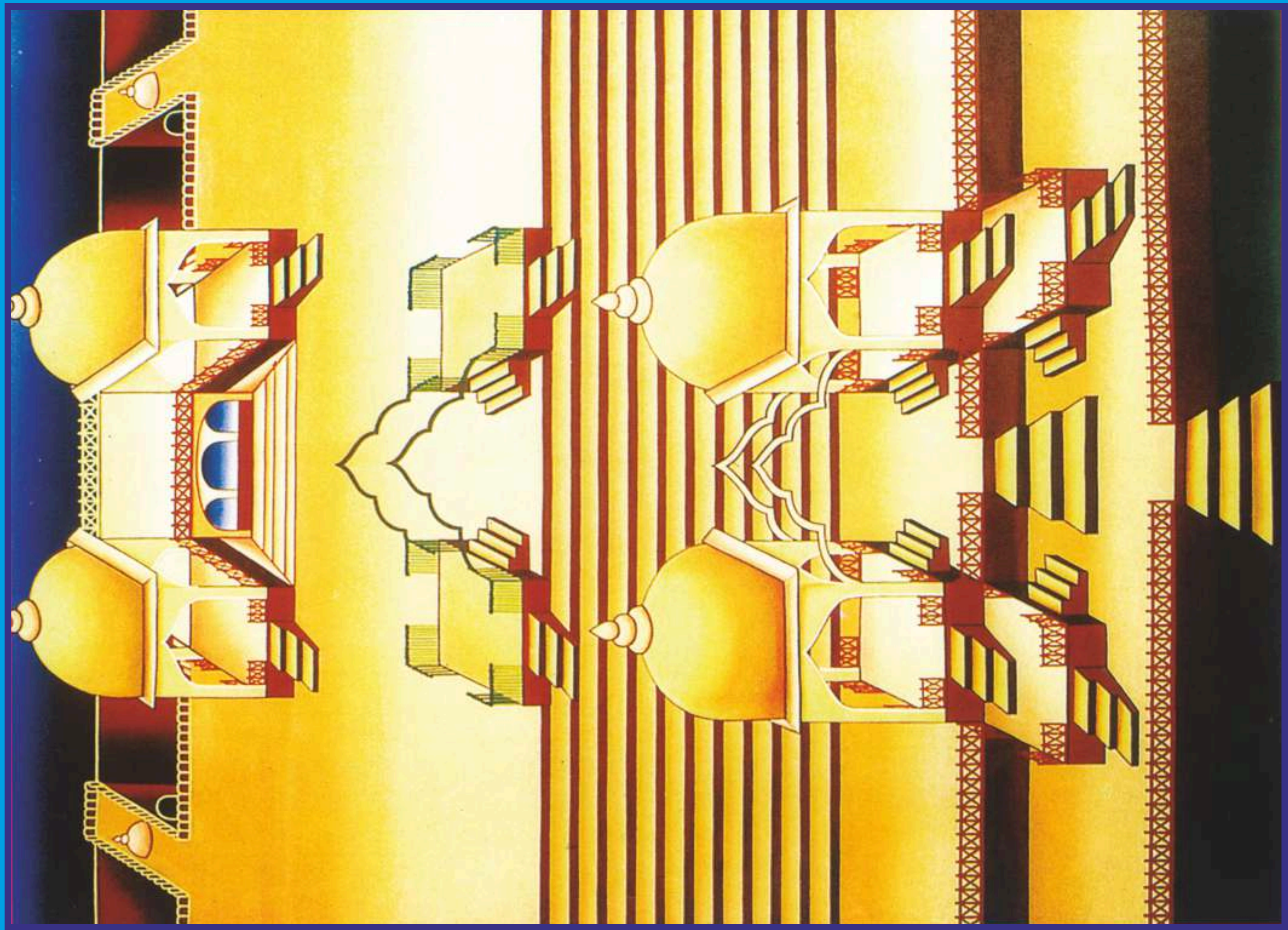

झुण्ड का घाट

''मदीयं सरः'' मदीयं मदकरं हर्षोत्पादकं सरः (सामवेदीय छान्दोग्यश्रुति) शां. भा.

सोलह देहुरी के घाट का खड़ा दृश्य नं. १

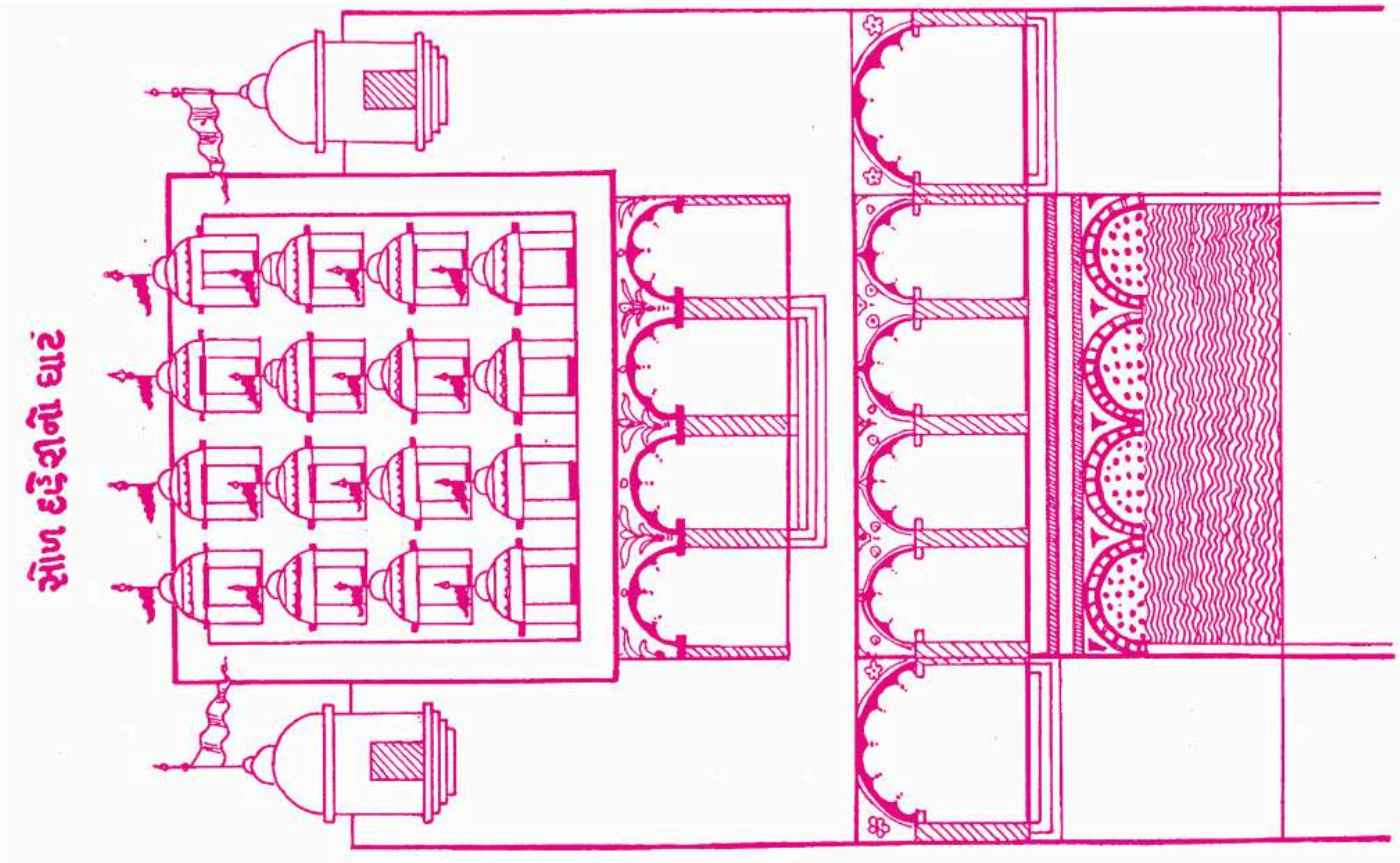

सोलह देहुरी के घाट का खड़ा दृश्य नं. २

सोलह देहुरी का घाट

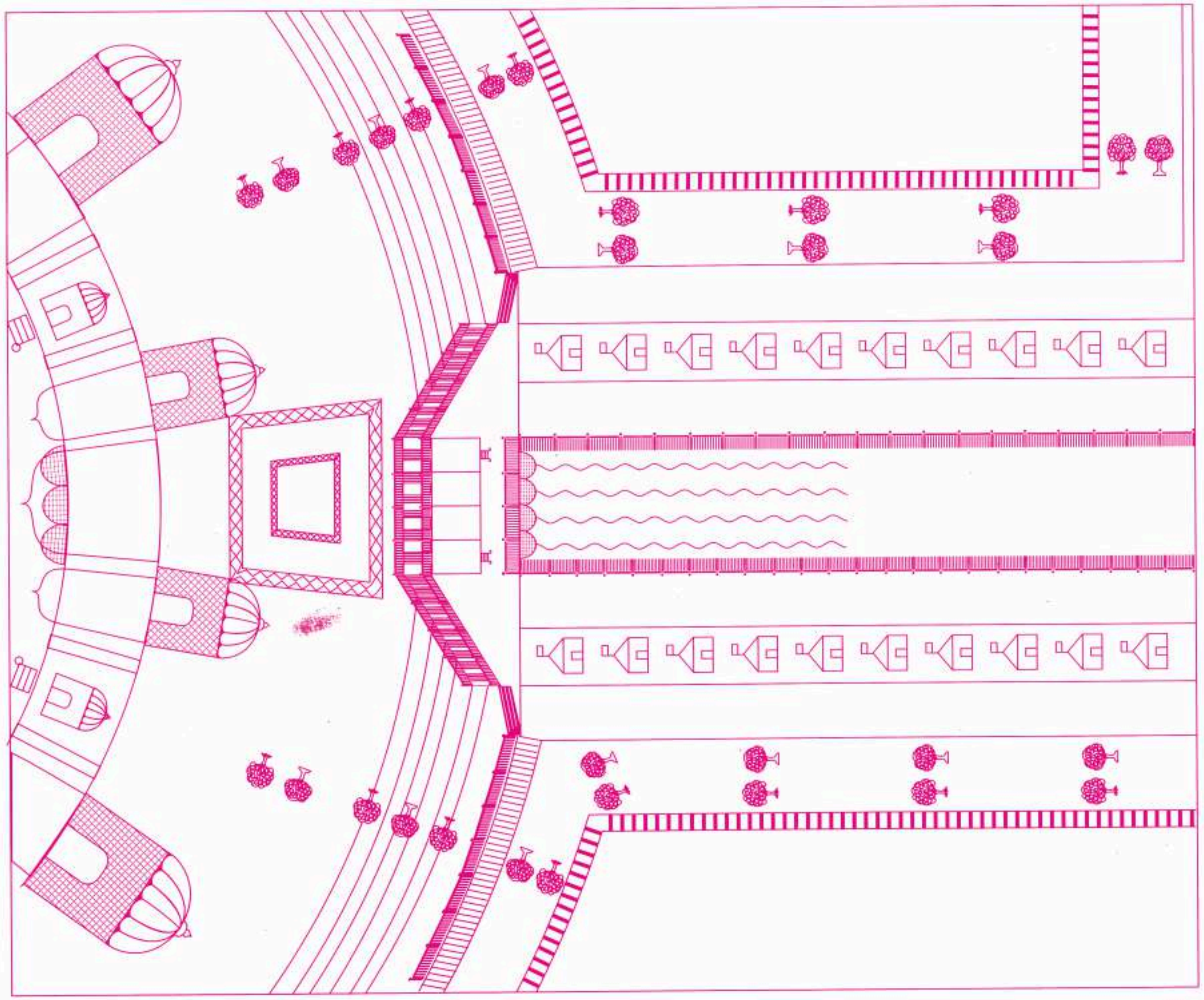

सोलह देहुरी के घाट के आगे का भाग

(४४)

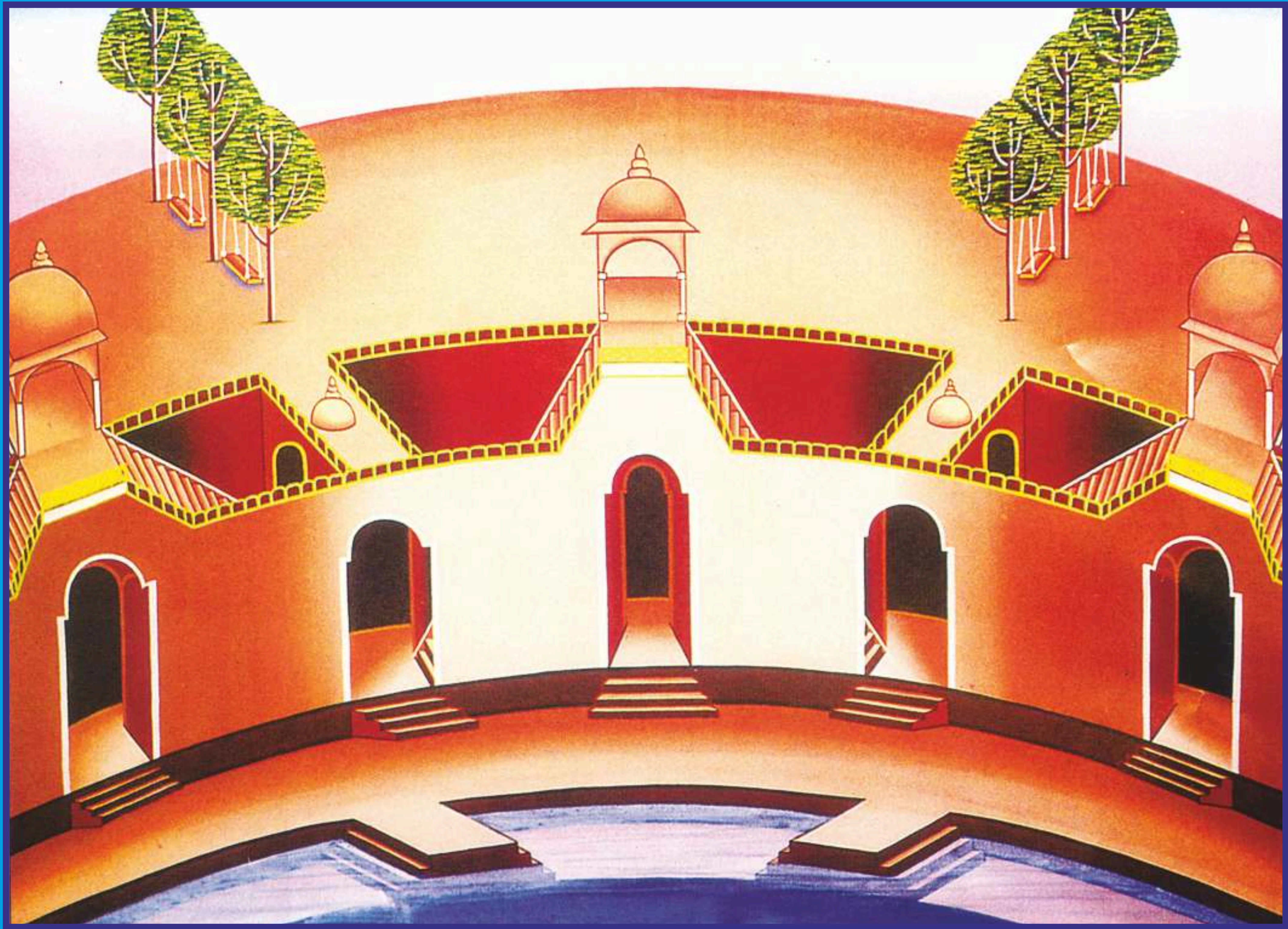

चौरस पाल के ऊपर देहुरी, वृक्ष एवं हिंडोले

पाल की देहुरियाँ

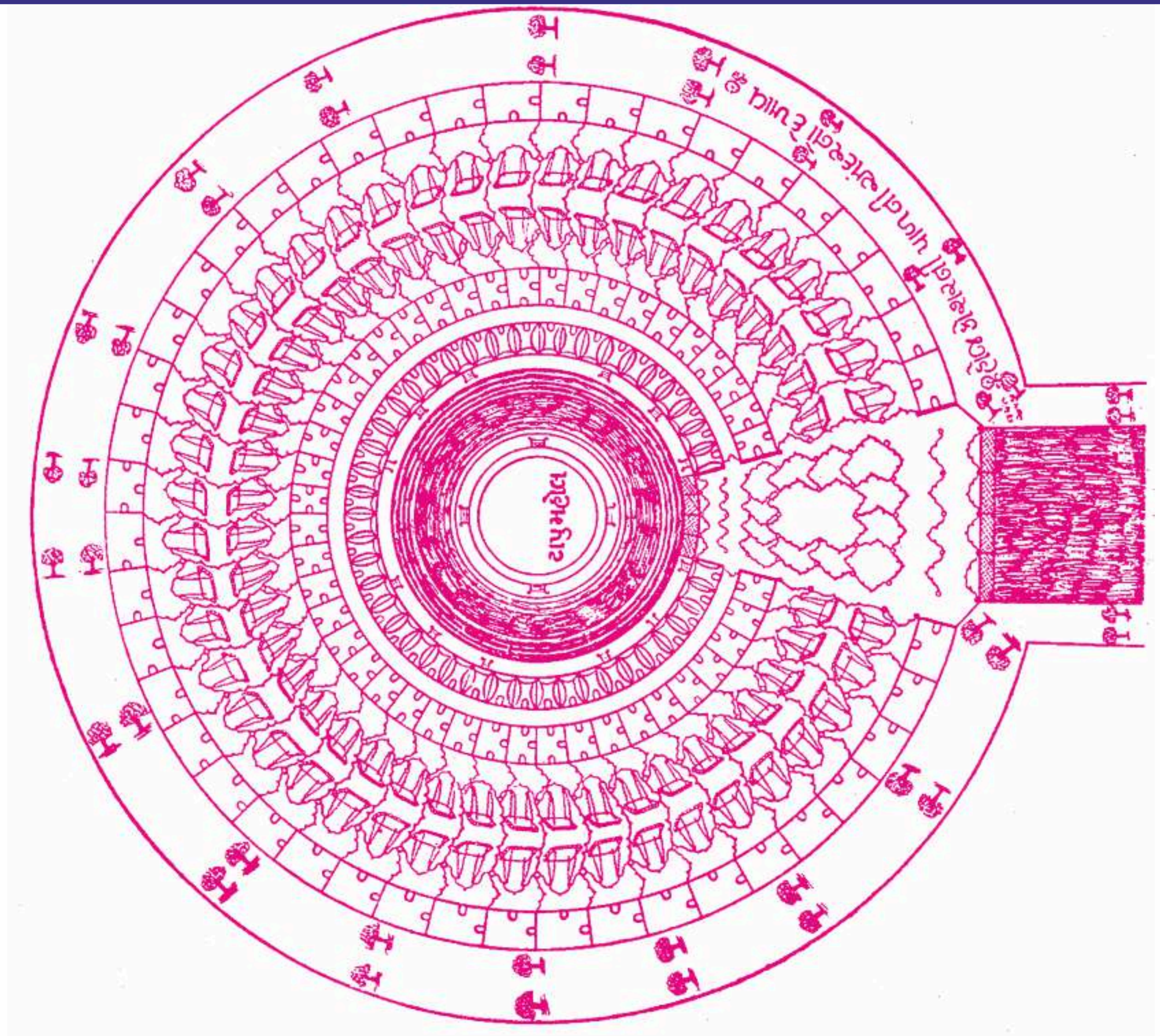

पाल अंदर की महलातें नं. १

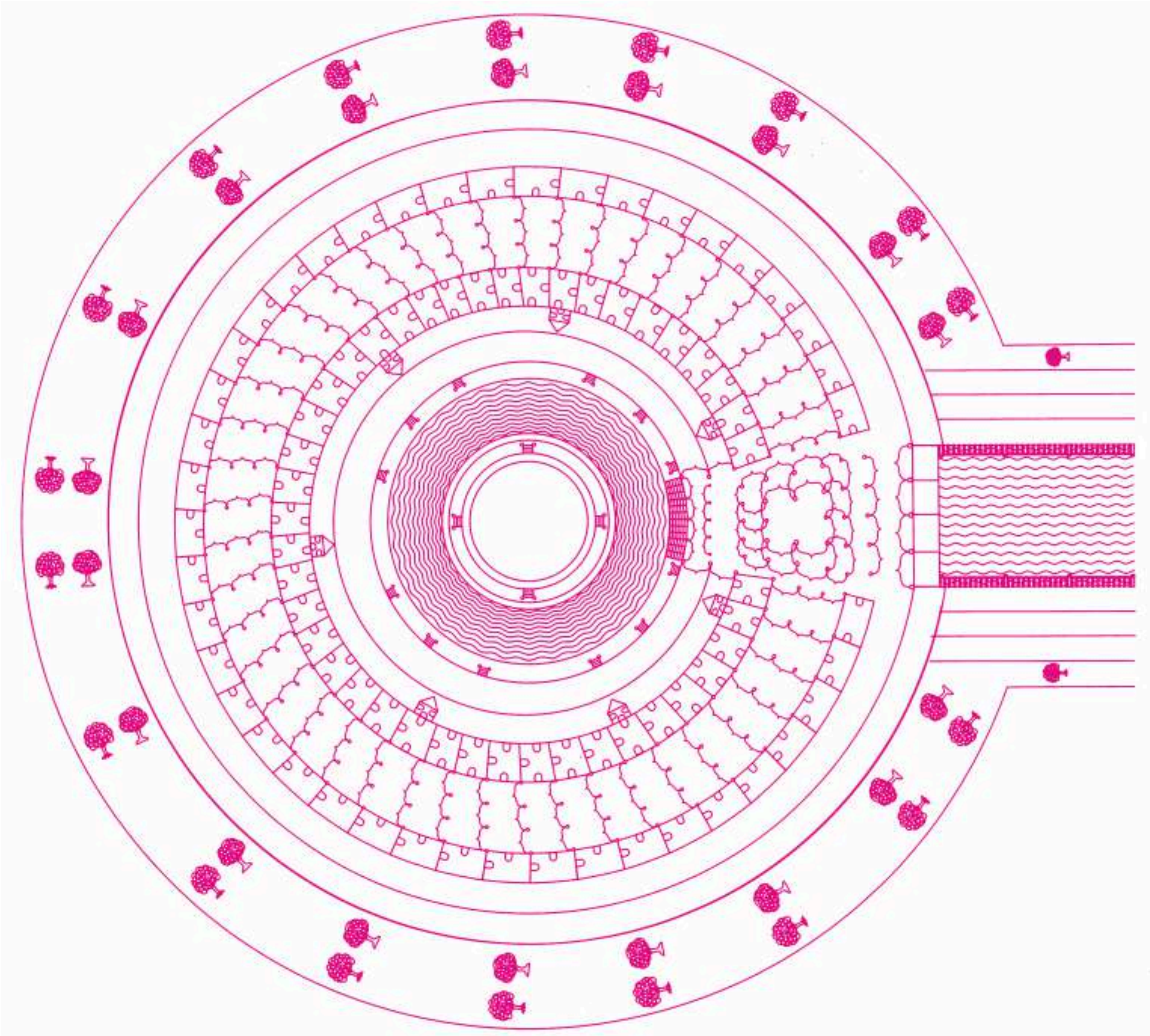

पाल अंदर की महलातें नं. २

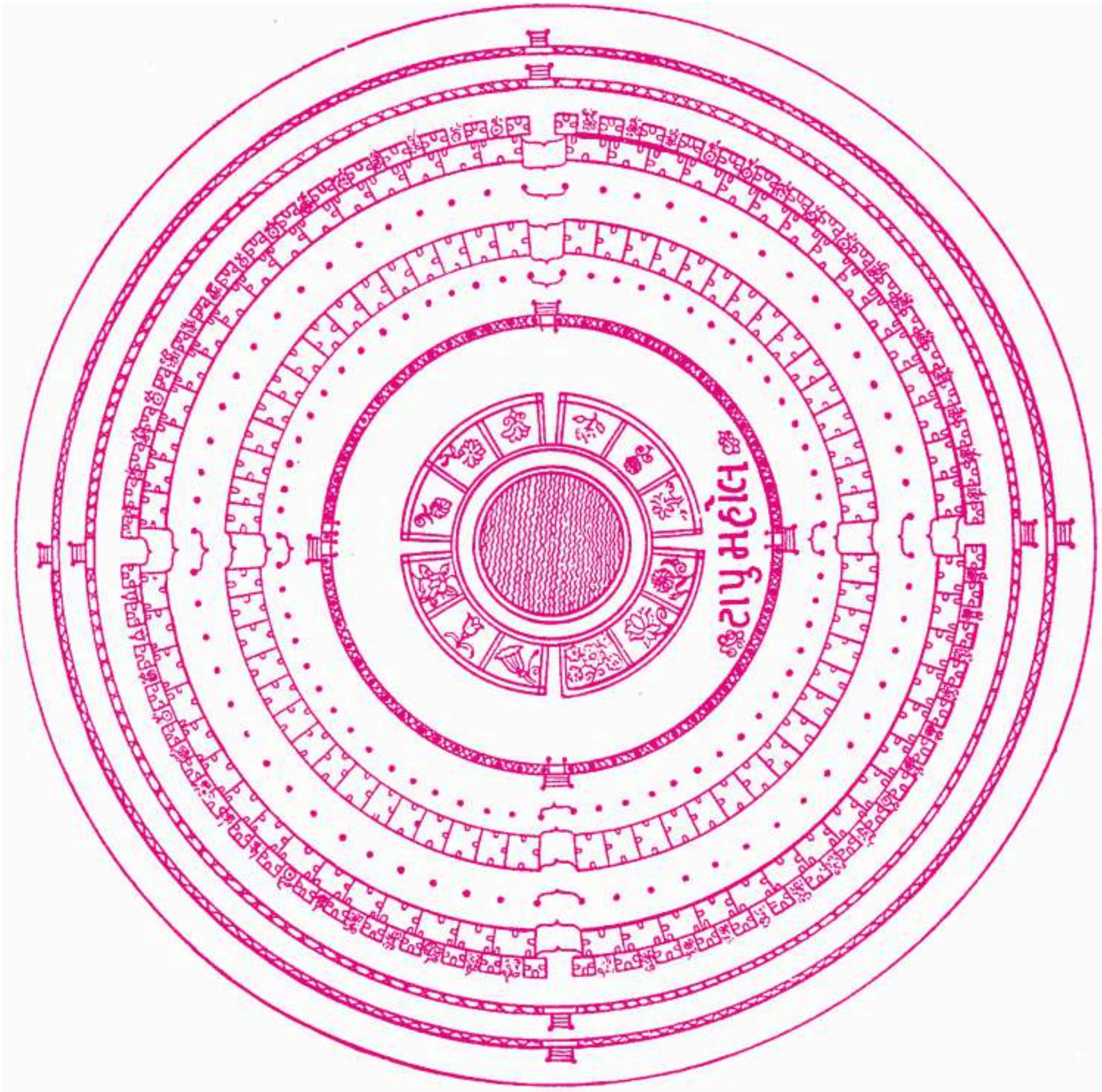

टापू महल

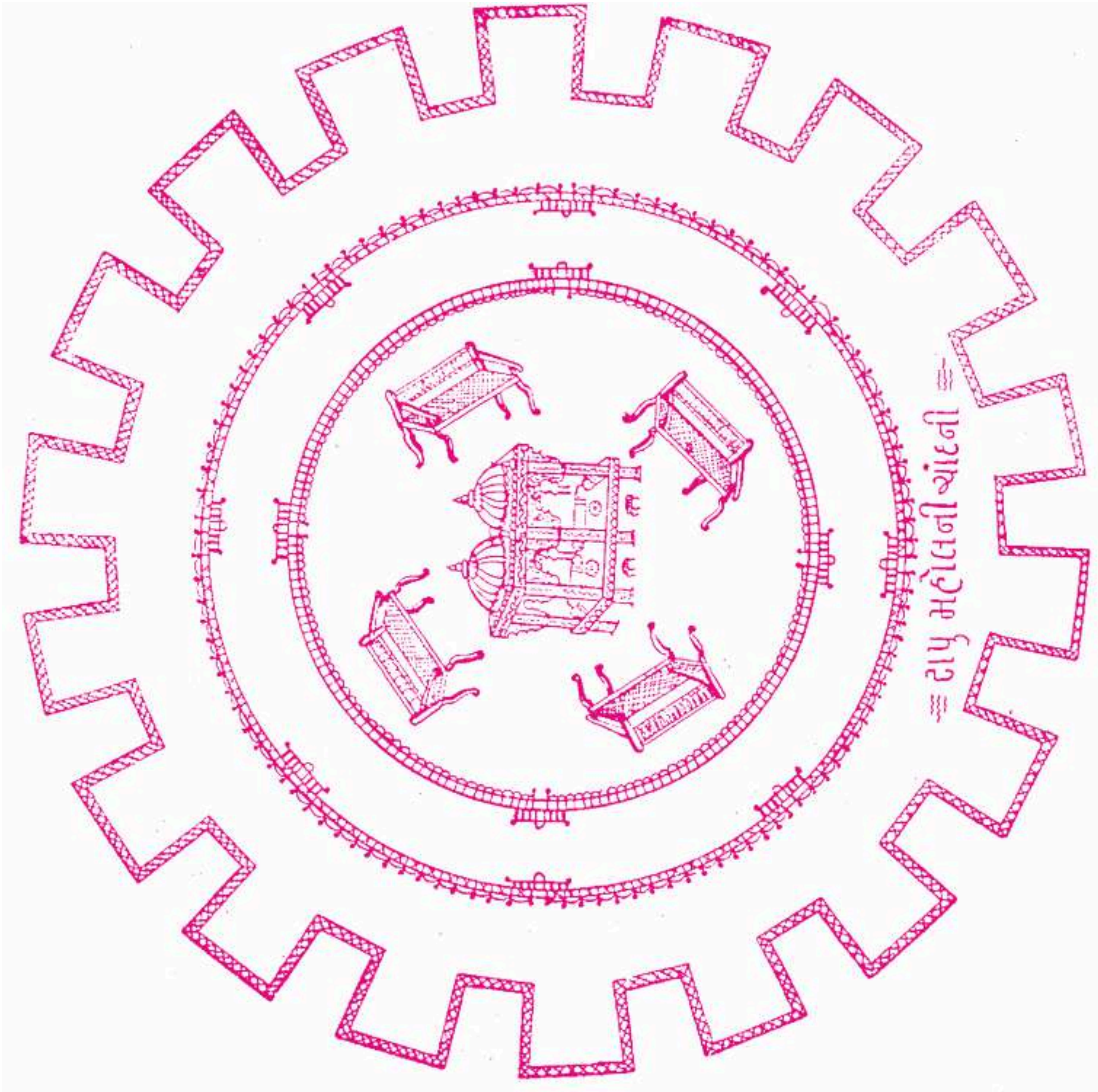

टापू महल की चाँदनी

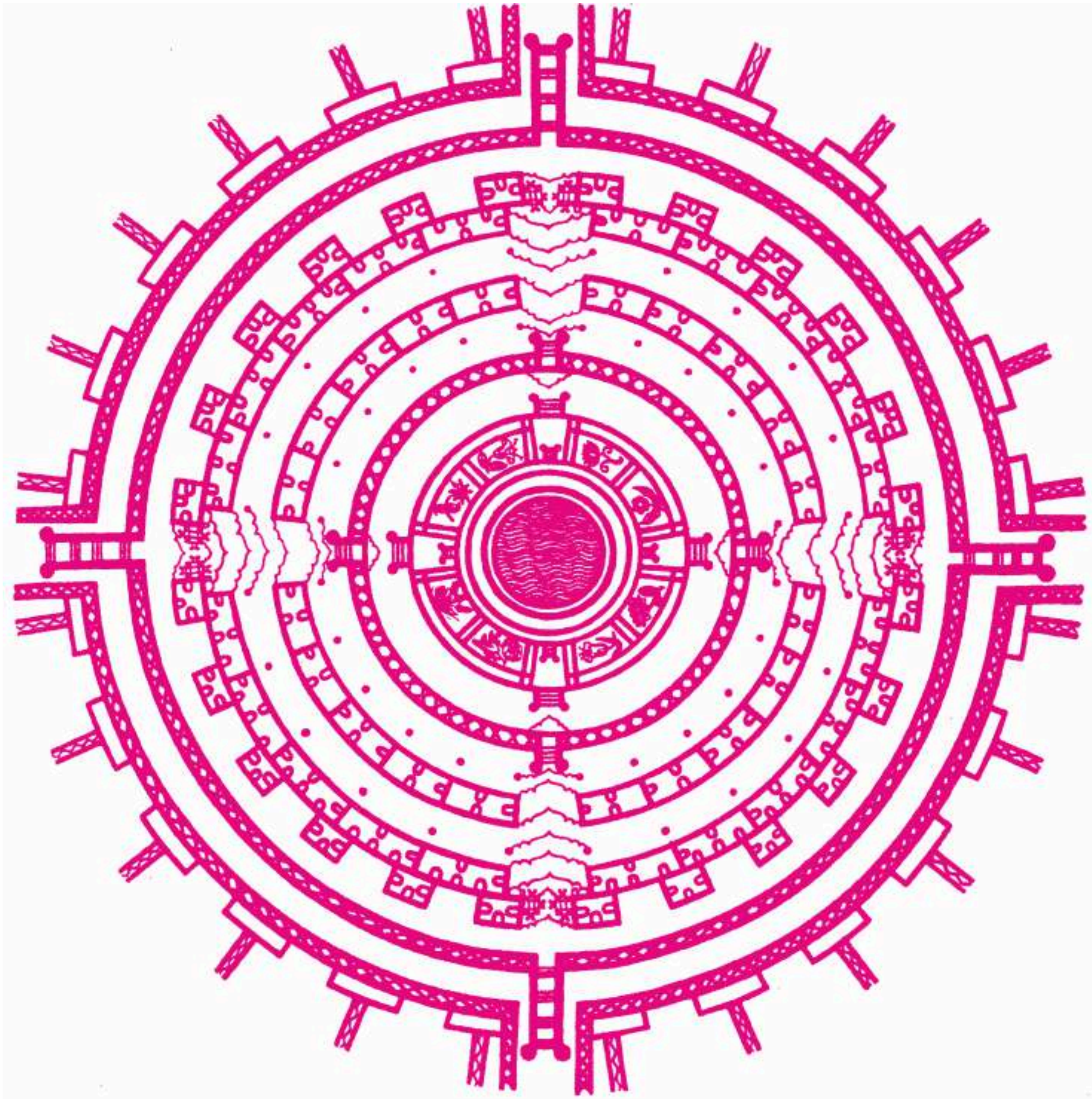

चौबीस हाँस का महल

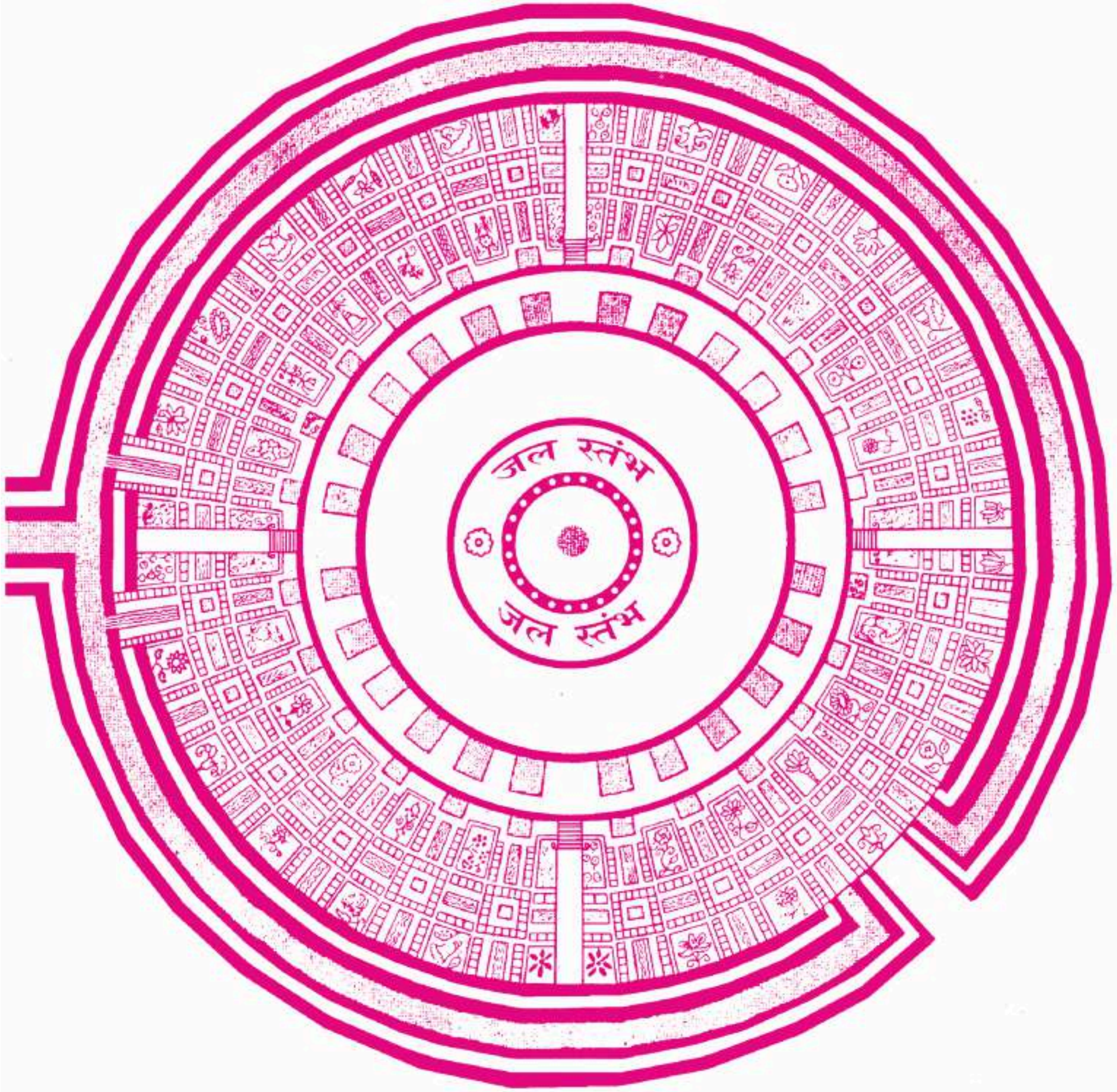

चौबीस हाँस के महल की चाँदनी

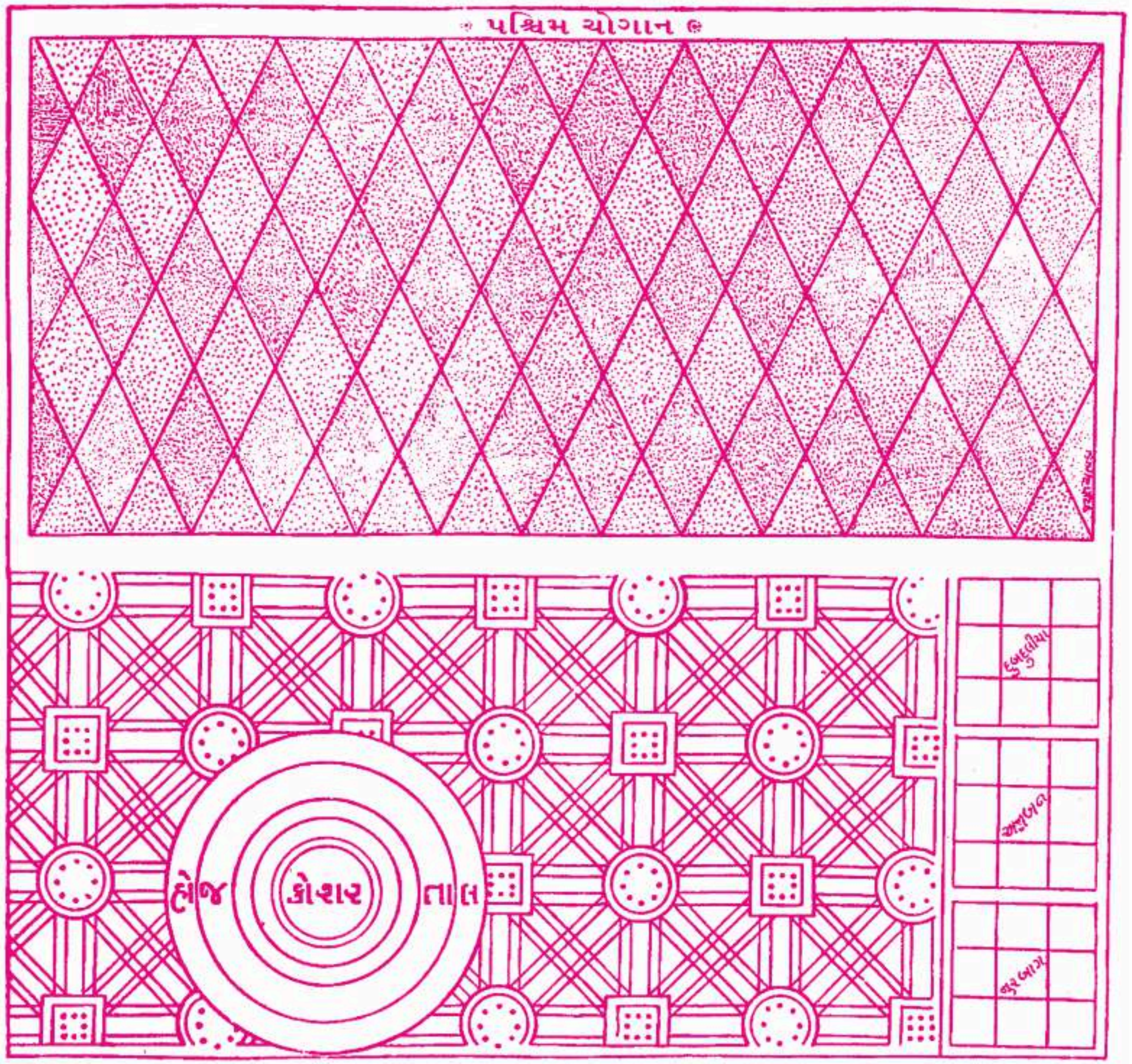

पश्चिम की चौगान

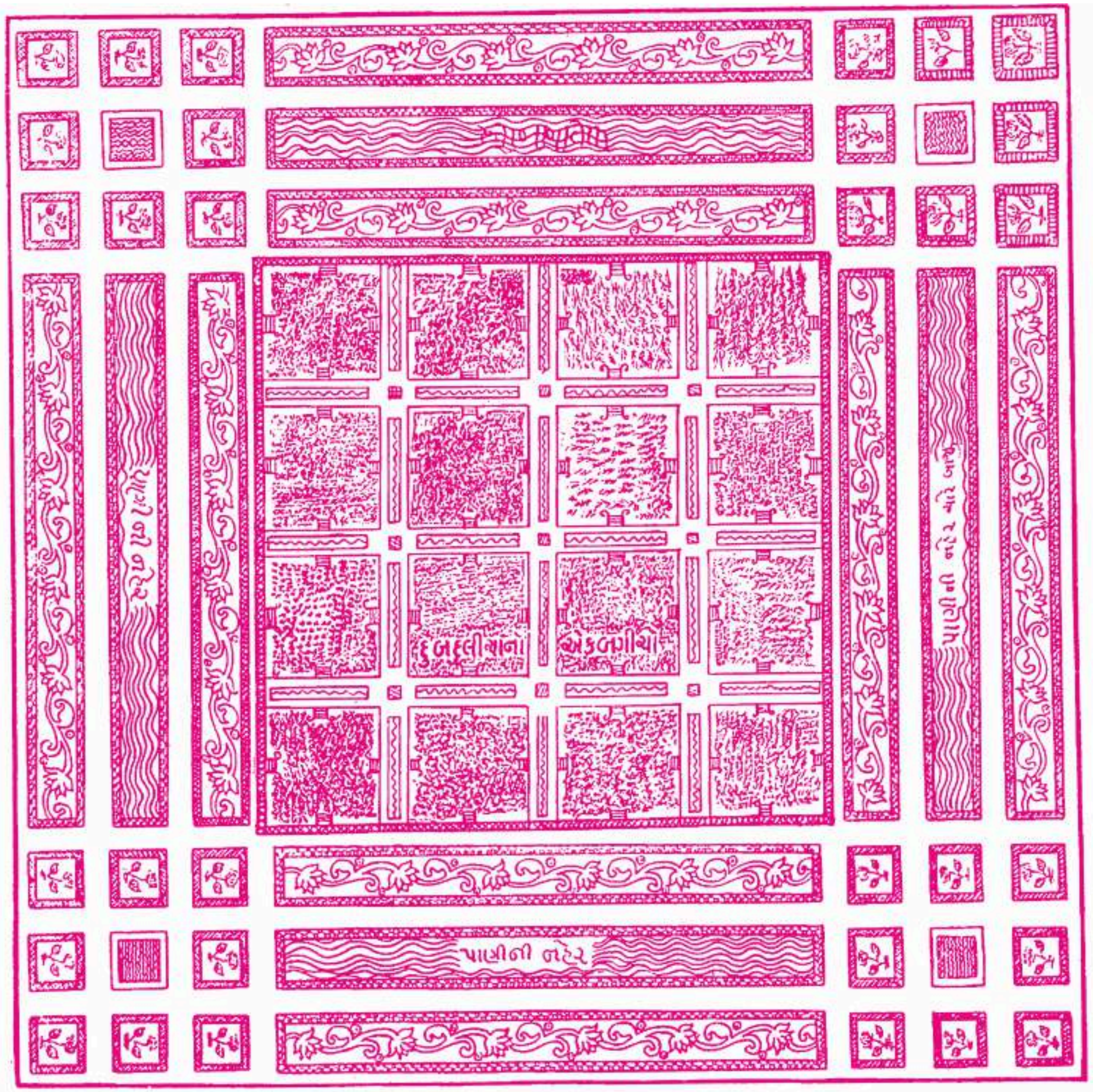

दूब दुलीचा नं १

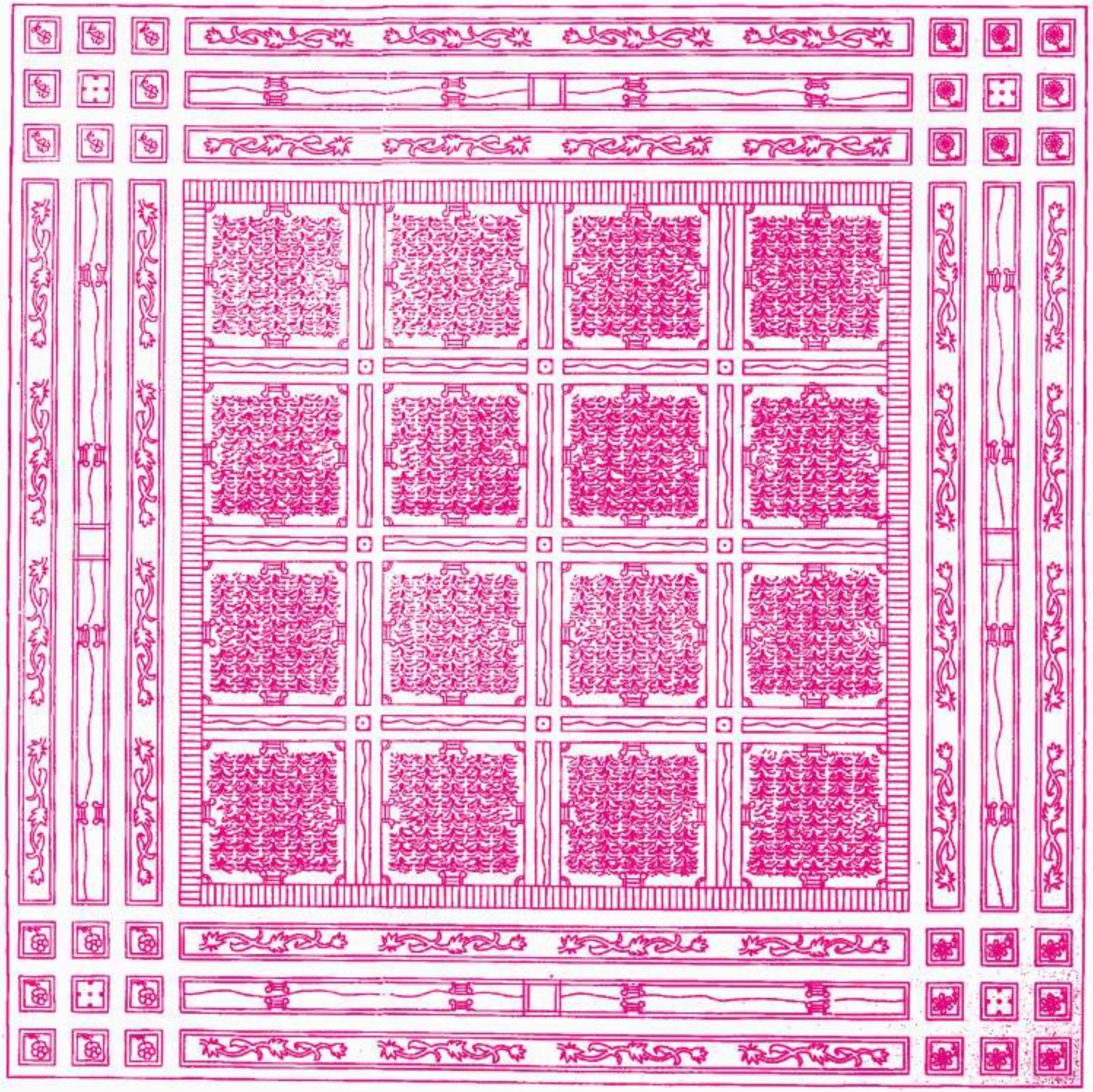

दूब दुलीचा नं २

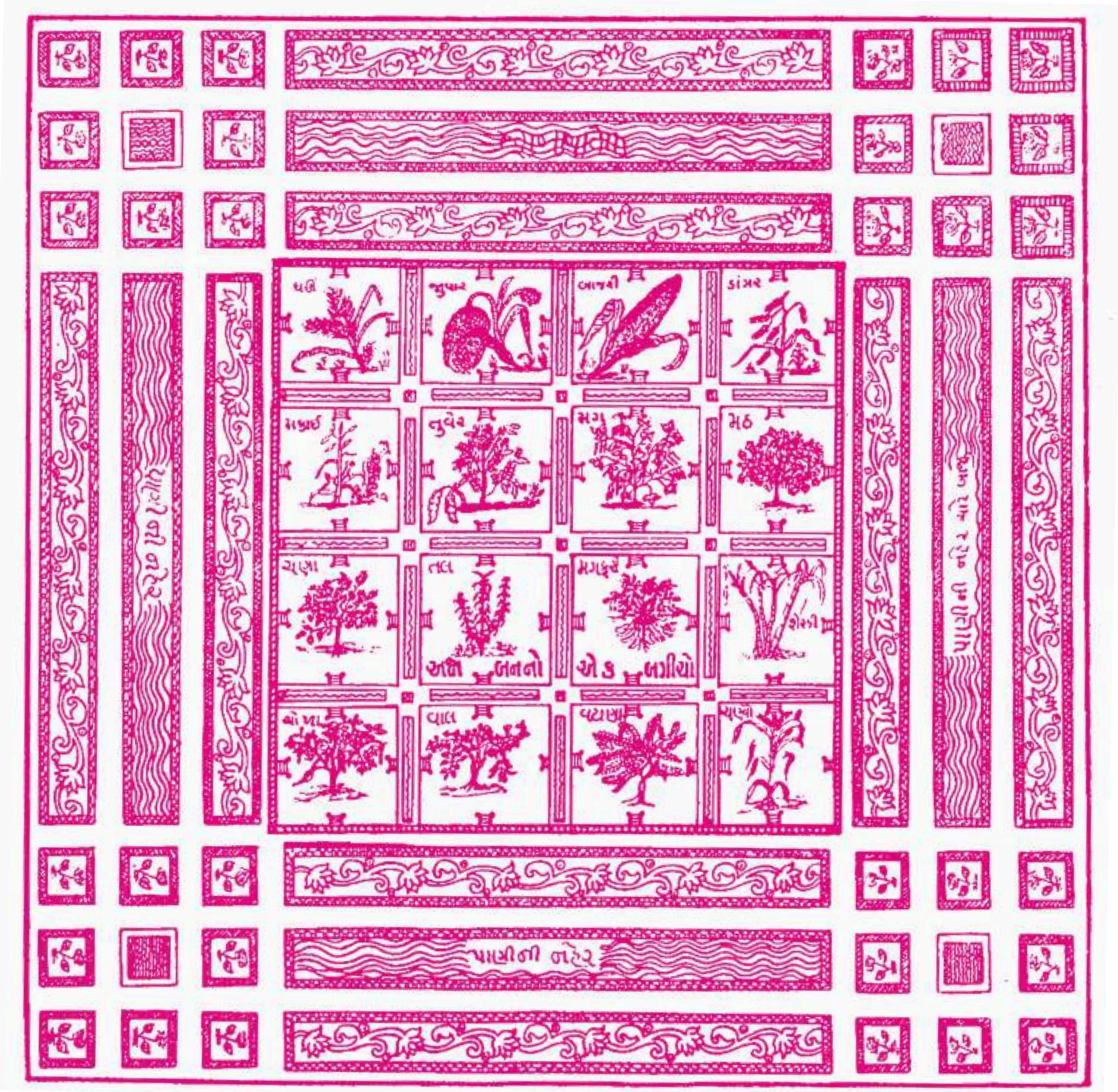

अन्नवन

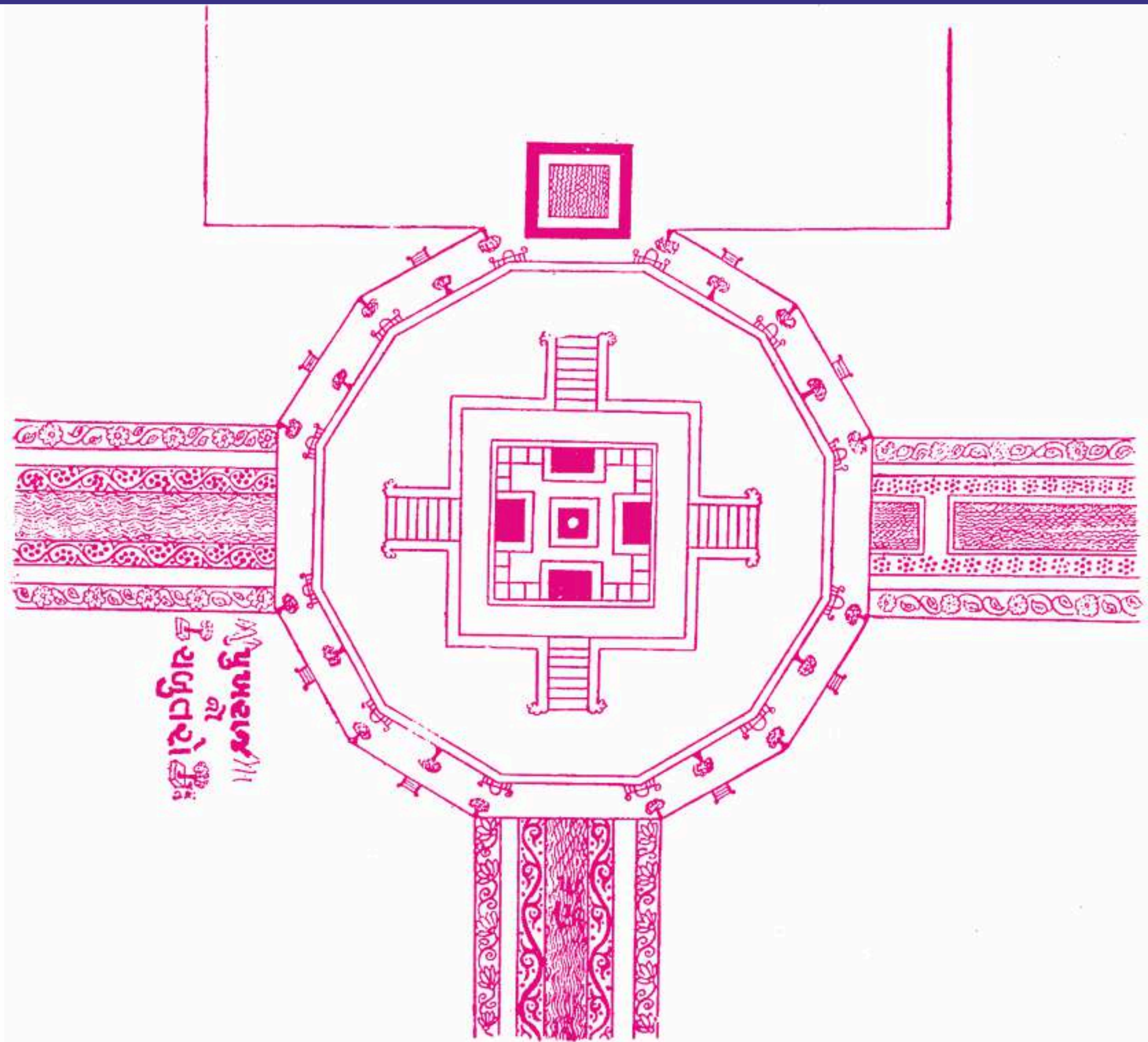

पुखराज का चबूतरा

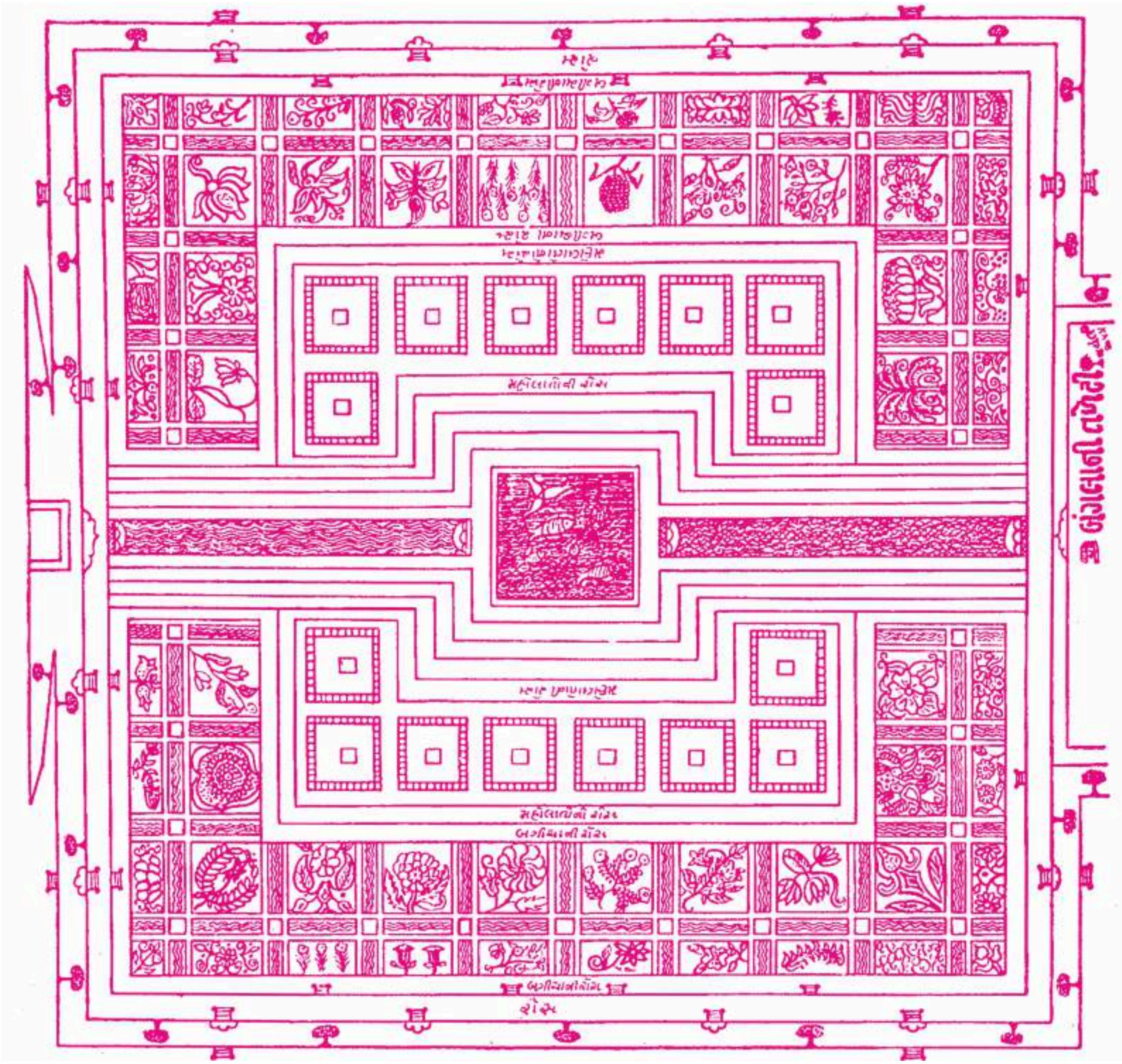

बंगलों की तरहटी

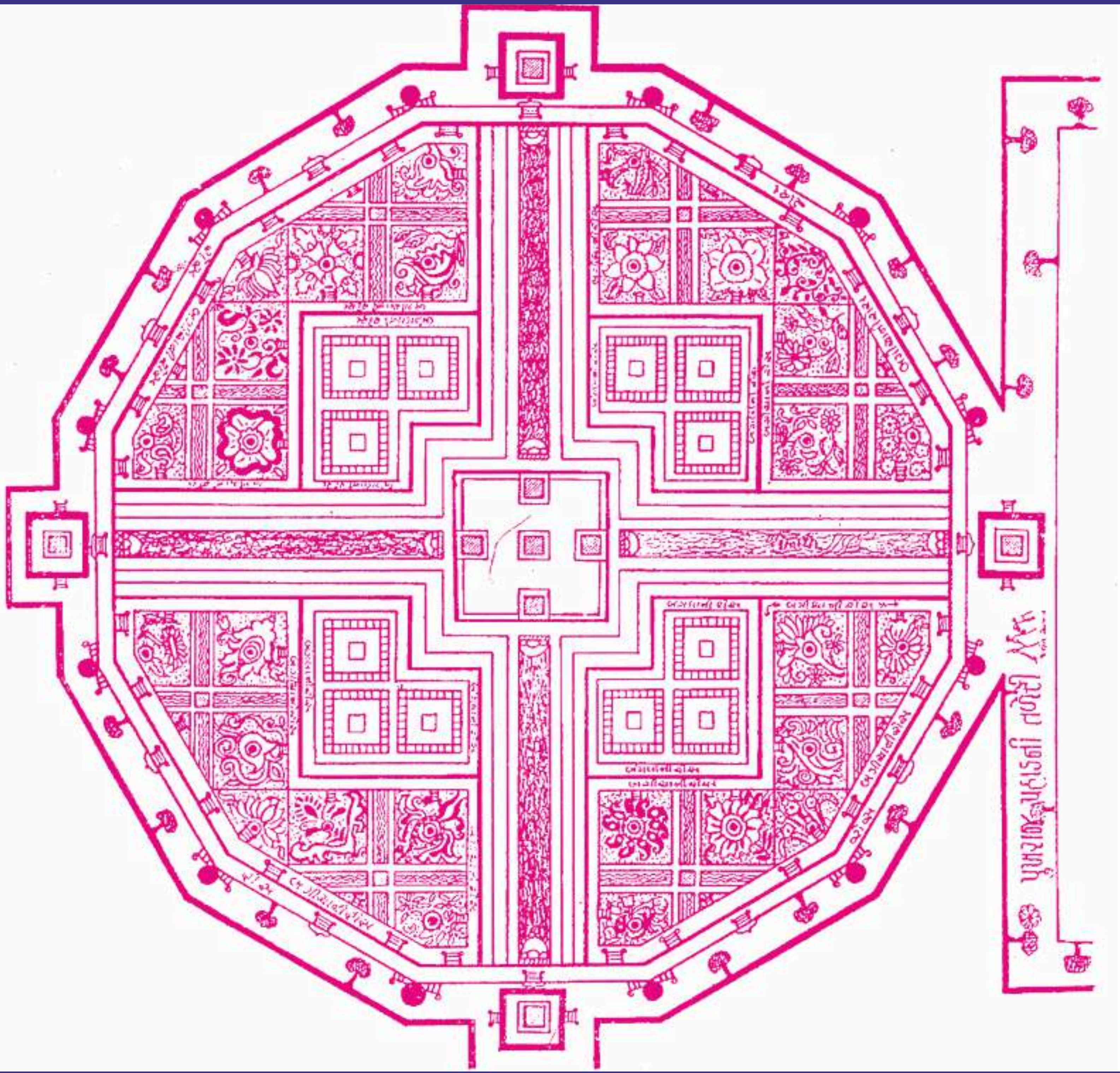

पुखराज की तरहटी

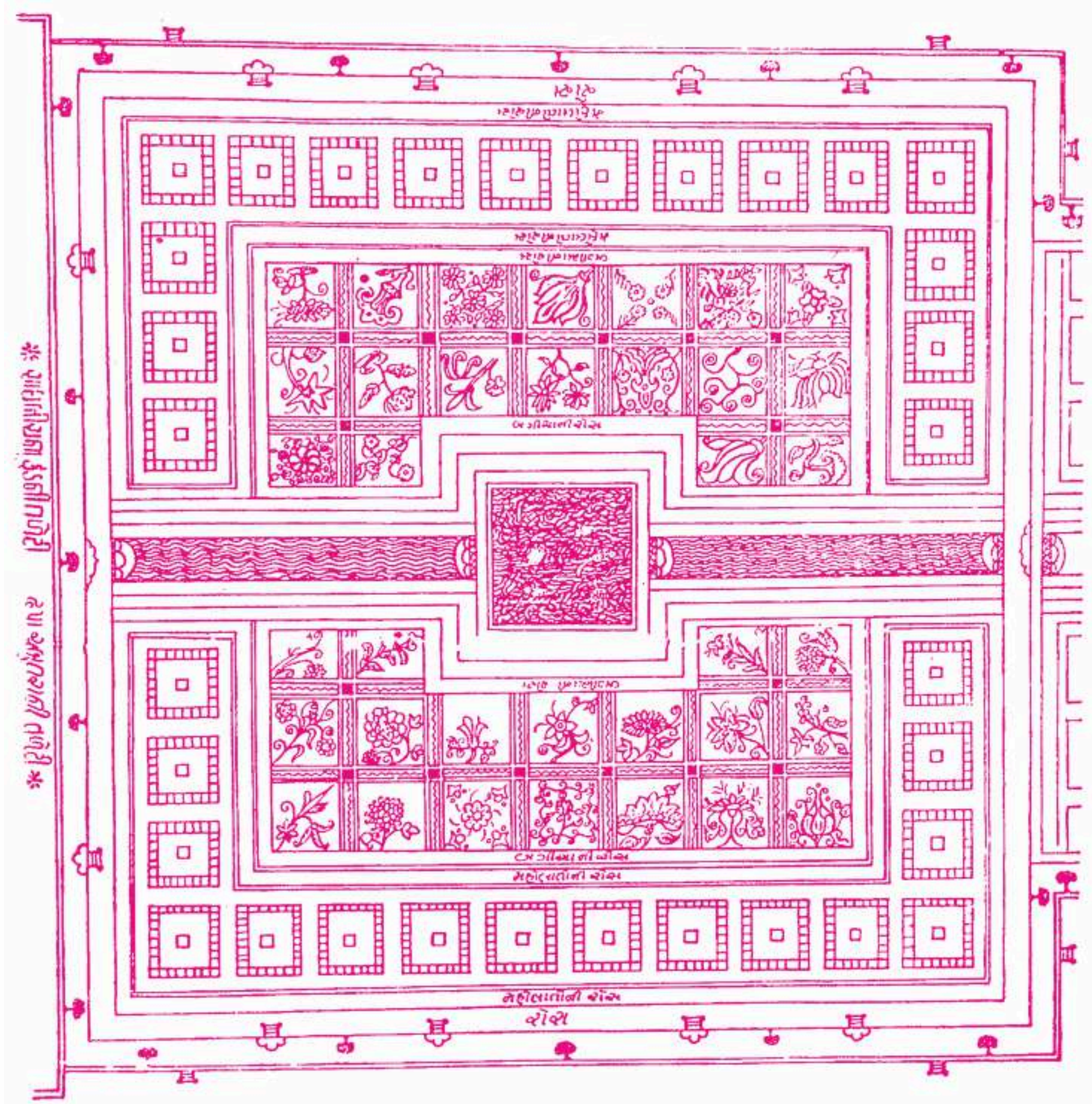

अधबीच के कुण्ड की तरहटी

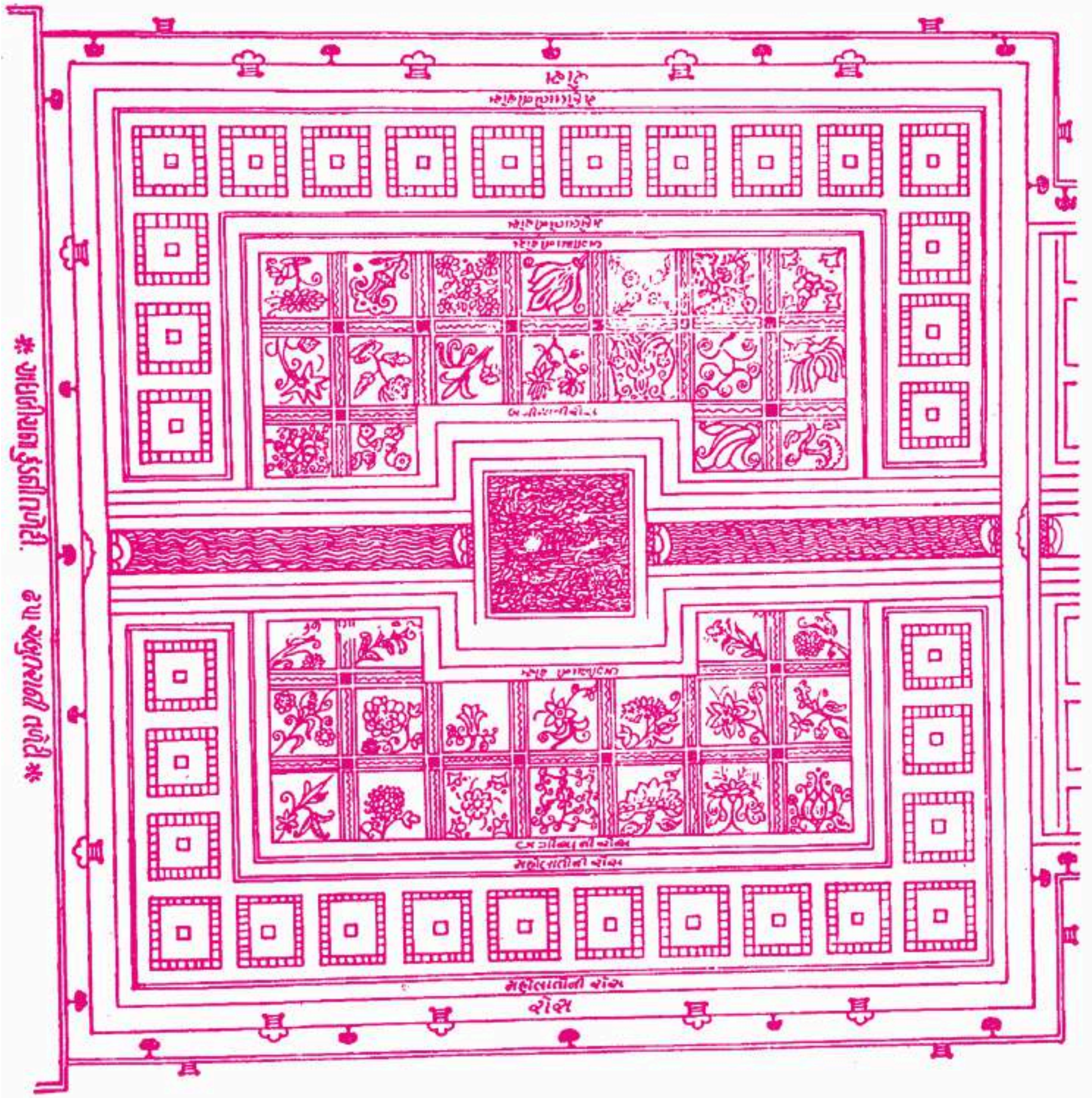

ढँपे चबूतरे की तरहटी

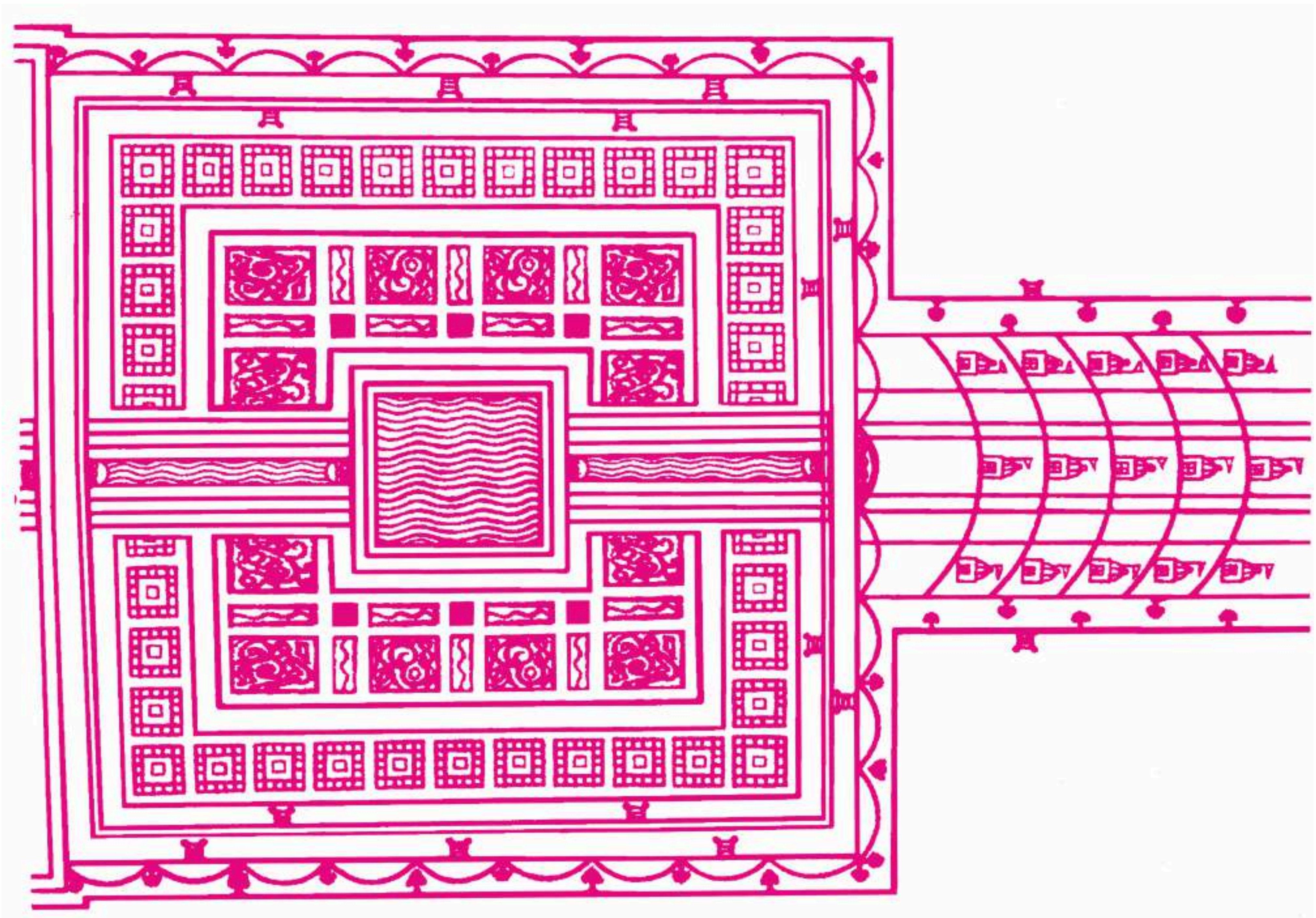

मूलकुण्ड की तरहटी

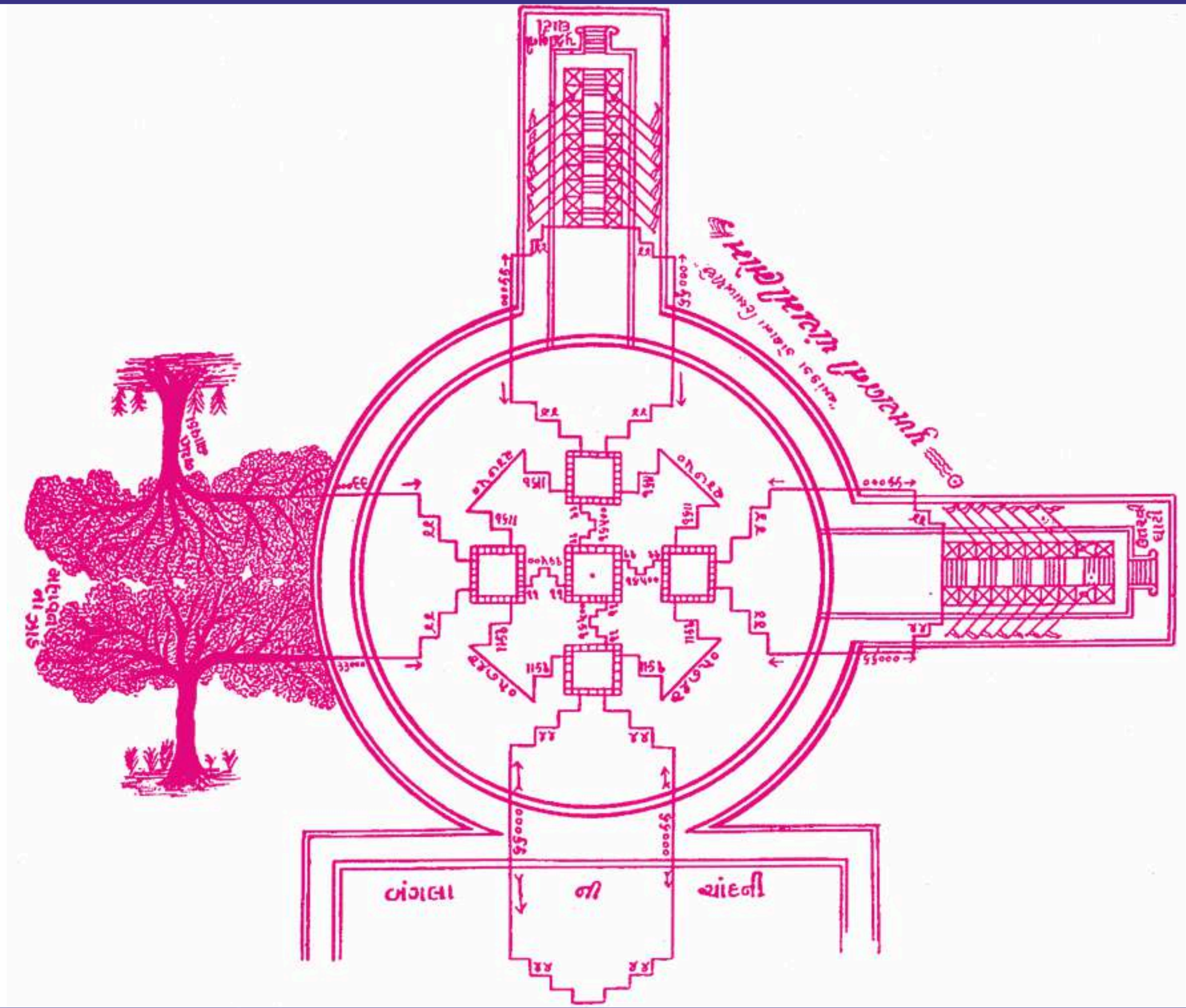

पुखराज की छट्ठीं भोम

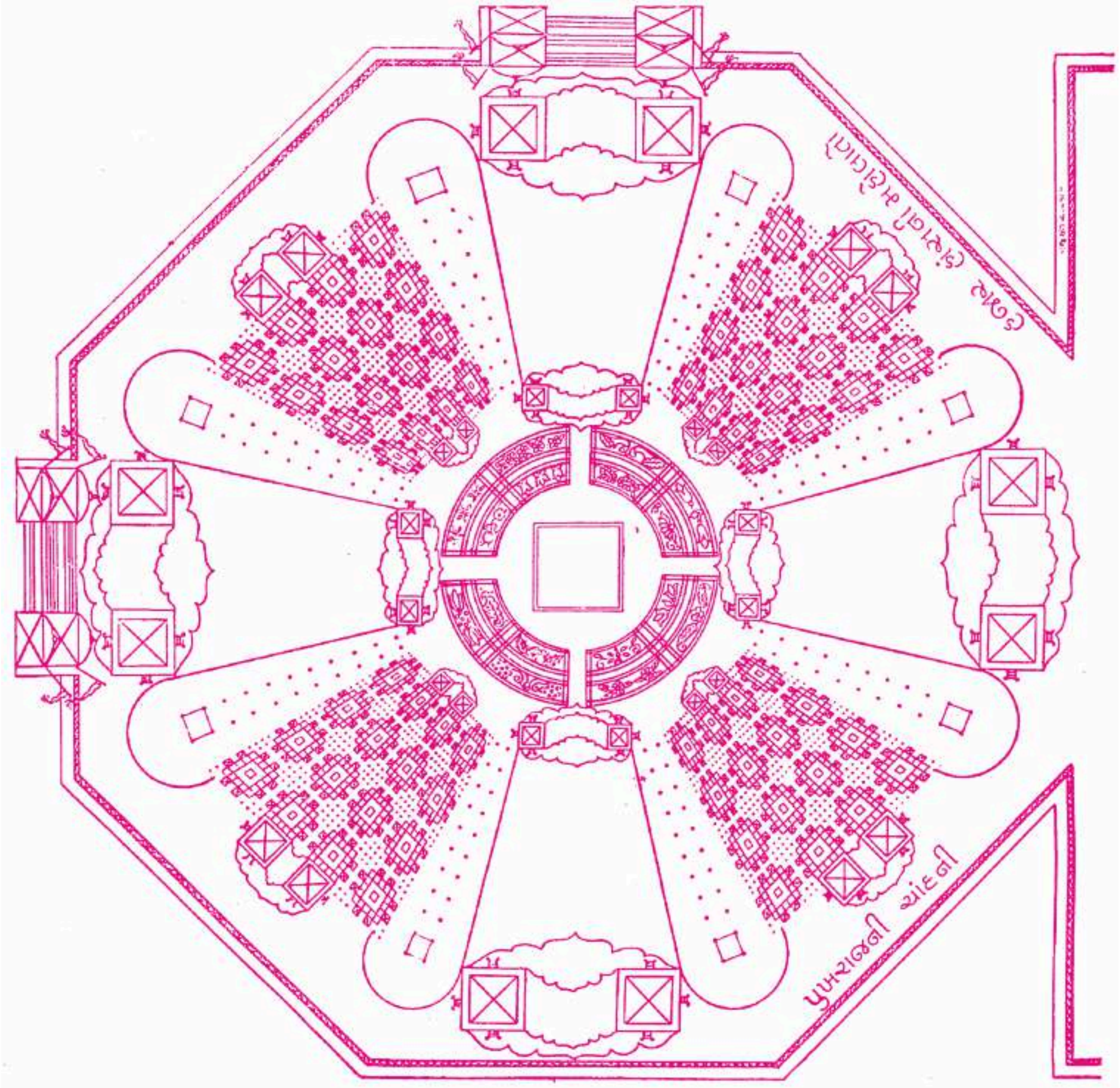

पुखराज की चाँदनी

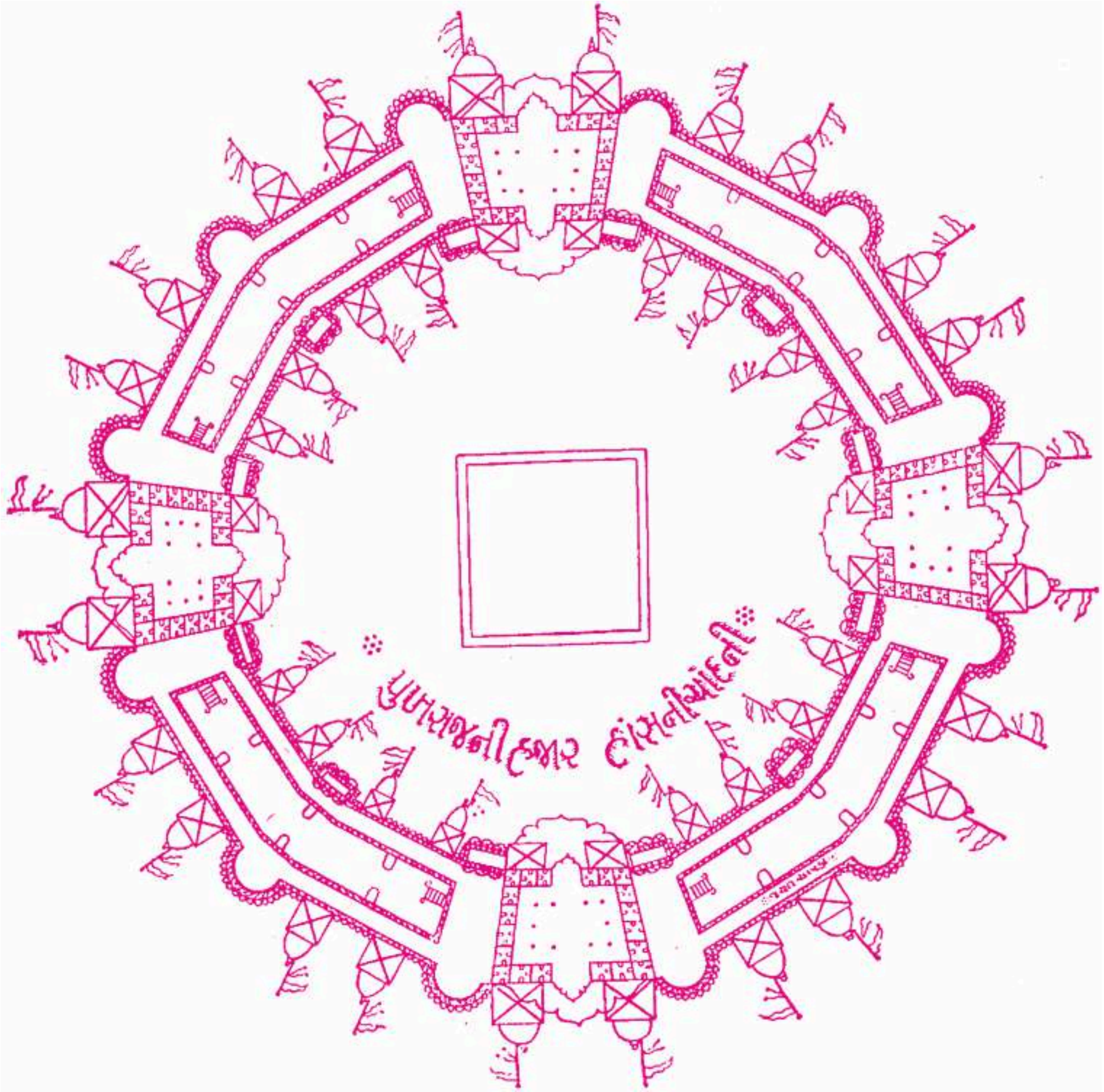

हजार हाँस की चाँदनी

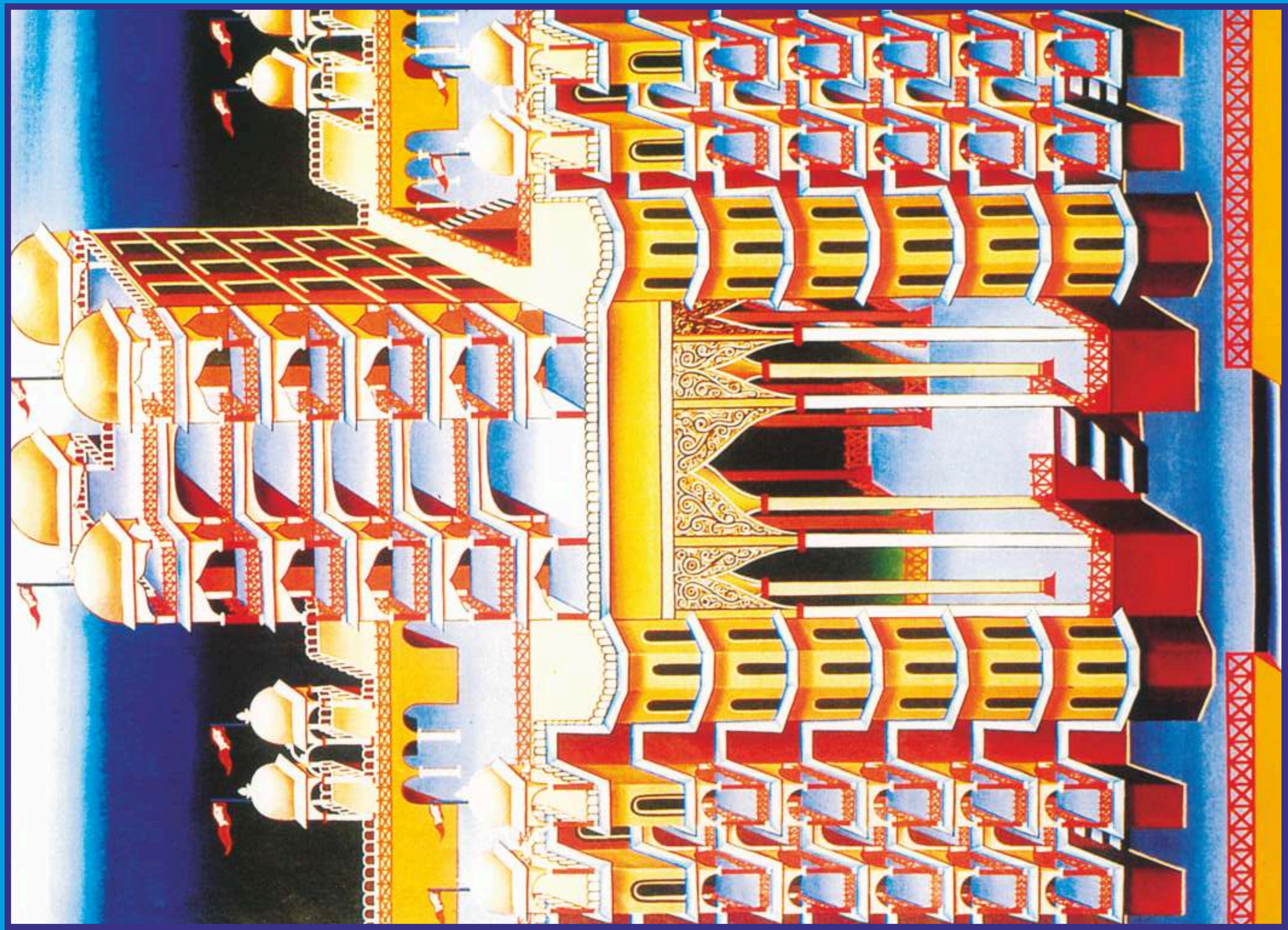

पुखराज पर्वत की चाँदनी का बड़ा द्वार

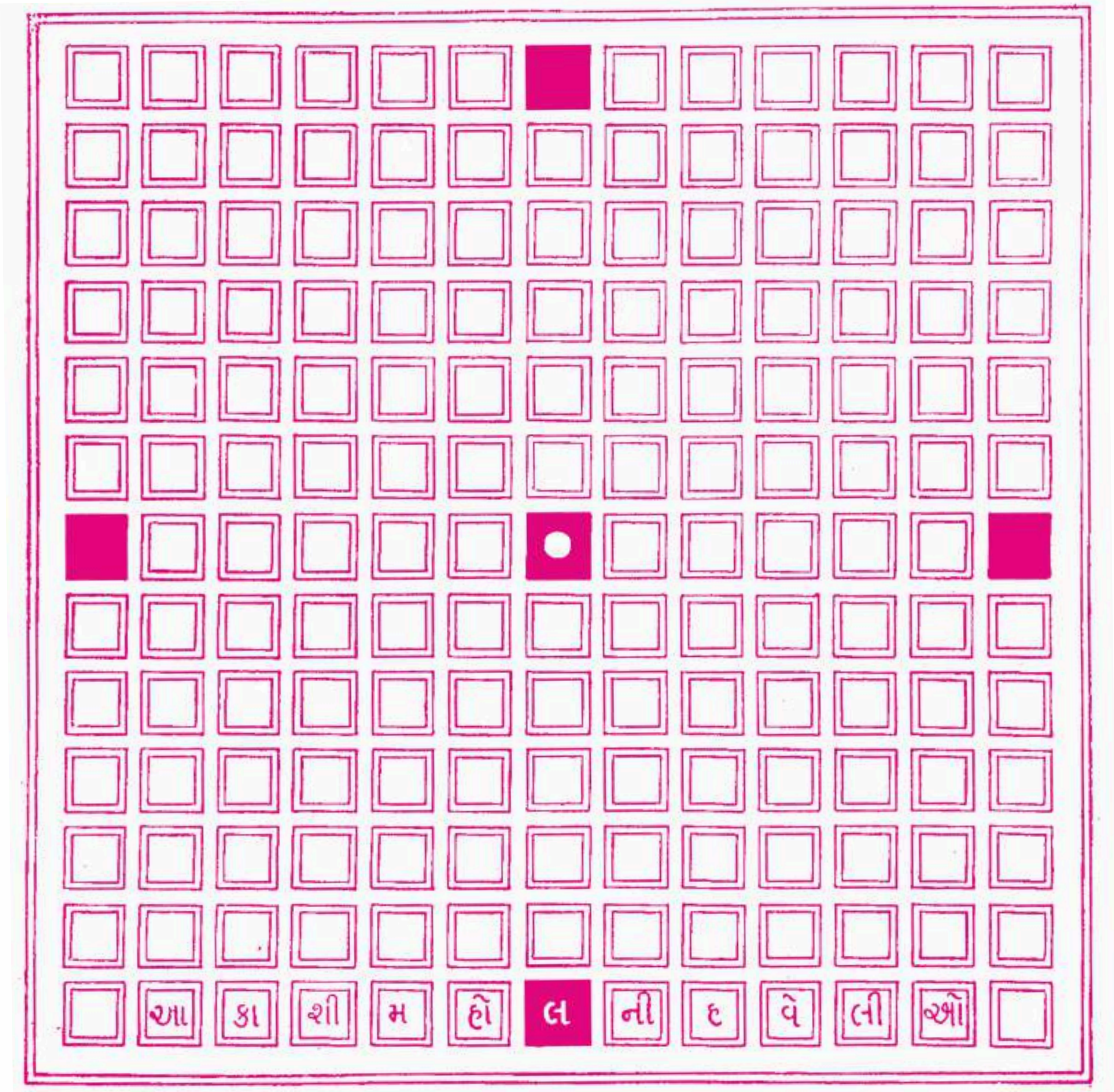

आकाशी महल नं. १

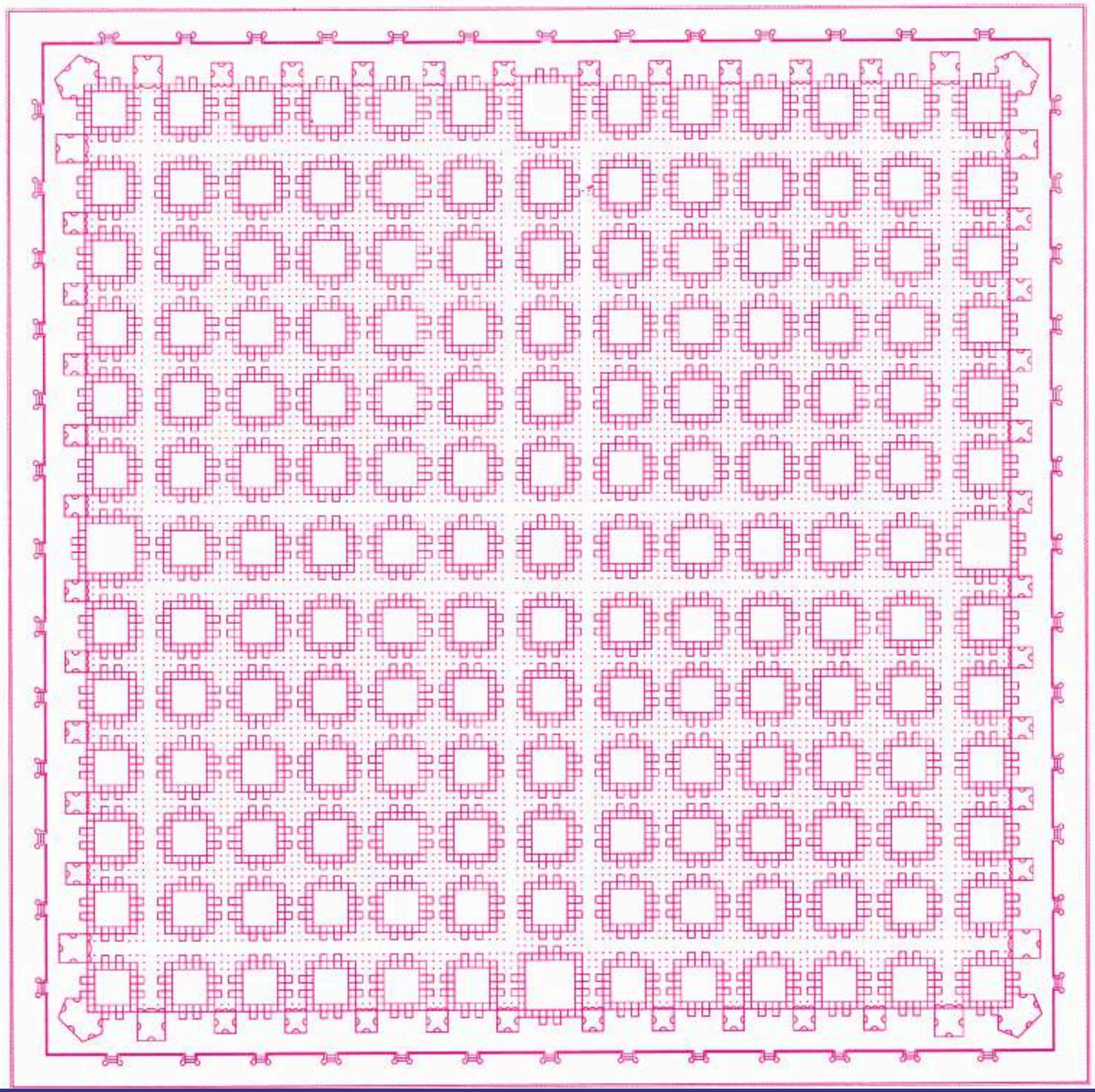

आकाशी महल नं. २

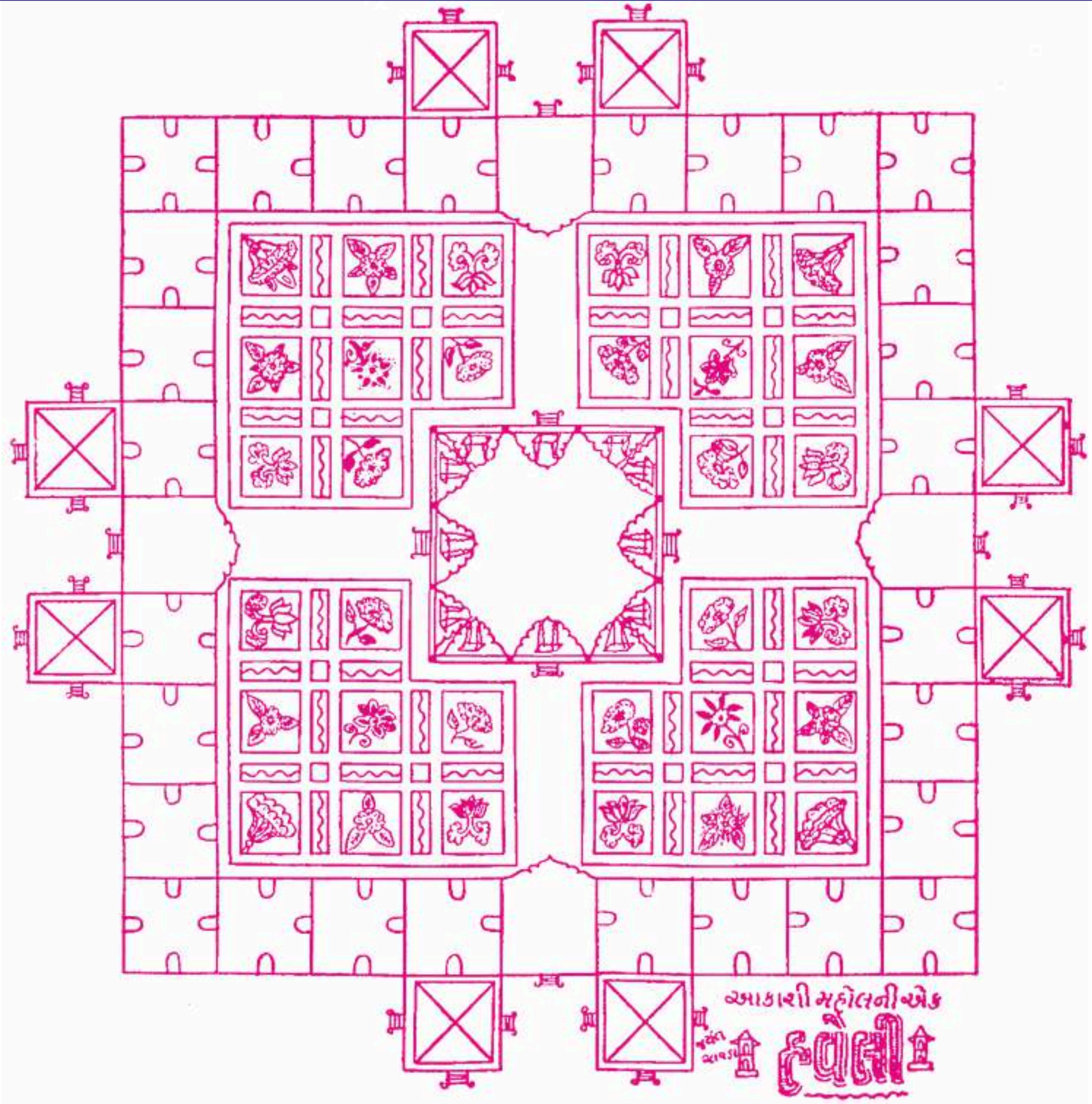

आकाशी महल की एक हवेली

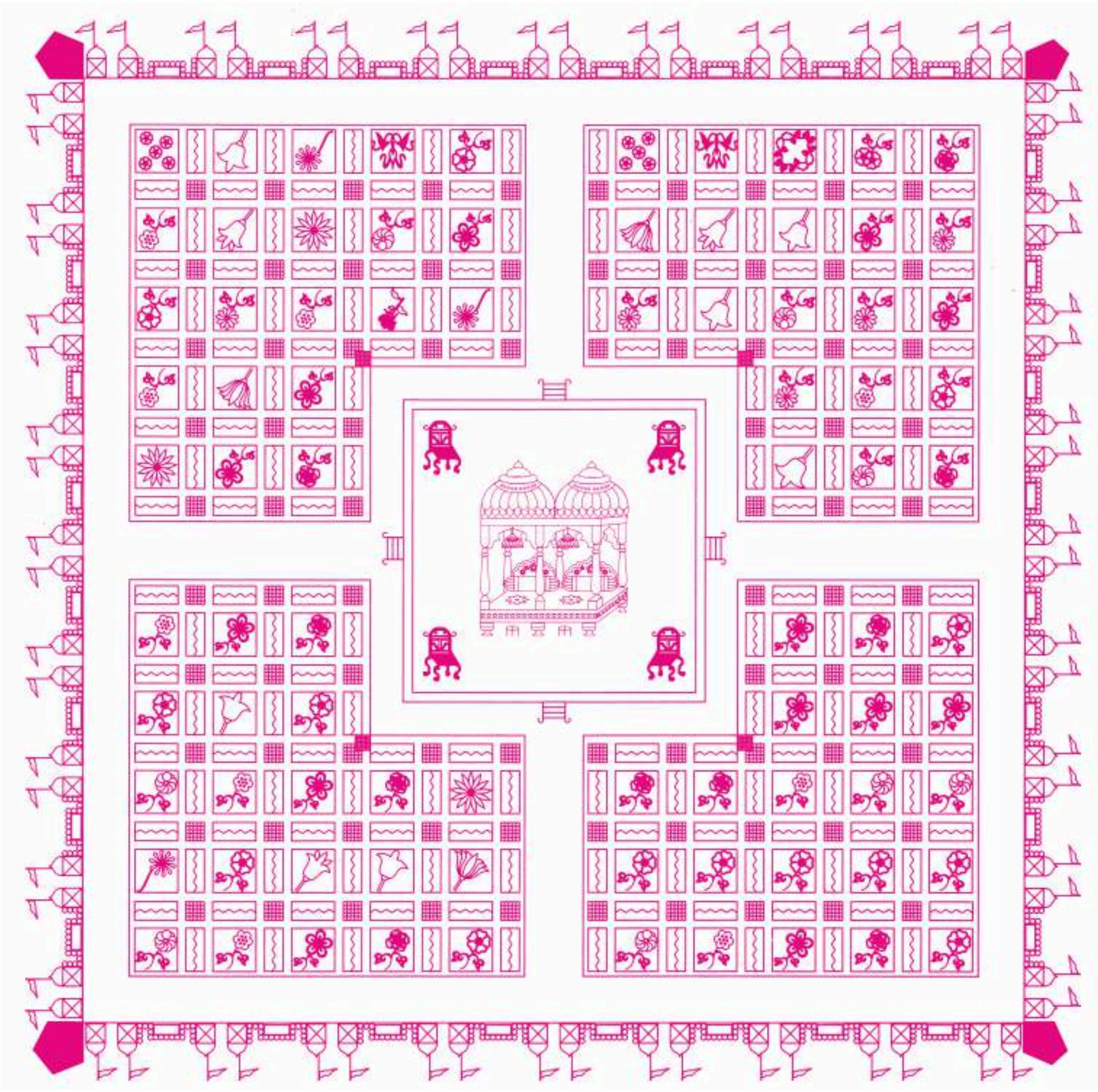

आकाशी महल की चाँदनी

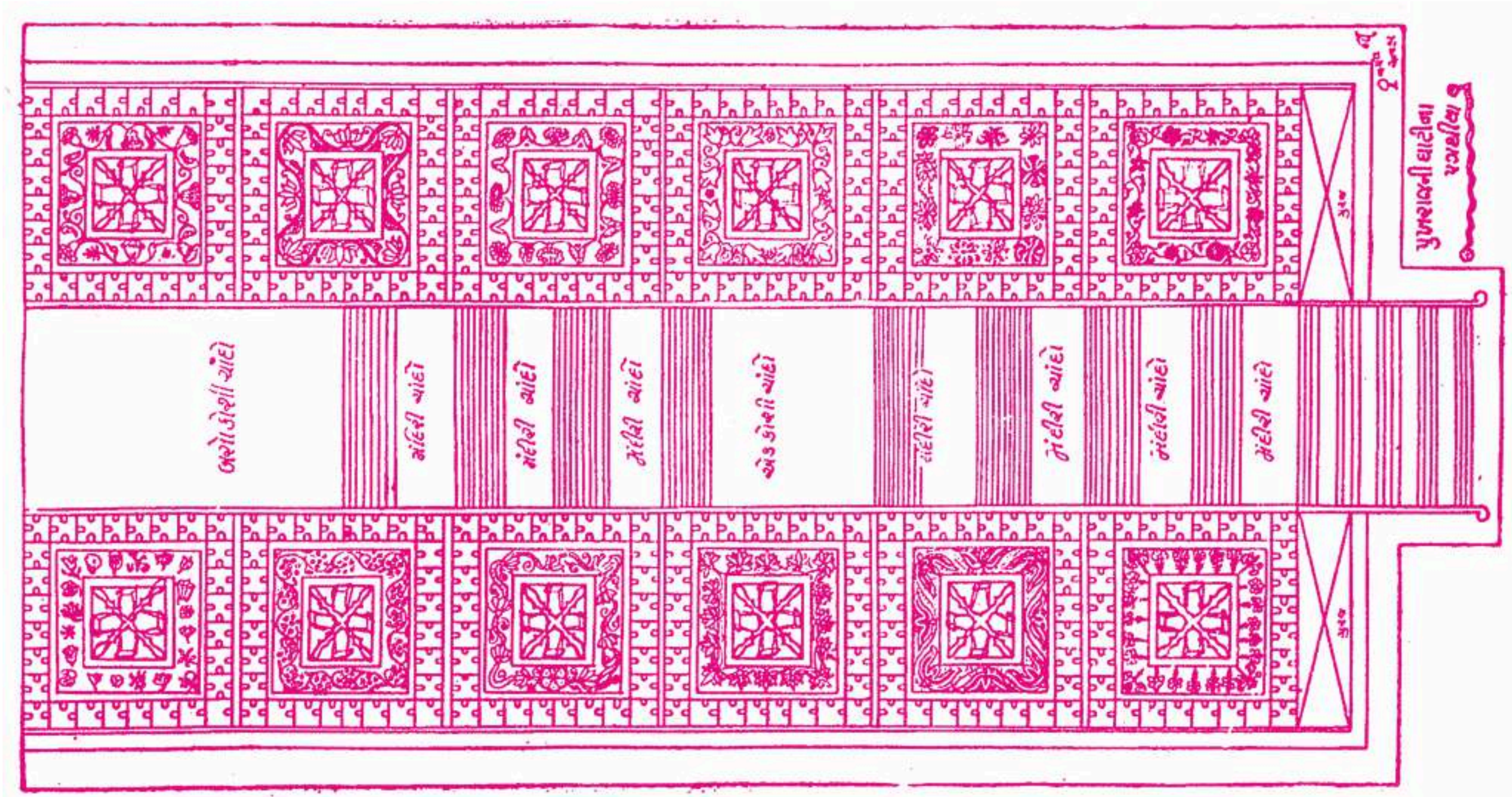

पश्चिम-उत्तर की घाटी

पुखराज पर्वत की सीढ़ियाँ तथा महलातें

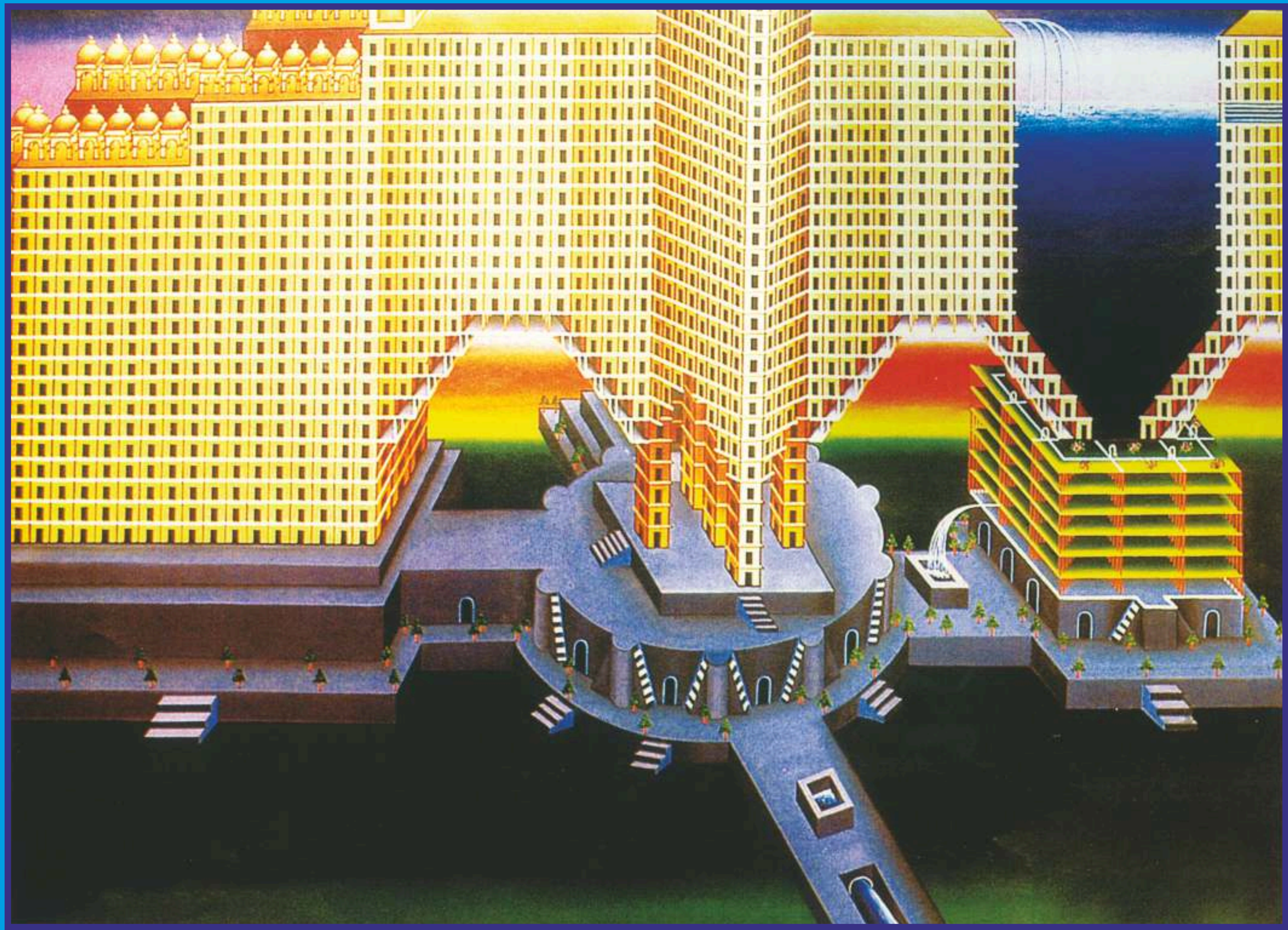

पुखराजी ताल

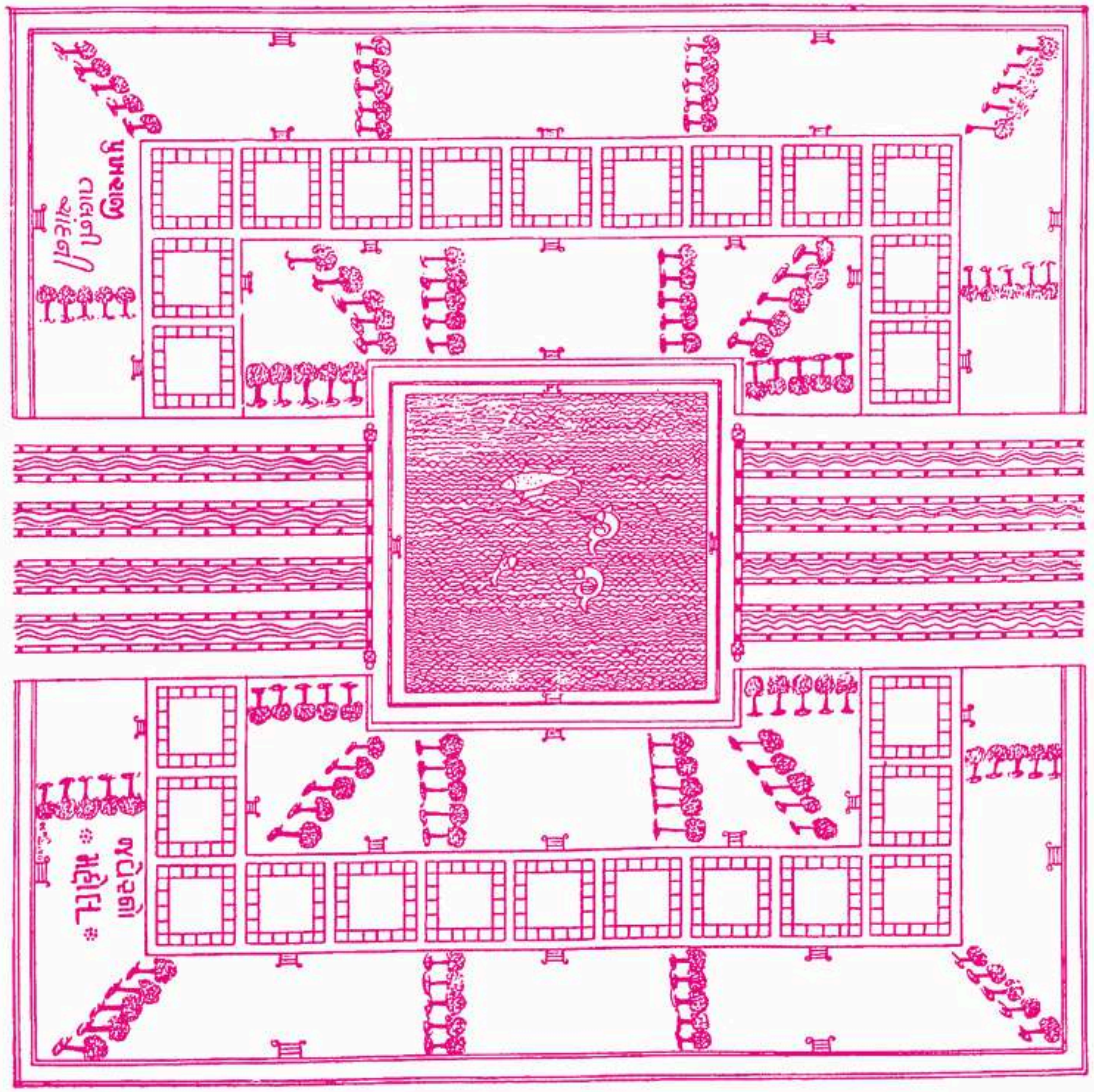

जवेर के महल

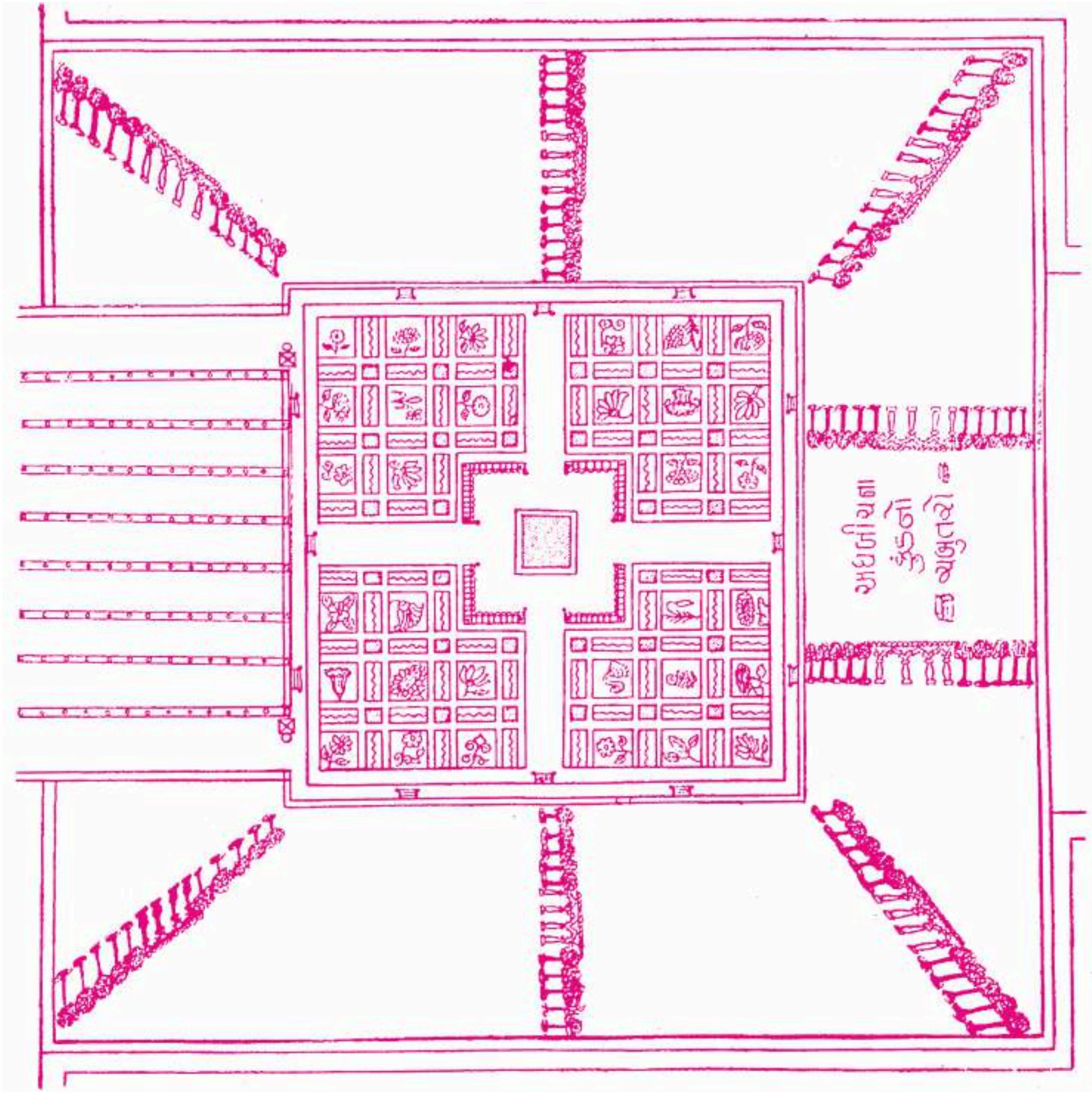

अधबीच का कुण्ड

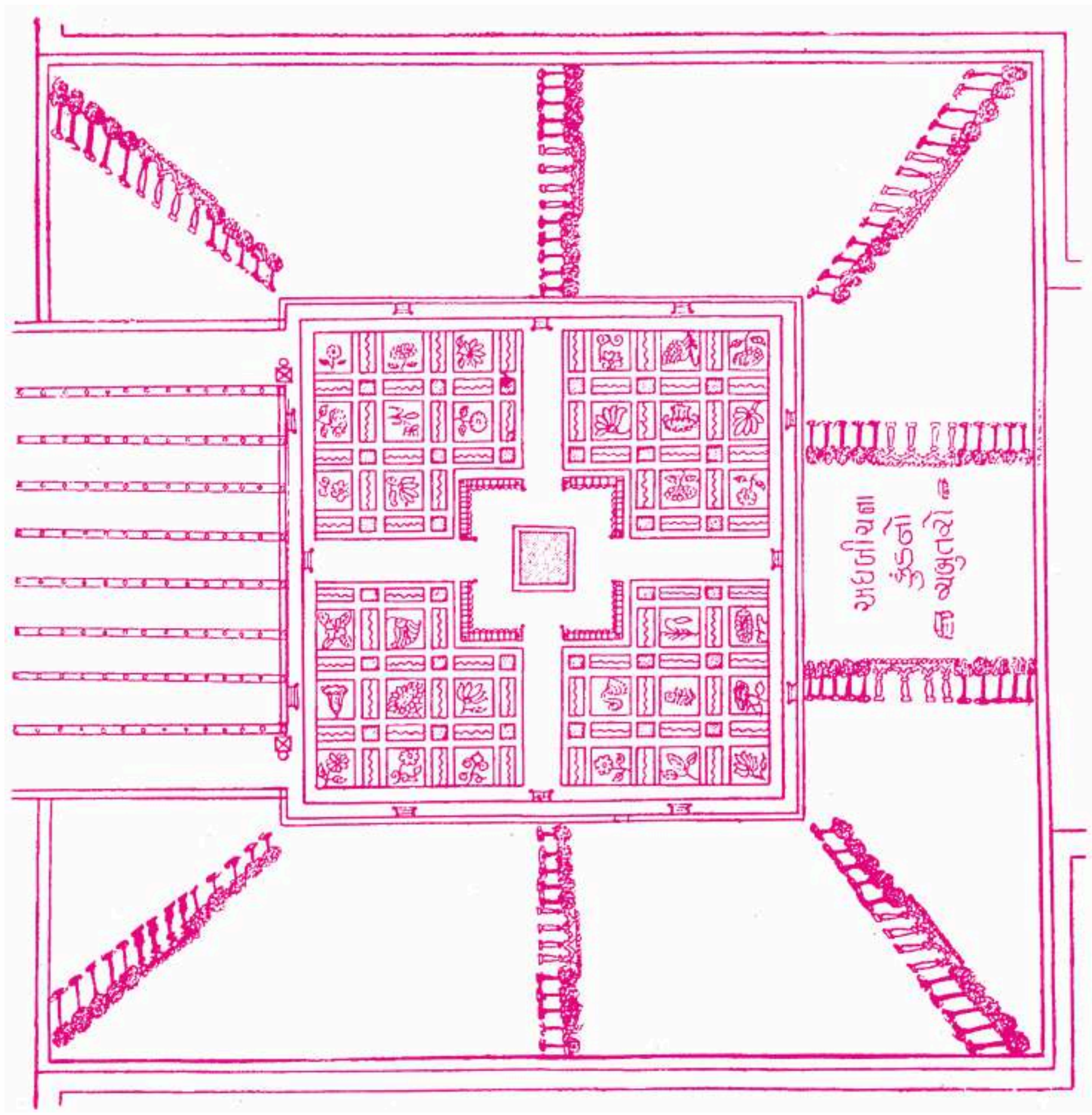

अधबीच के कुण्ड की छट्ठीं भोम

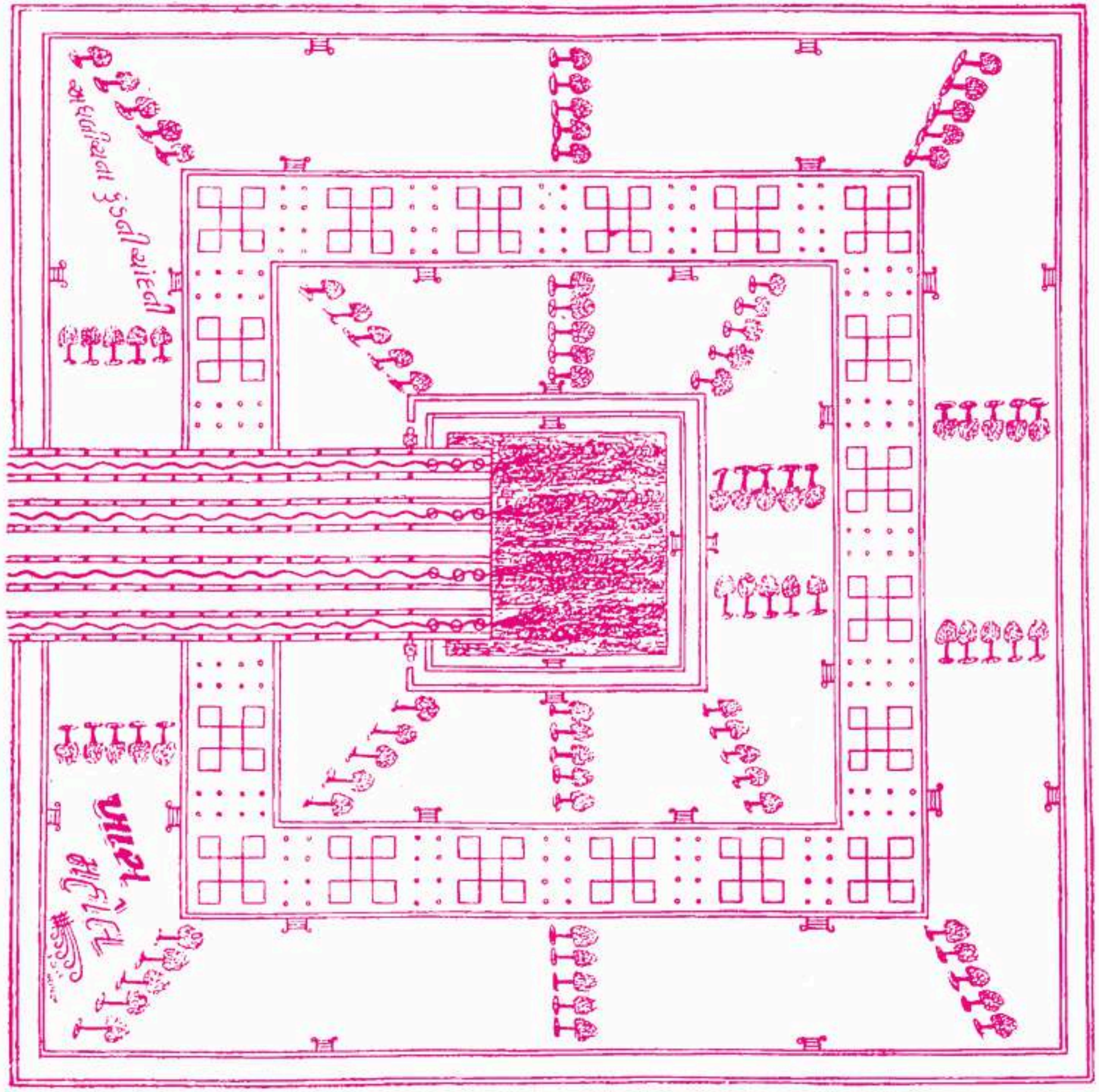

खास महल

अधबीच के कुण्ड की सोलह चादरें

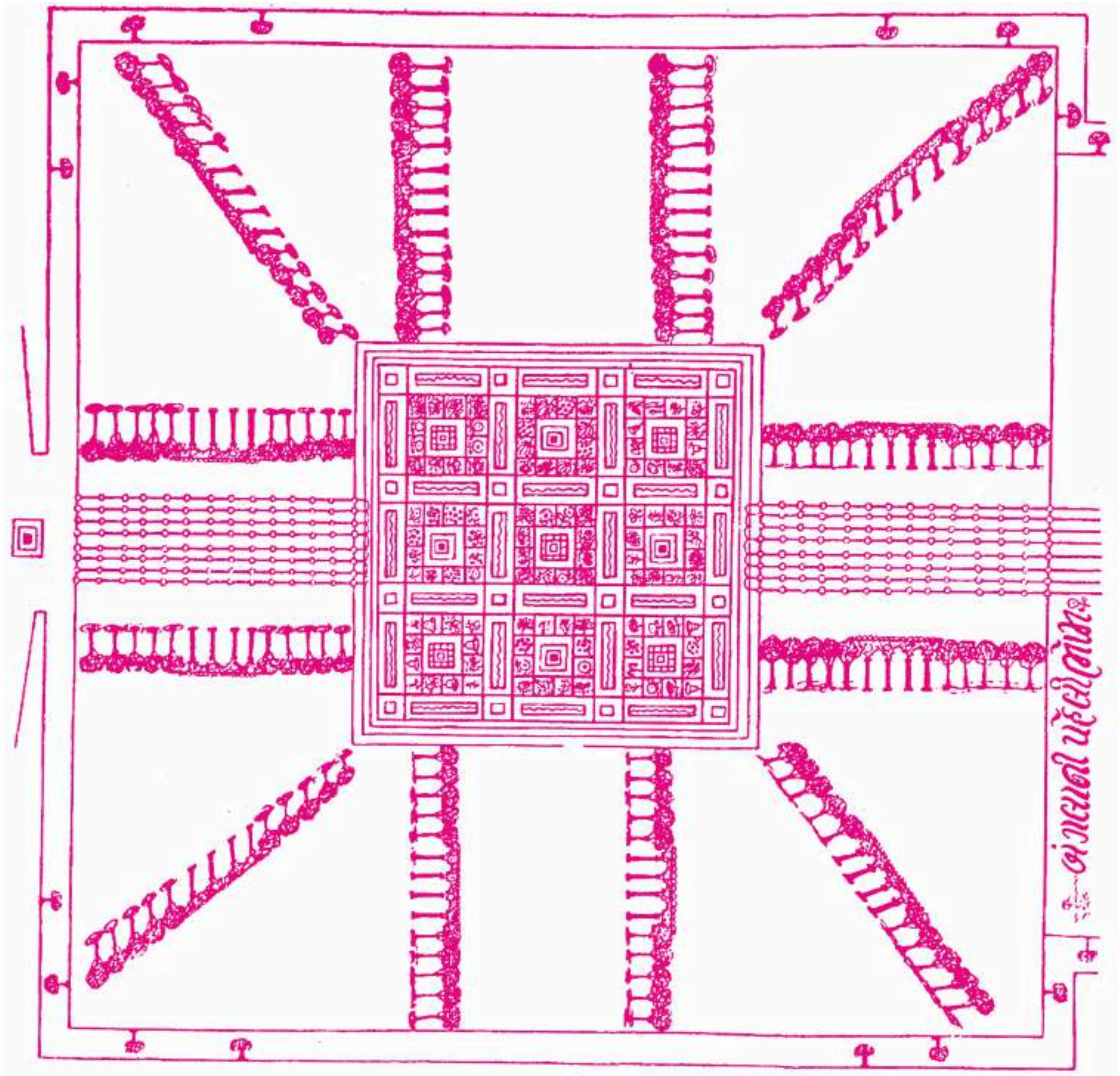

बंगला का चबूतरा

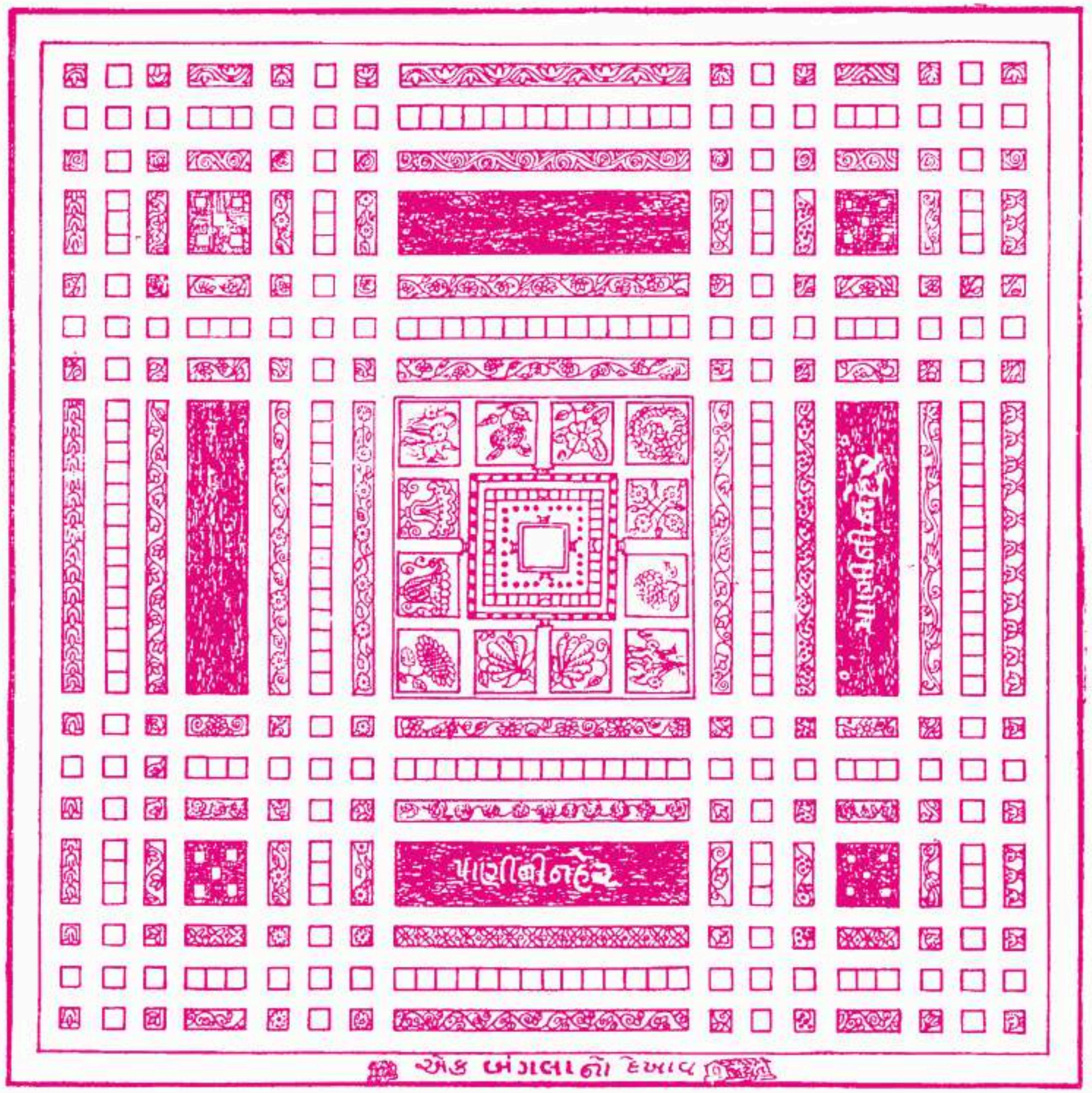

એક બંગલાનો દેખાવ

एक बंगले का दृश्य

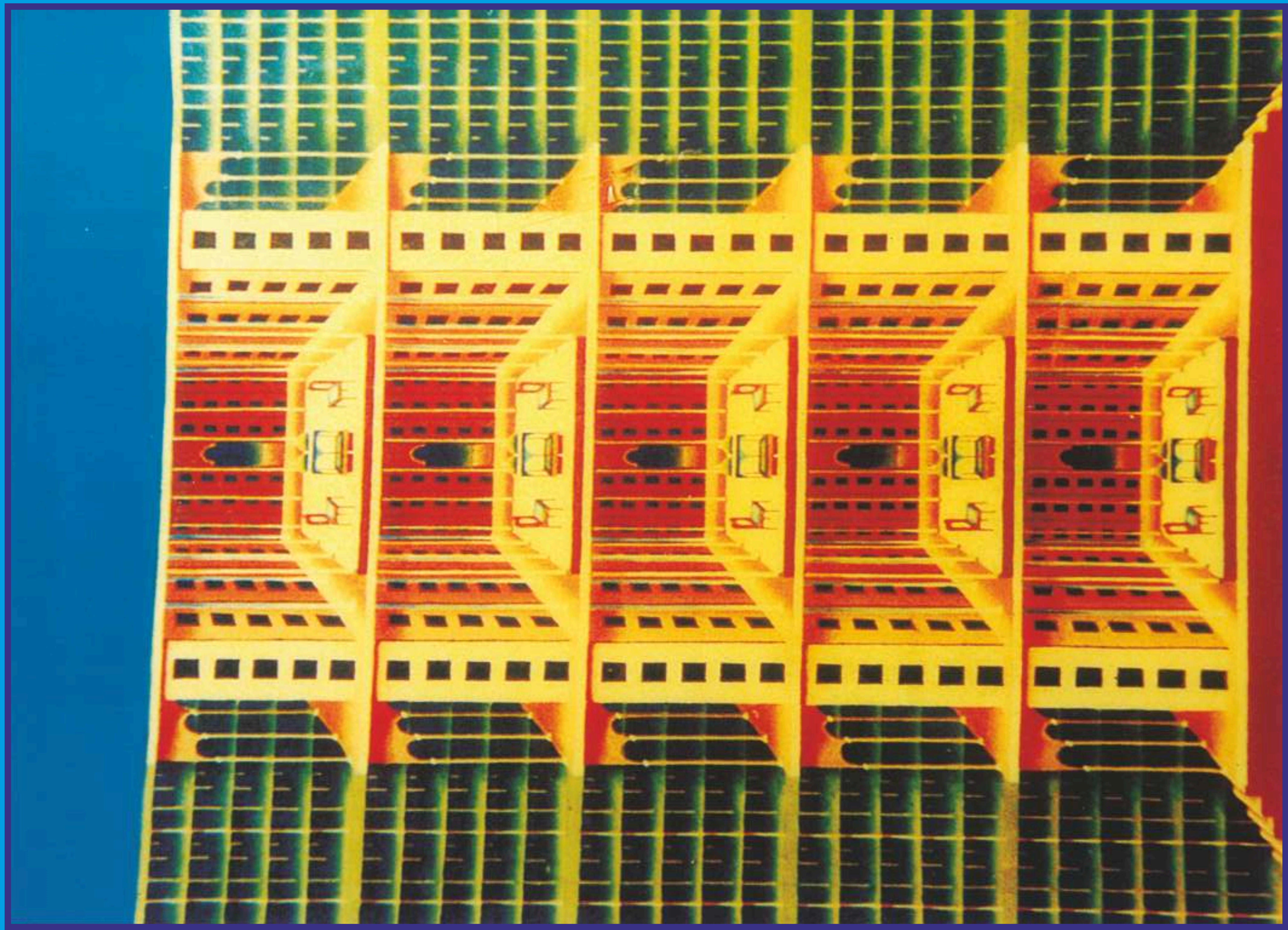

बंगला की एक भोम में मंदिरों की पाँच भोम

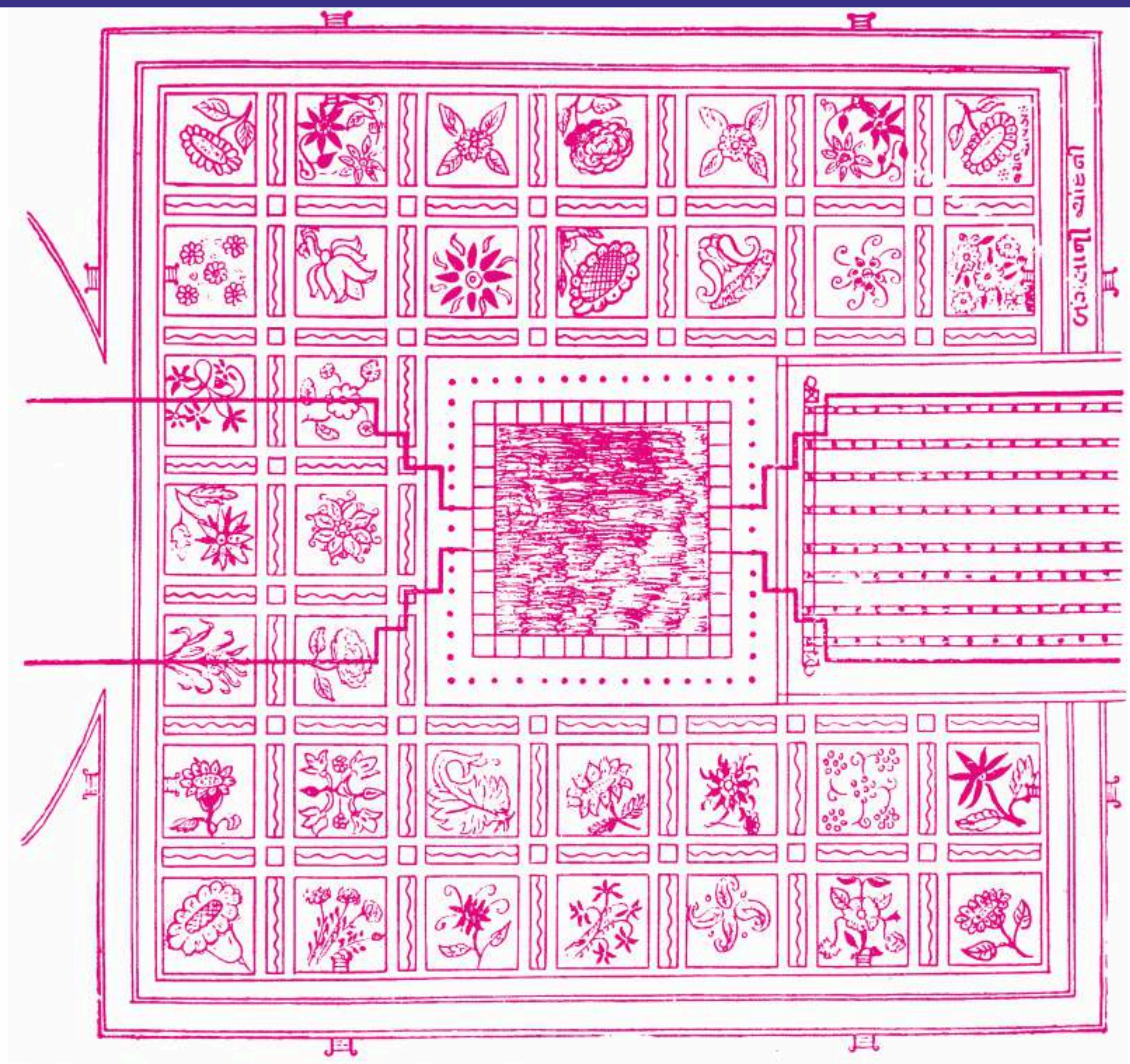

बंगले की चाँदनी

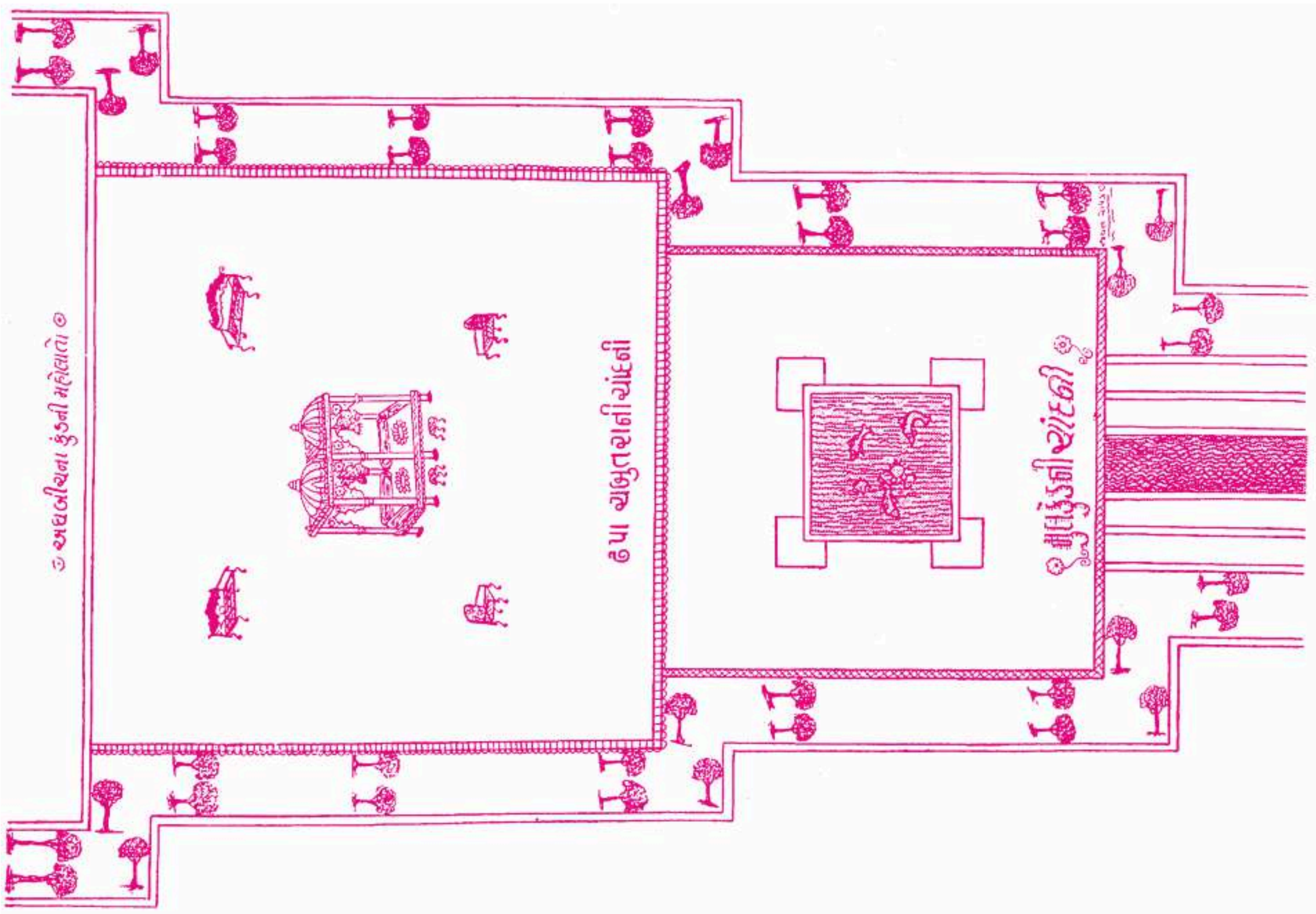

ढँपा चबूतरा और मूलकुण्ड

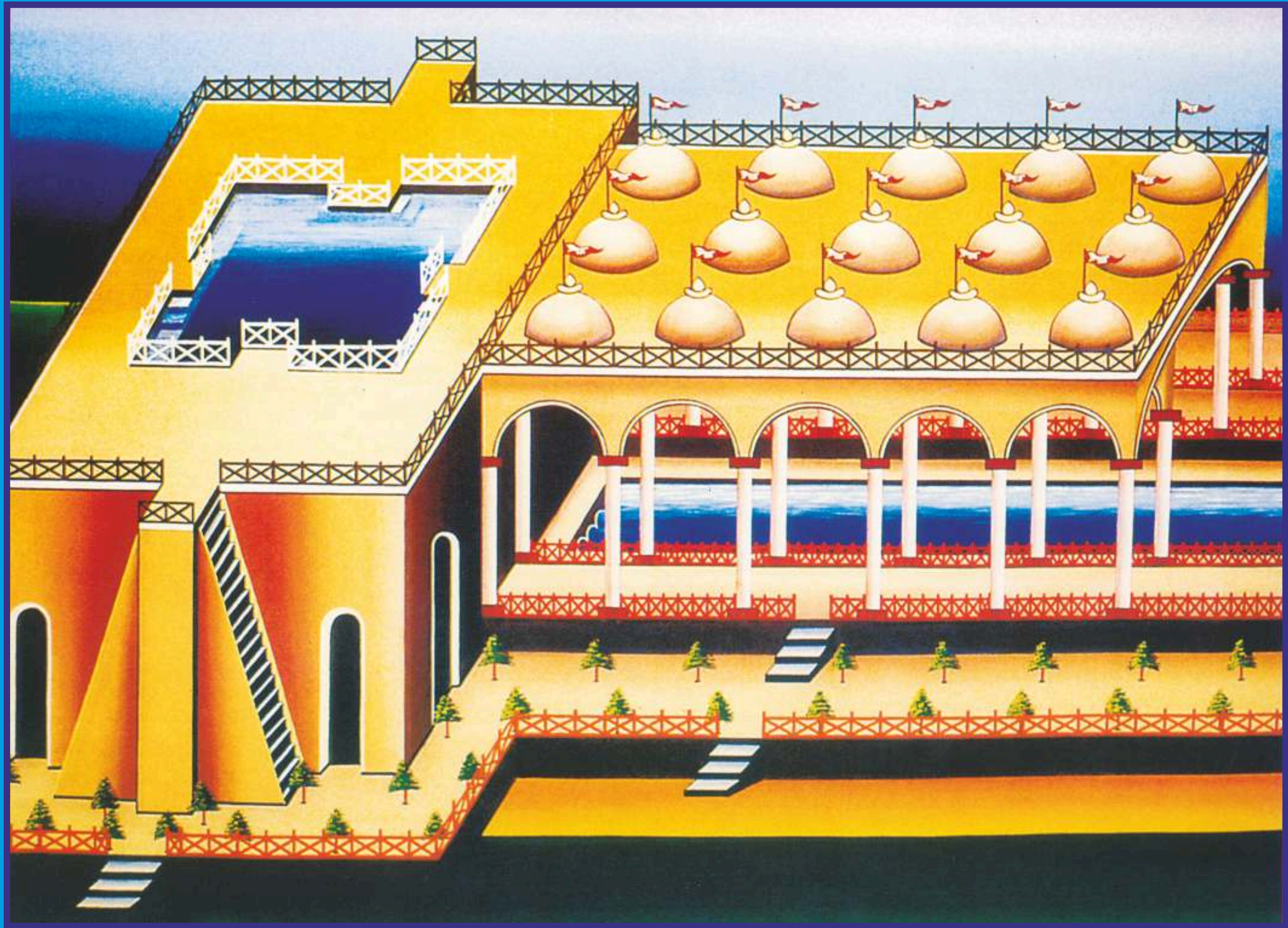

मूलकुण्ड तथा ढँपी यमुनाजी

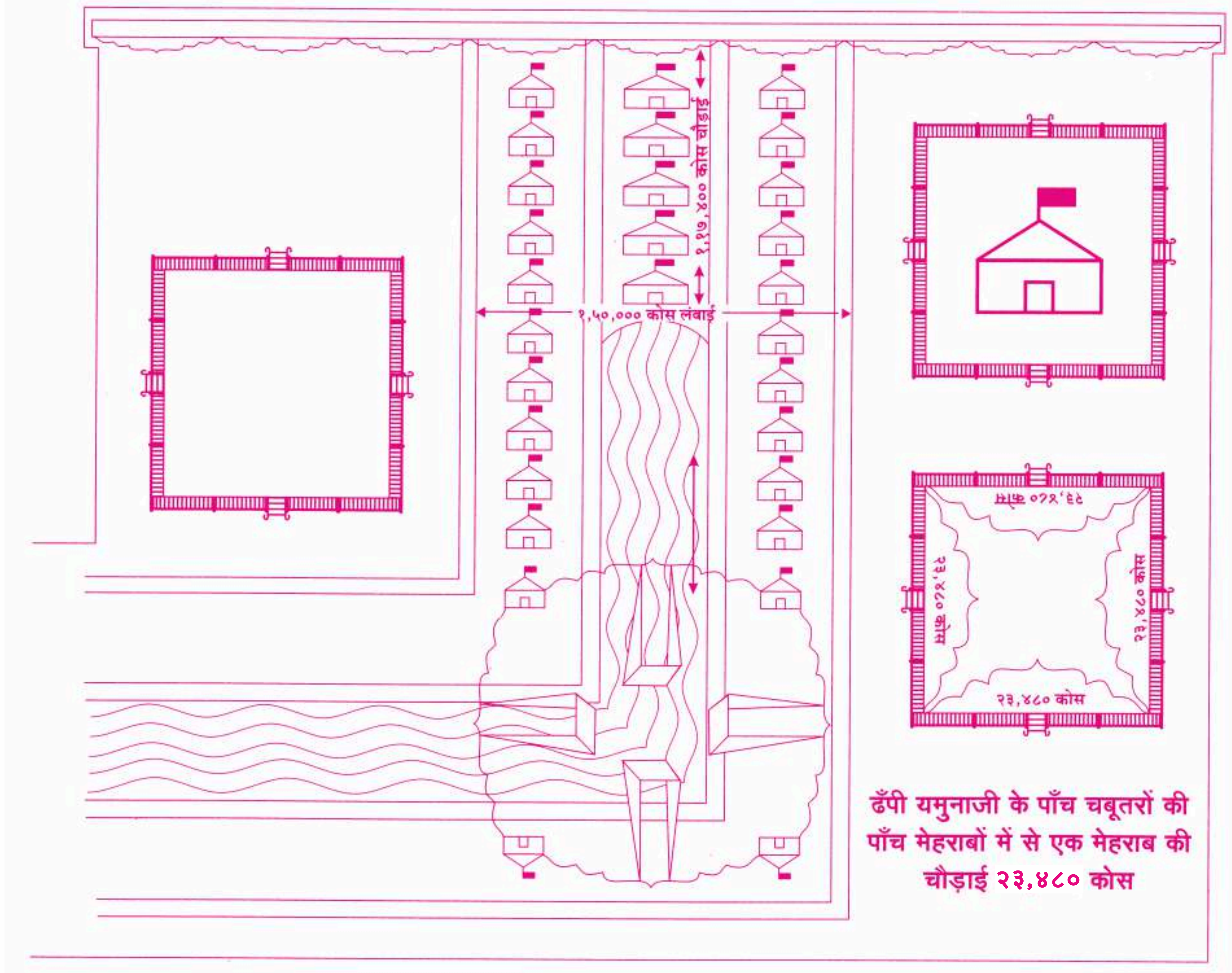

ढँपी यमुनाजी के पाँच चबूतरों की पाँच मेहराबों में से एक मेहराब की चौड़ाई २३,४८० कोस

ढँपी - खुली यमुनाजी

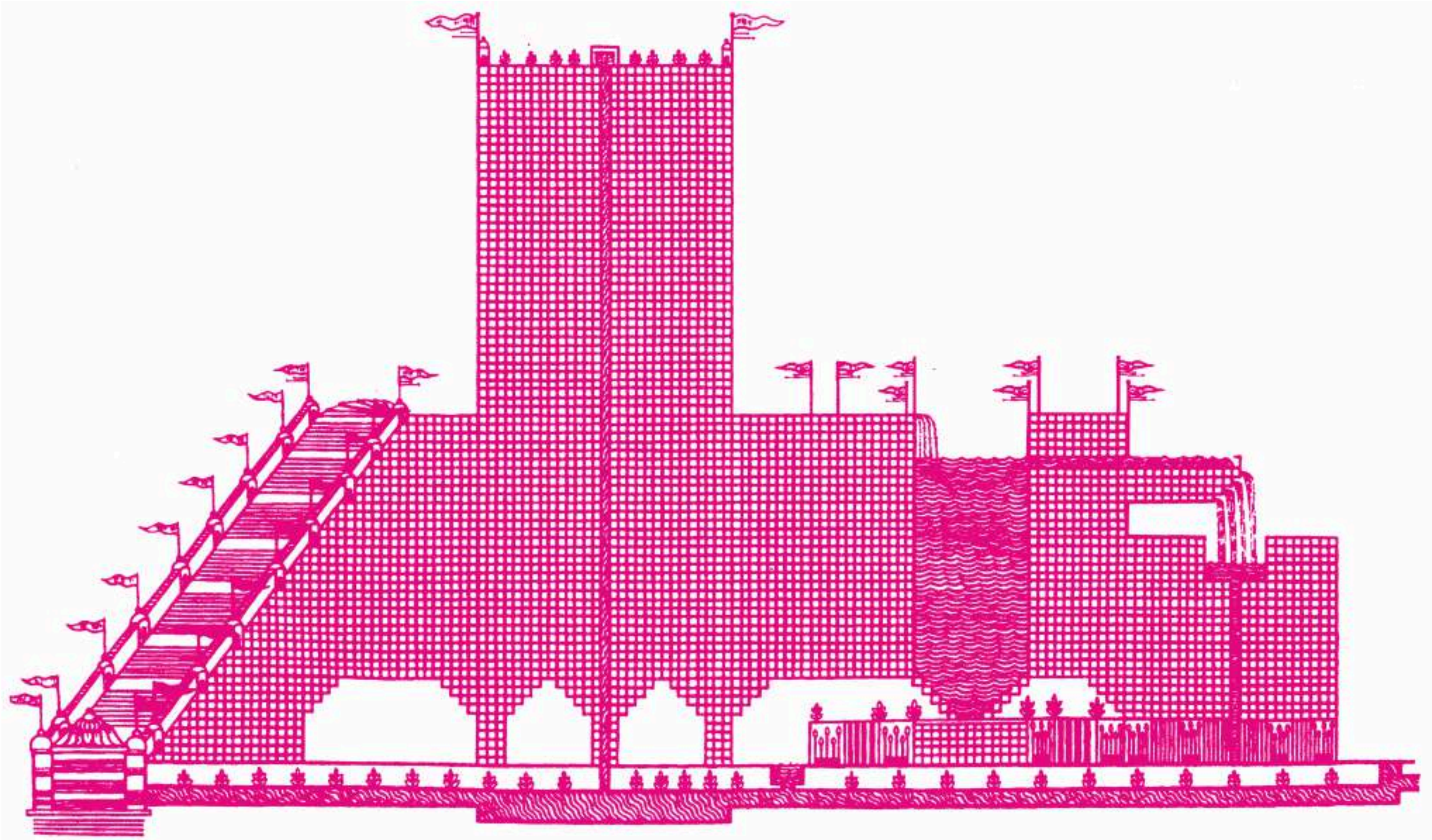

पुखराज पर्वत का खड़ा दृश्य

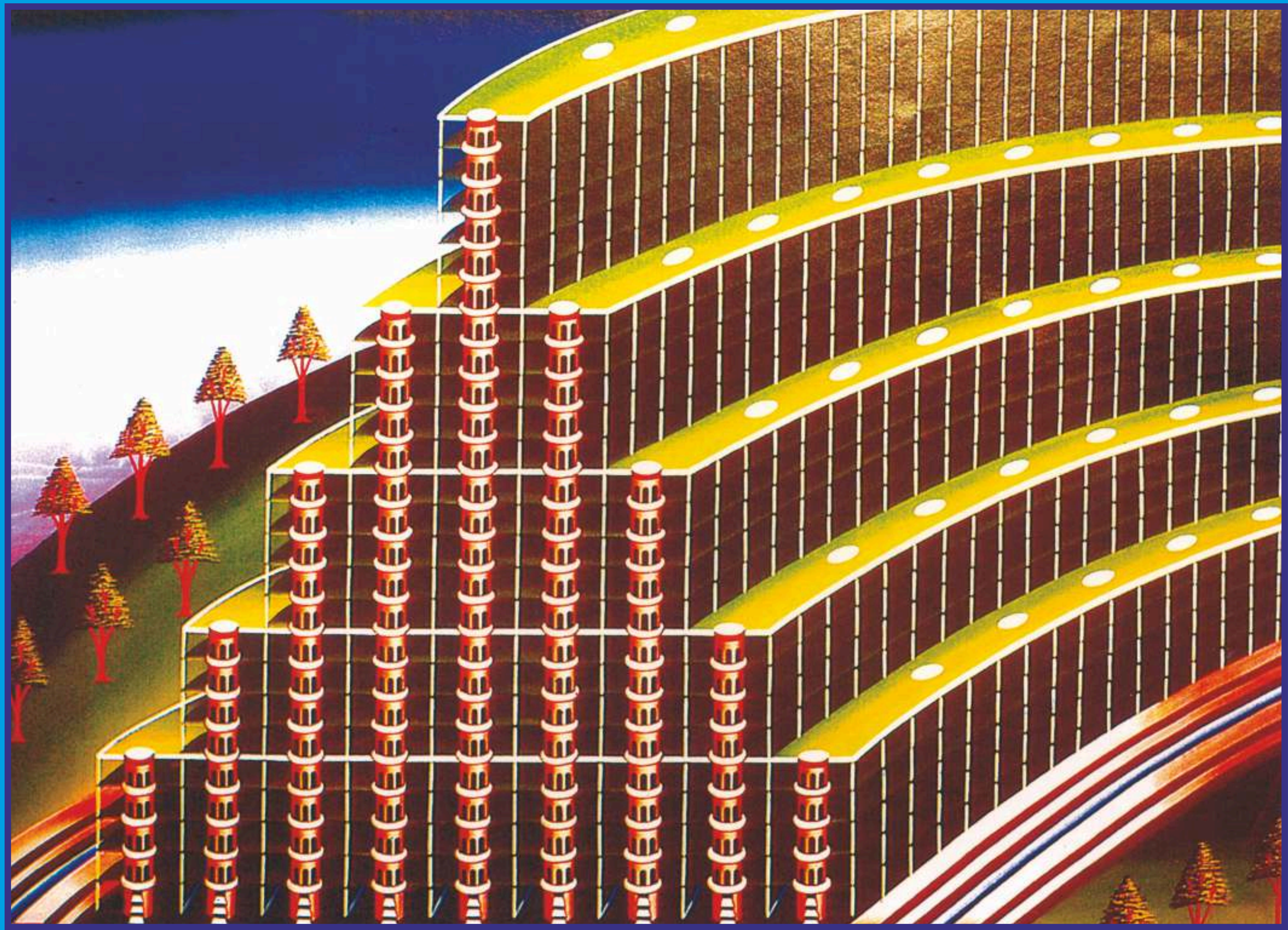

जवेरों की नहर

चार पहल का महल

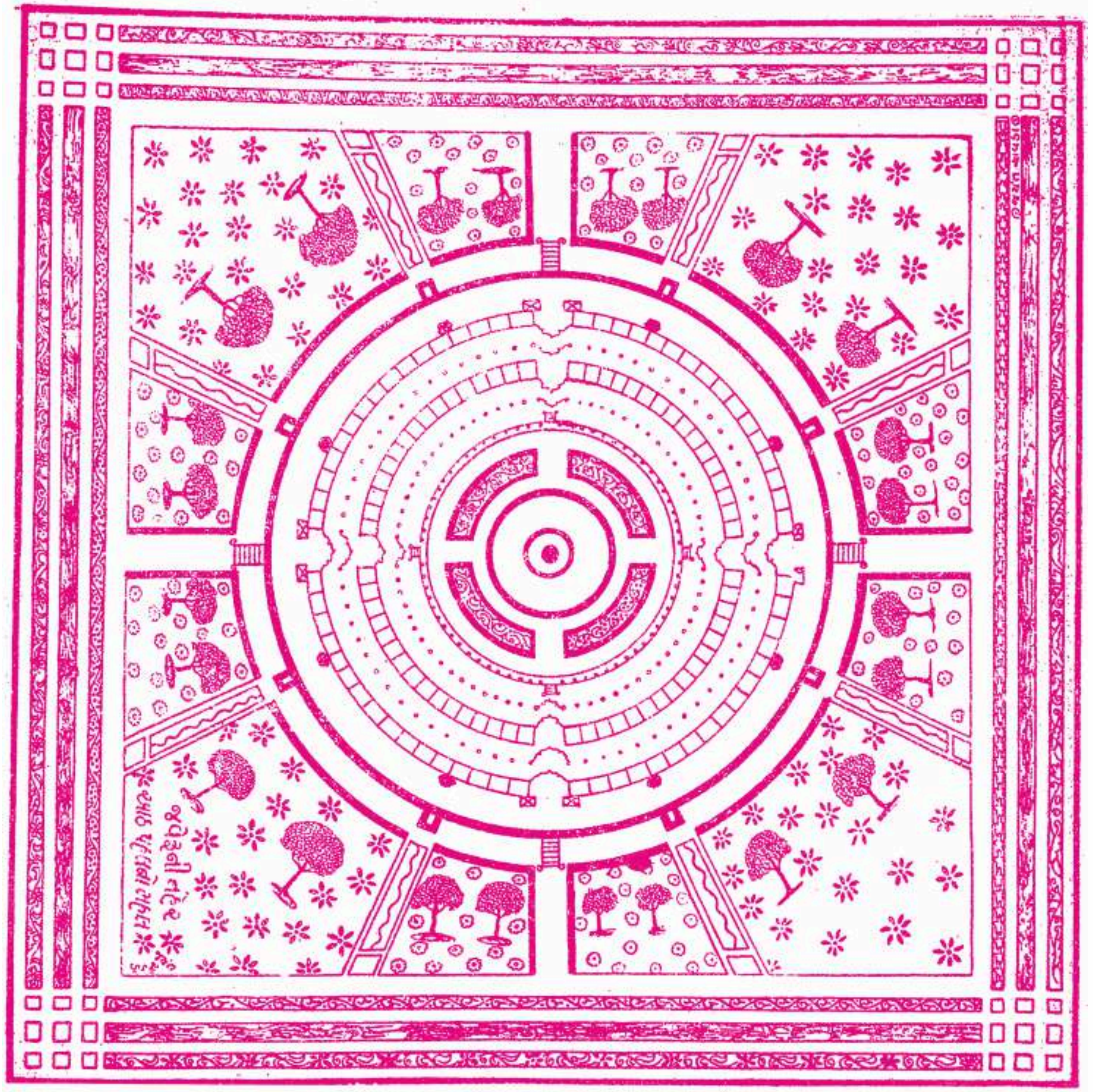

आठ पहल का महल

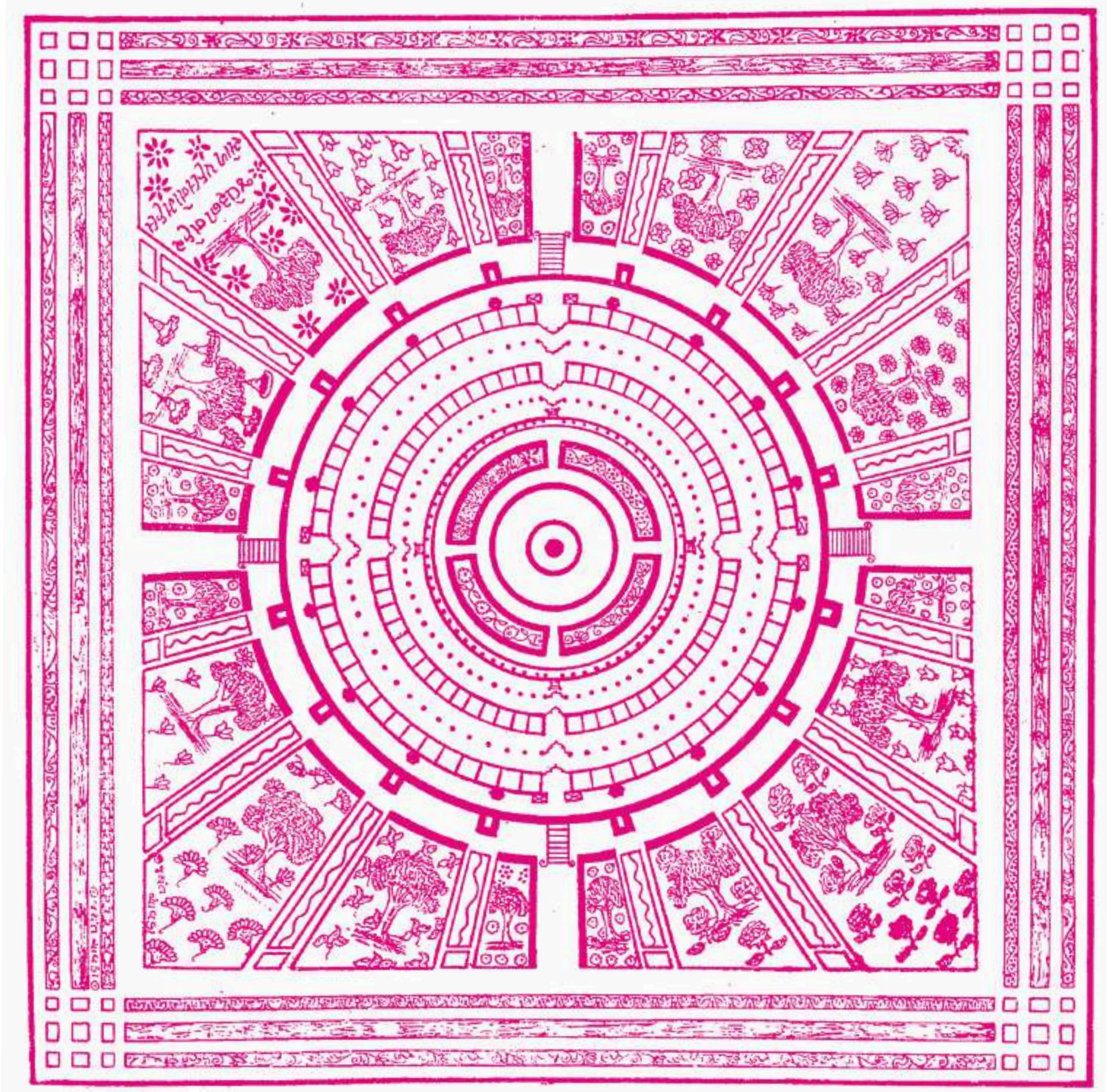

सोलह पहल का महल

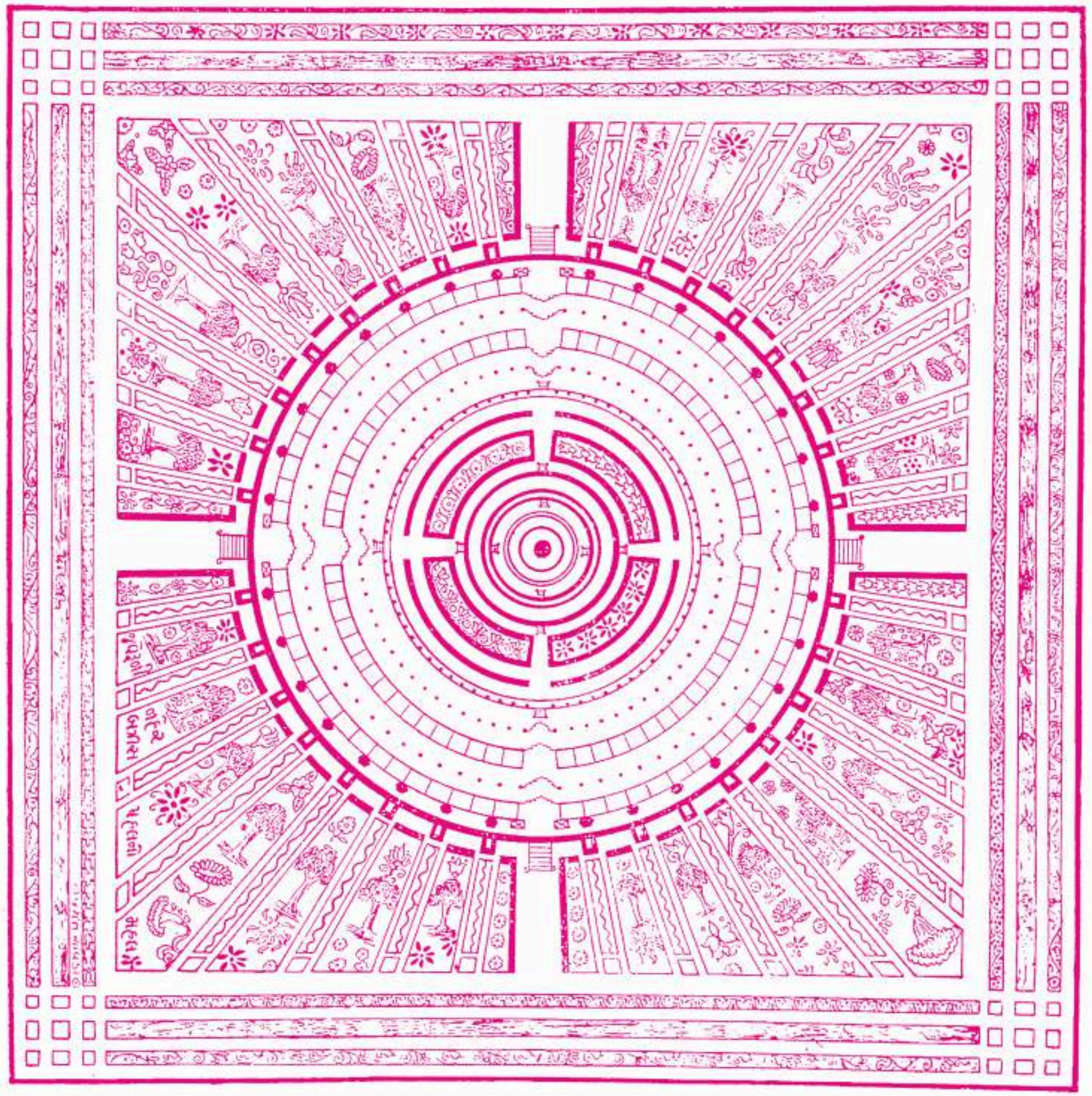

बत्तीस पहल का महल

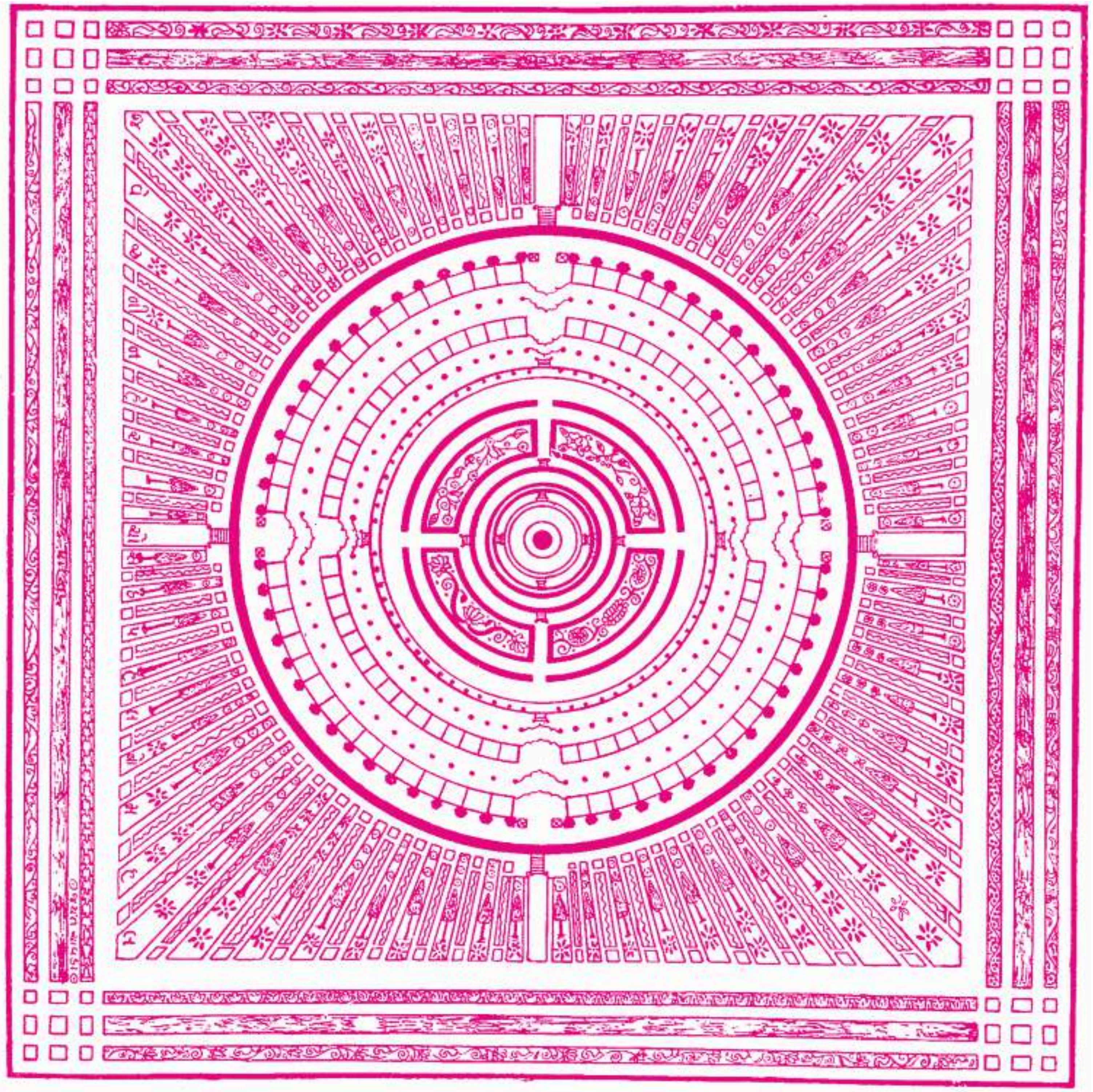

चौंसठ पहल का महल

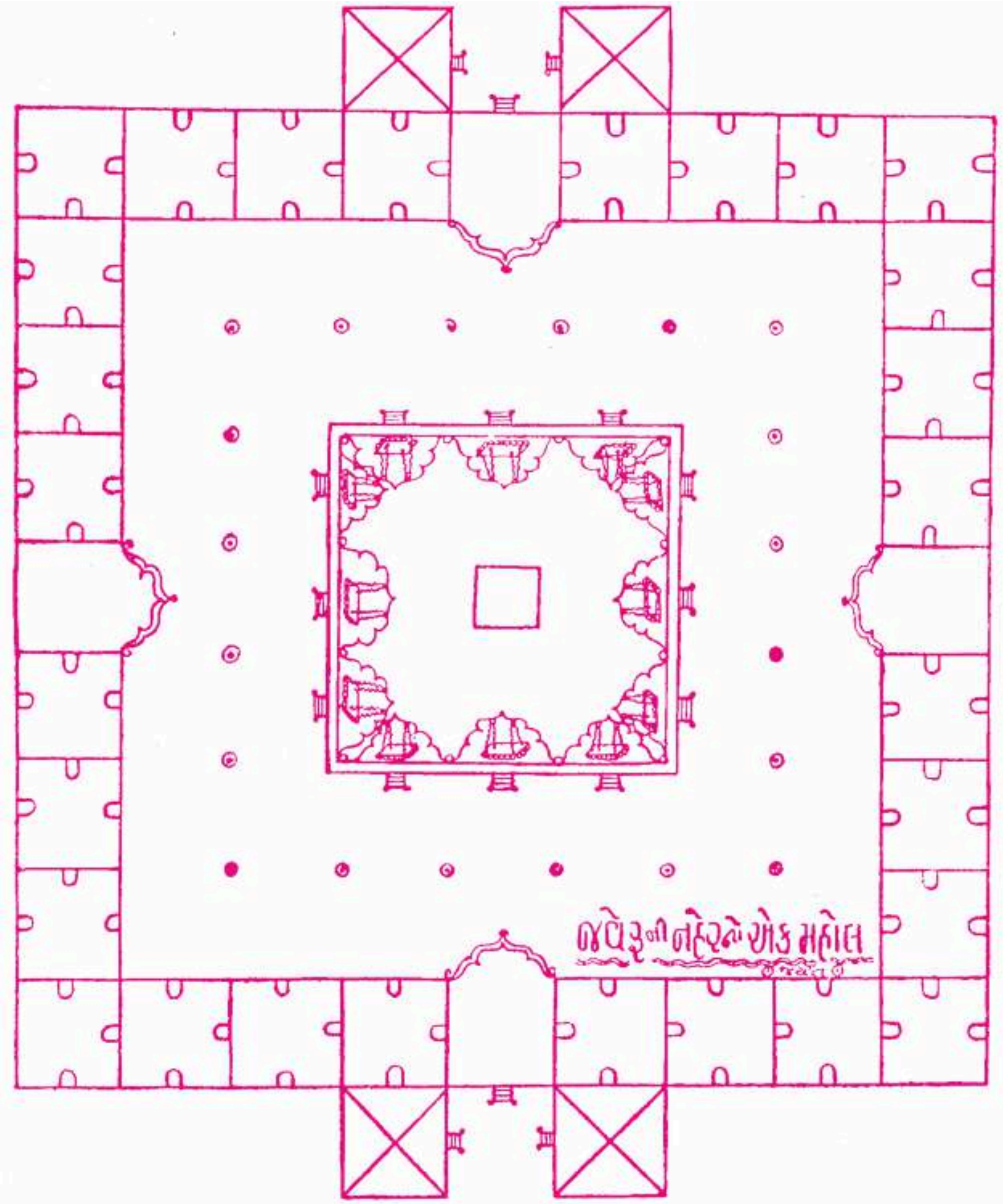

जवेरों की नहर का एक महल

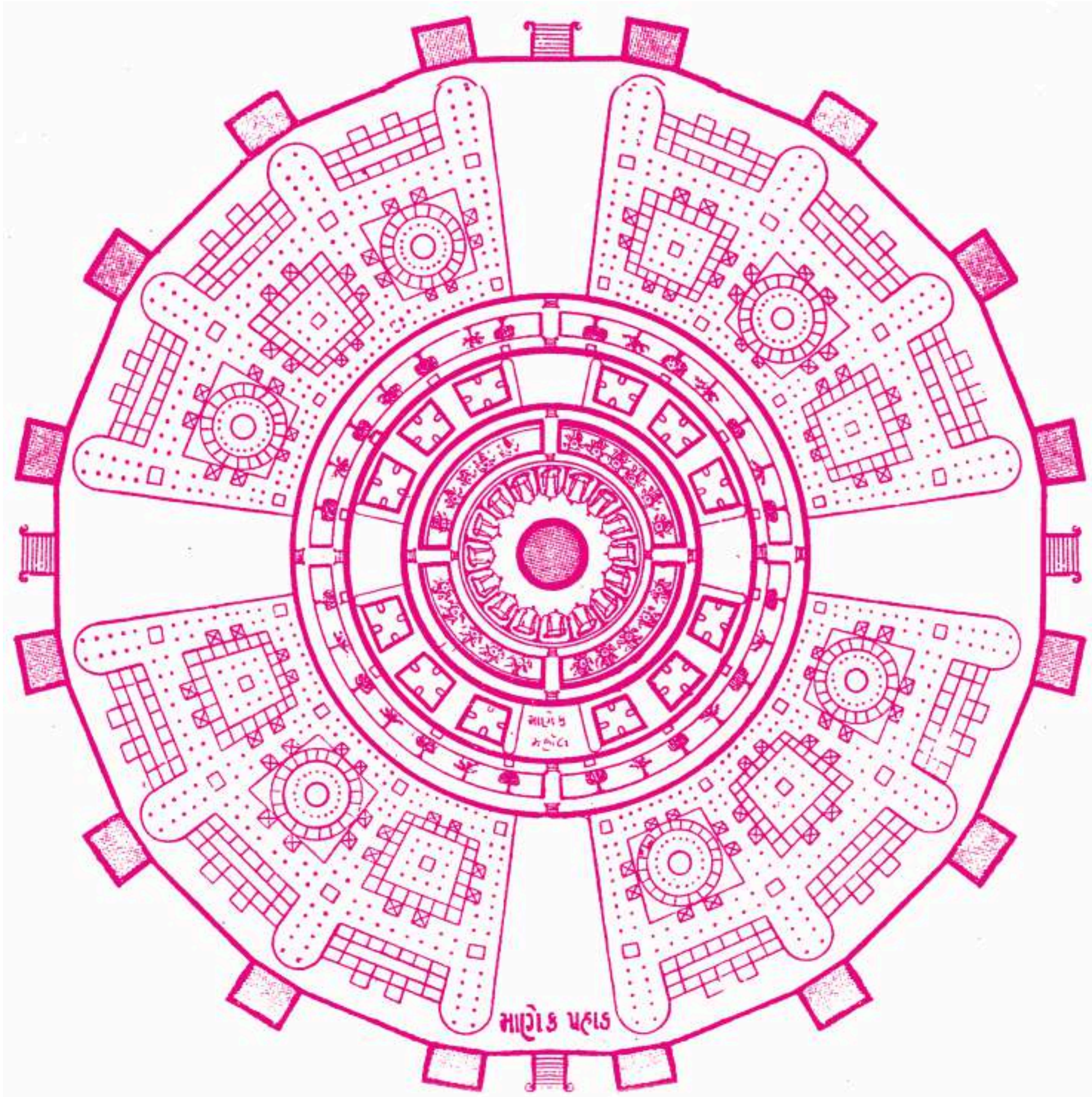

माणिक पहाड़

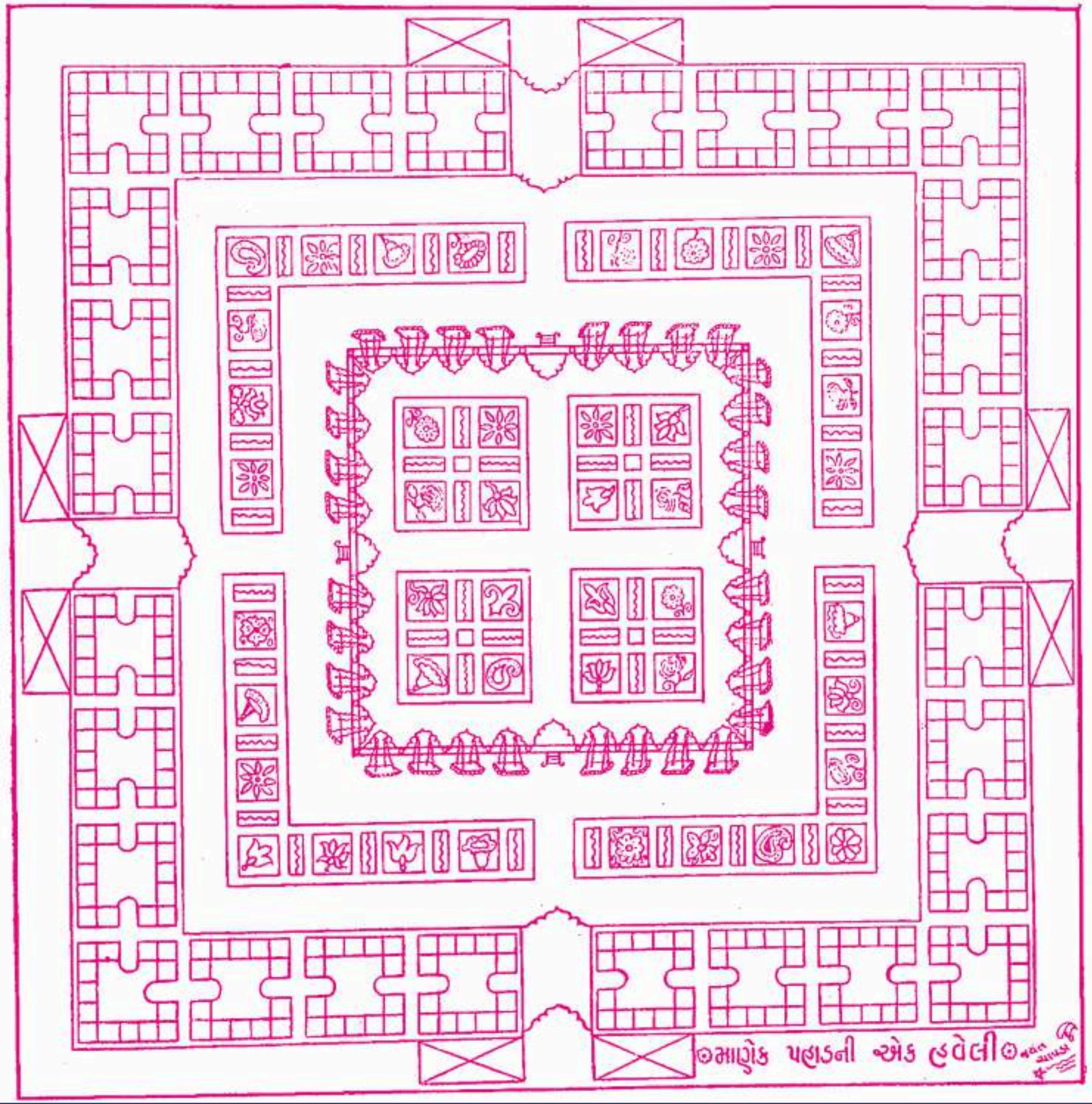

माणिक पहाड़ की एक हवेली

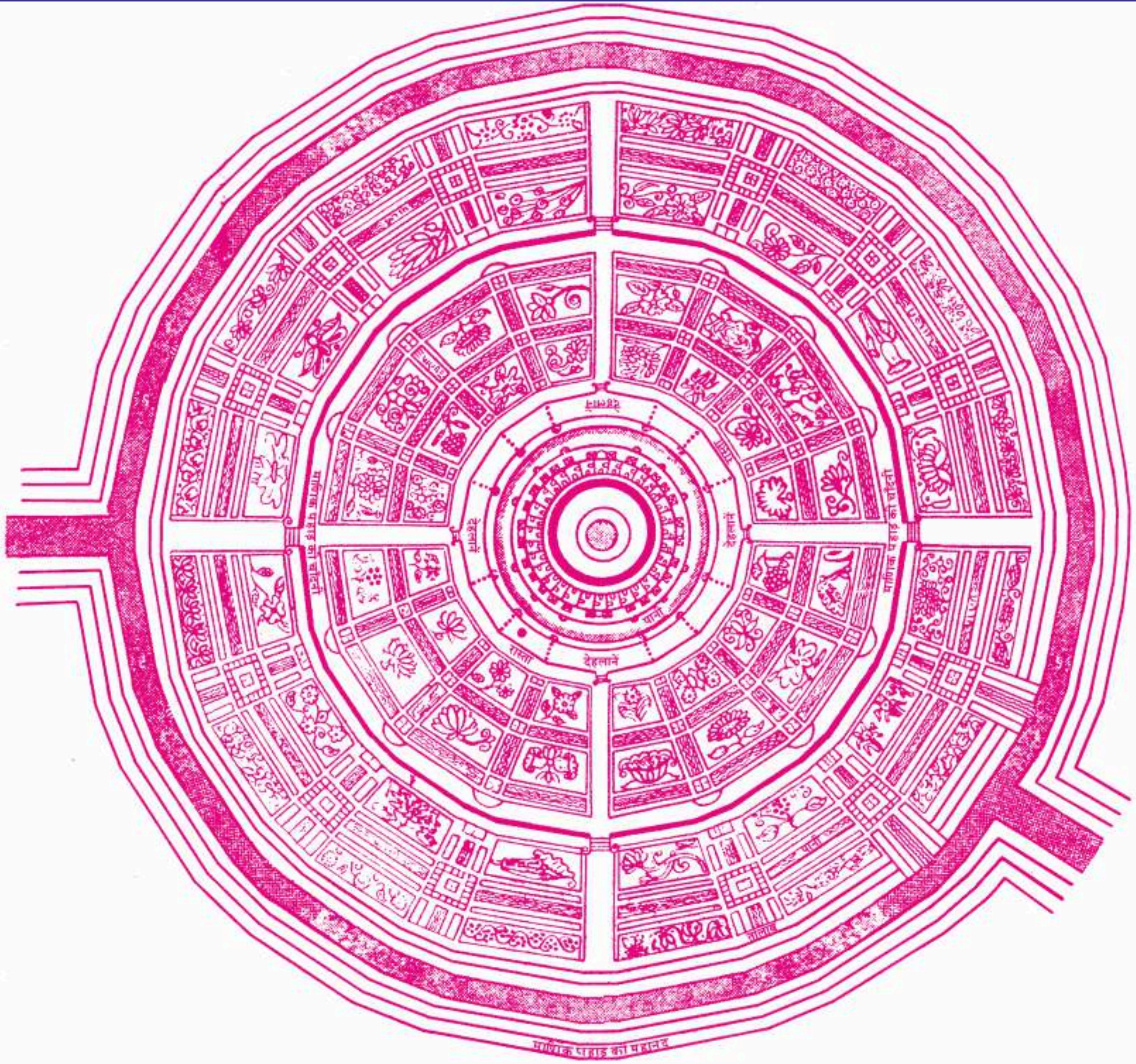

माणिक पहाड़ की तथा टापू महल चाँदनी

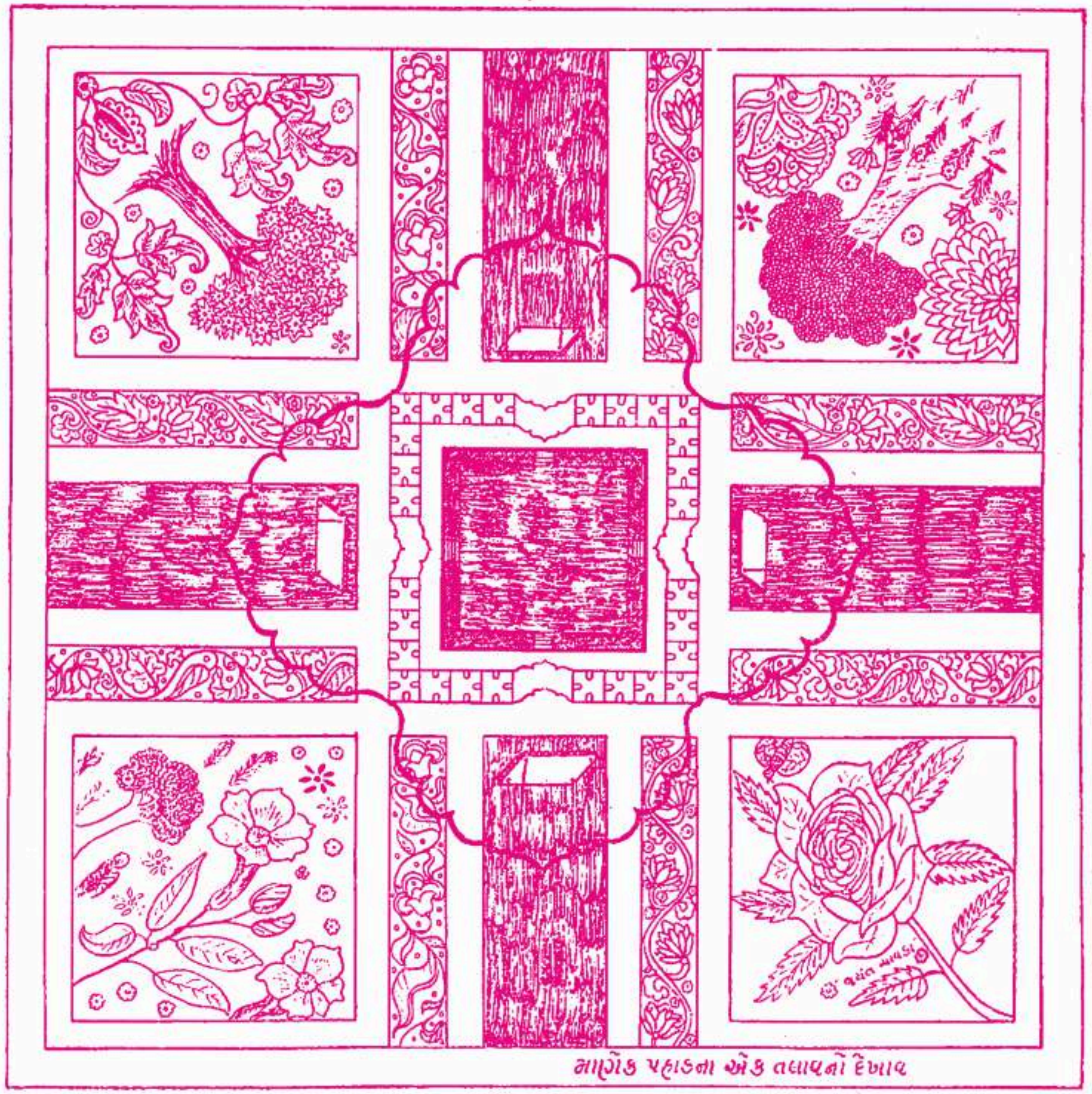

માણેક પહાડના એક તલાવનો દેખાવ

माणिक पहाड़ के चाँदनी का तालाब

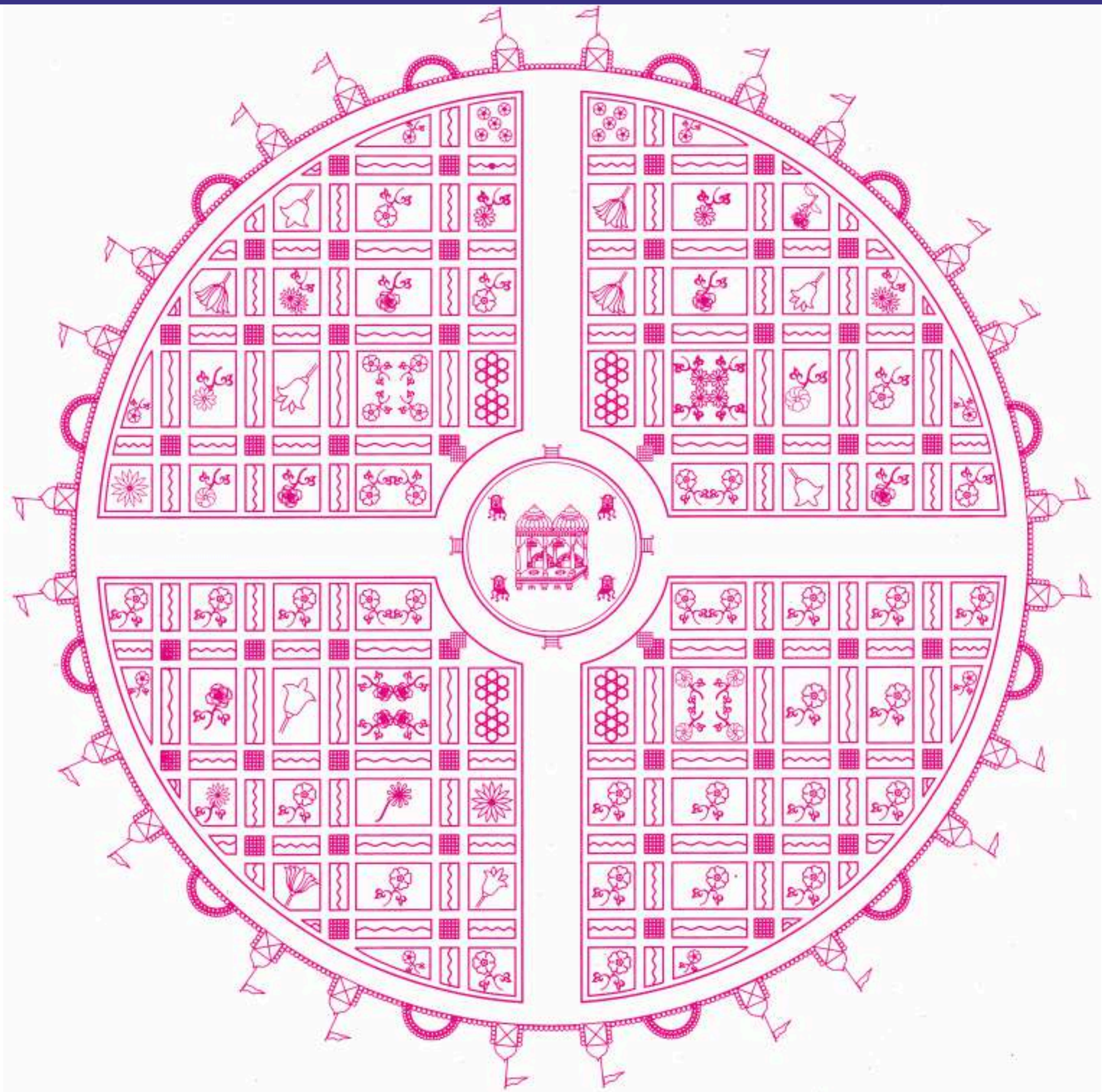

माणिक पहाड़ के टापू महल की चाँदनी

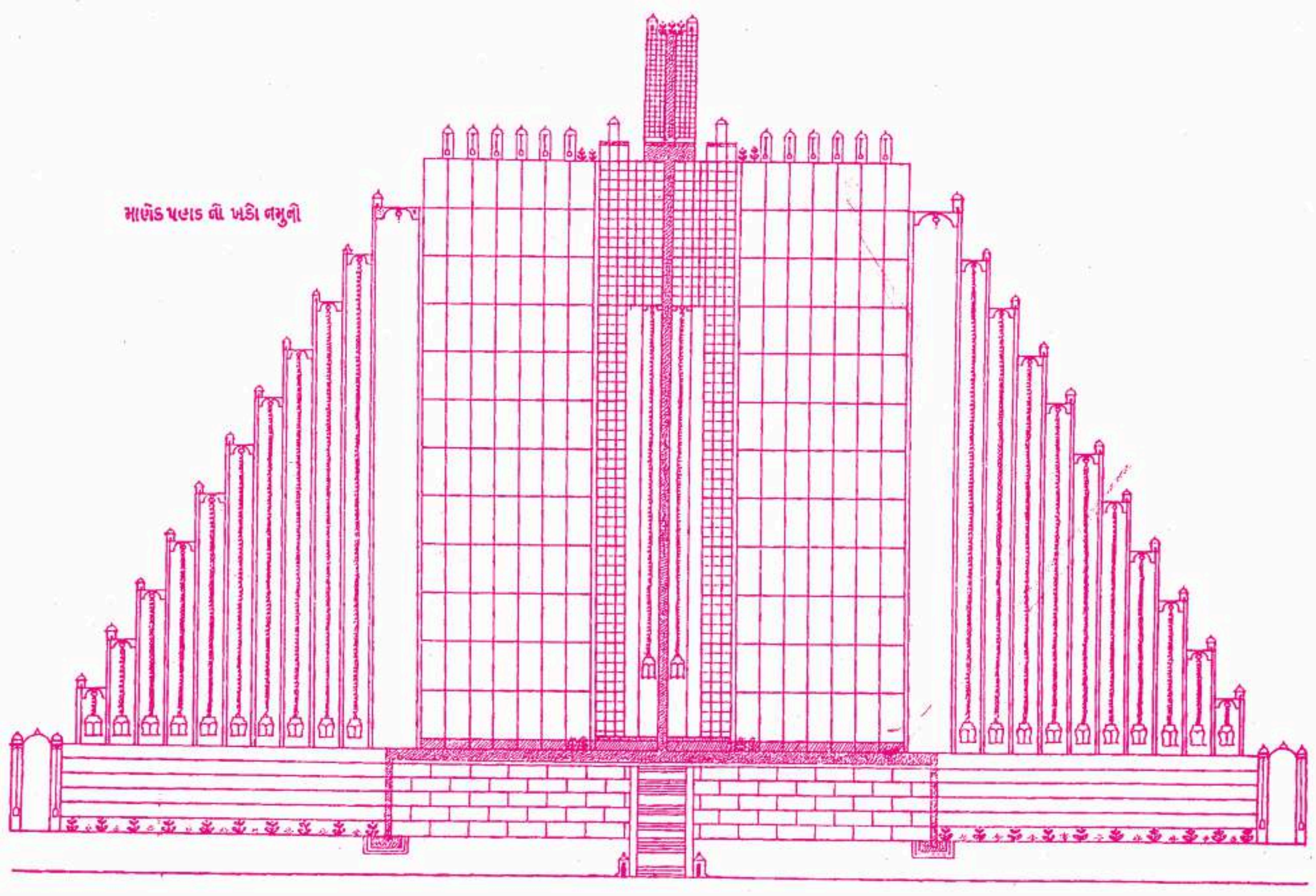

माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य नं. १

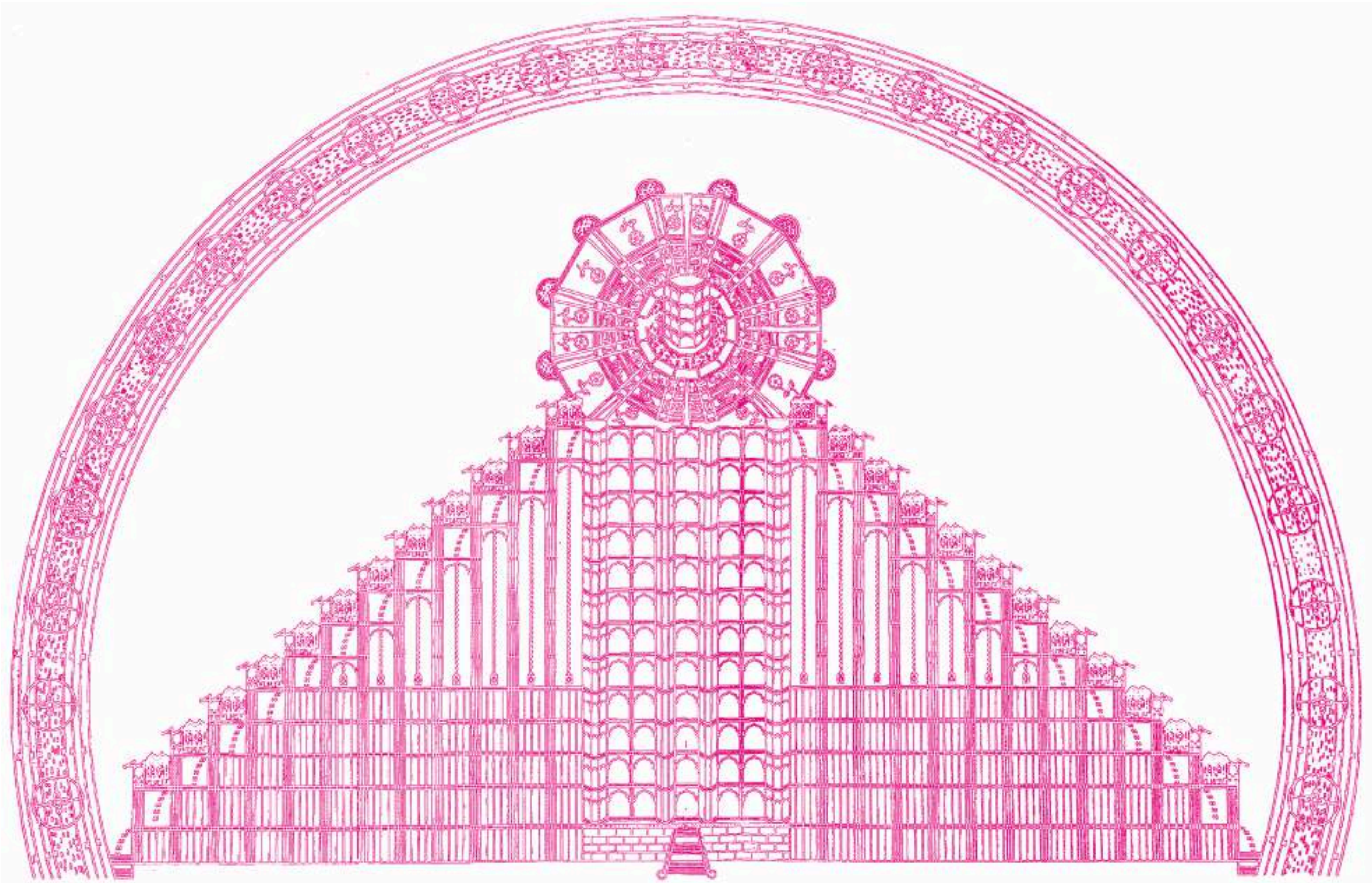

माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य नं. २

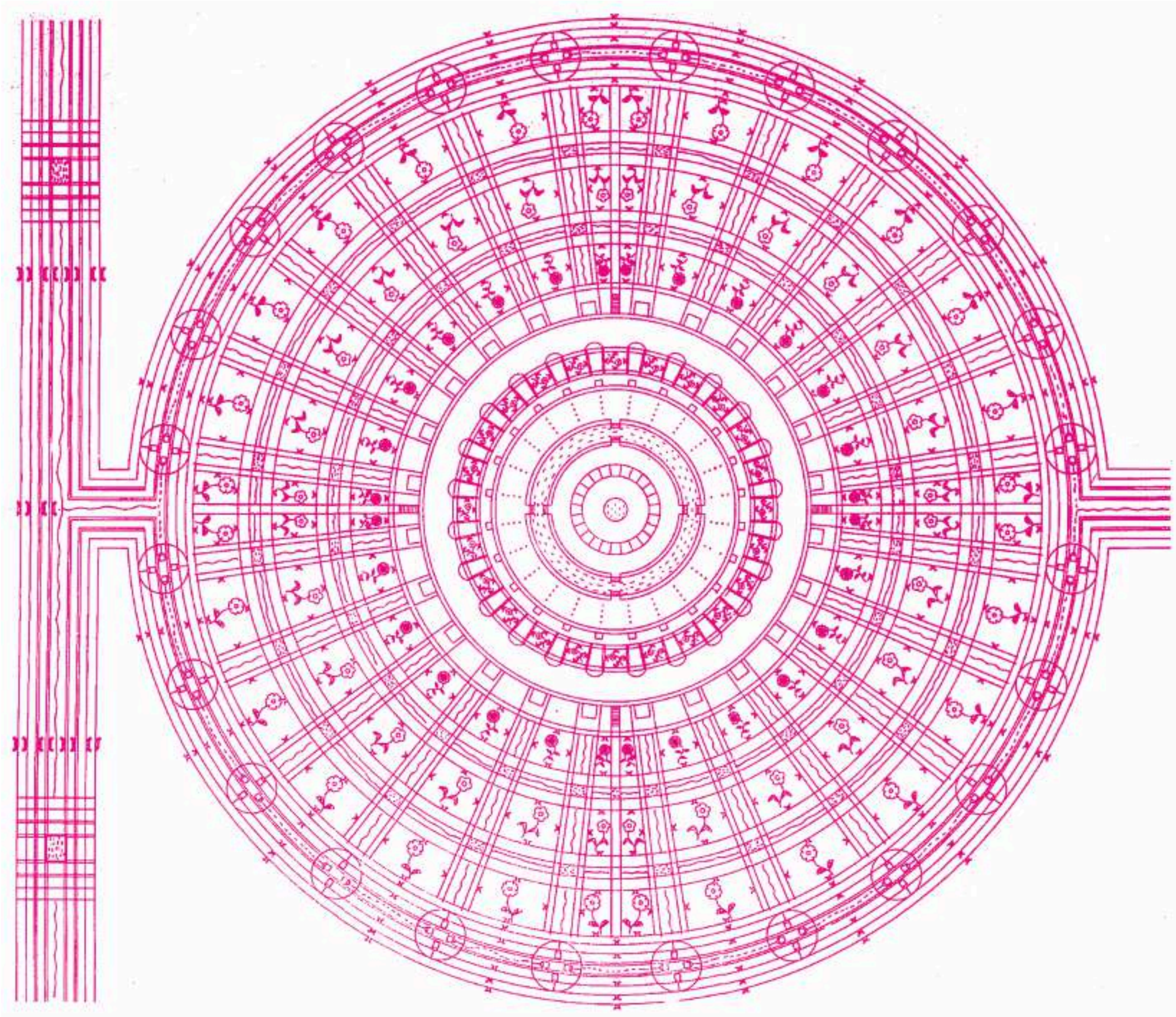

माणिक पहाड़ की चाँदनी तथा जमीन पर बगीचे, नहरें व महानद

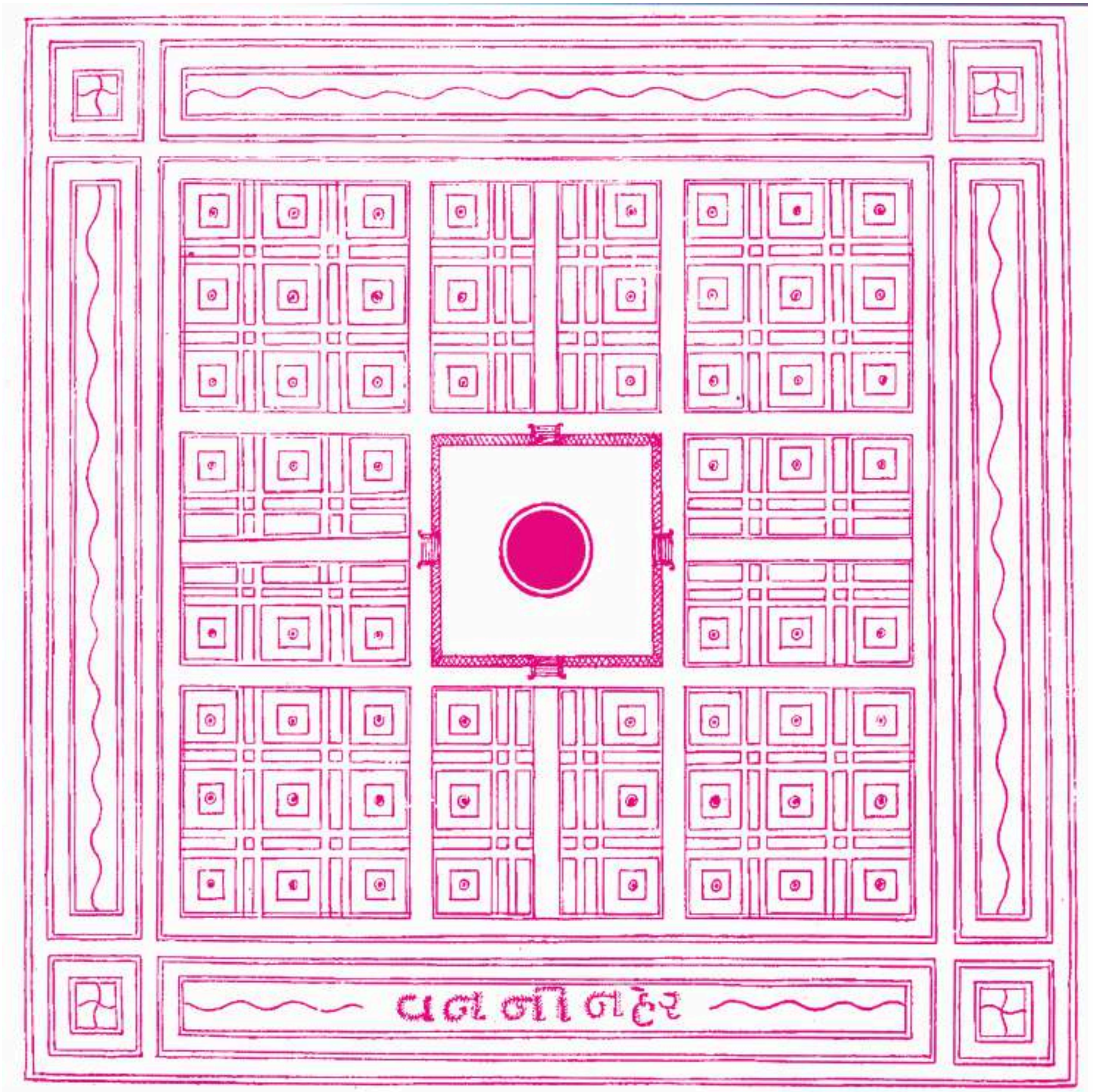

वन की नहर का एक पहल (ऐसे बत्तीस (३२) पहल फिरे हैं)

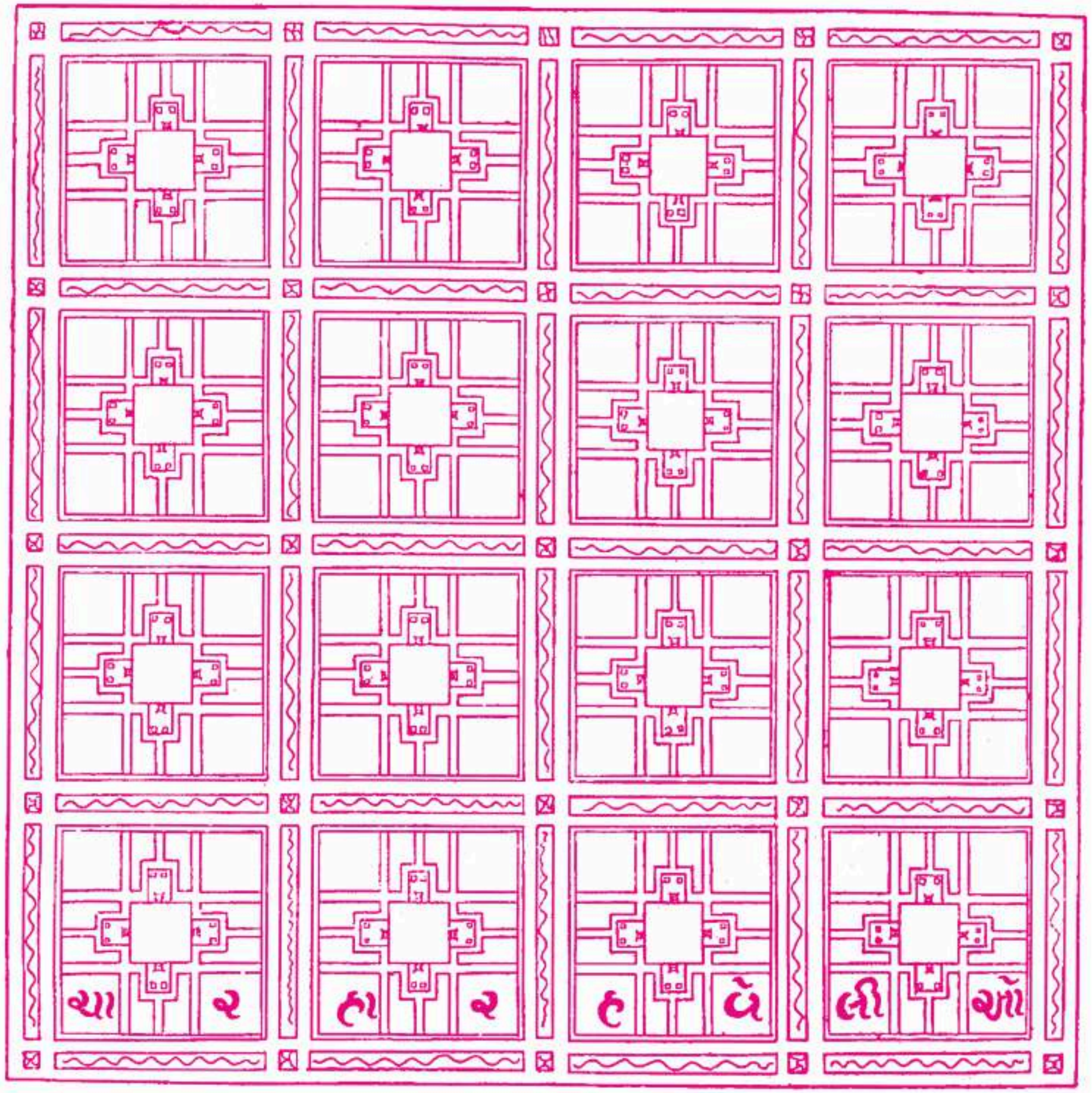

छोटी राँग (चार हार हवेली) नं. १

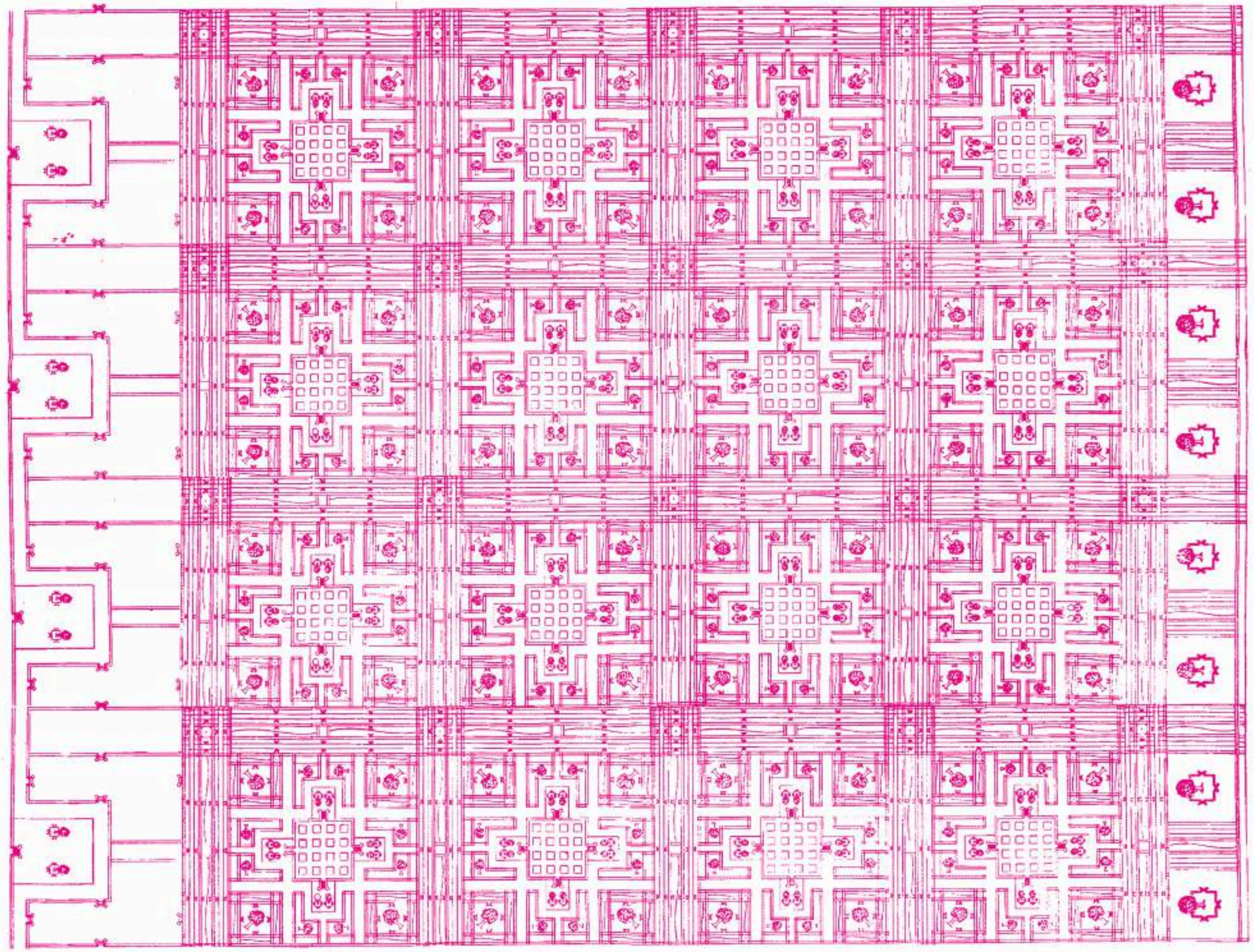

छोटी राँग (चार हार हवेली) नं. २

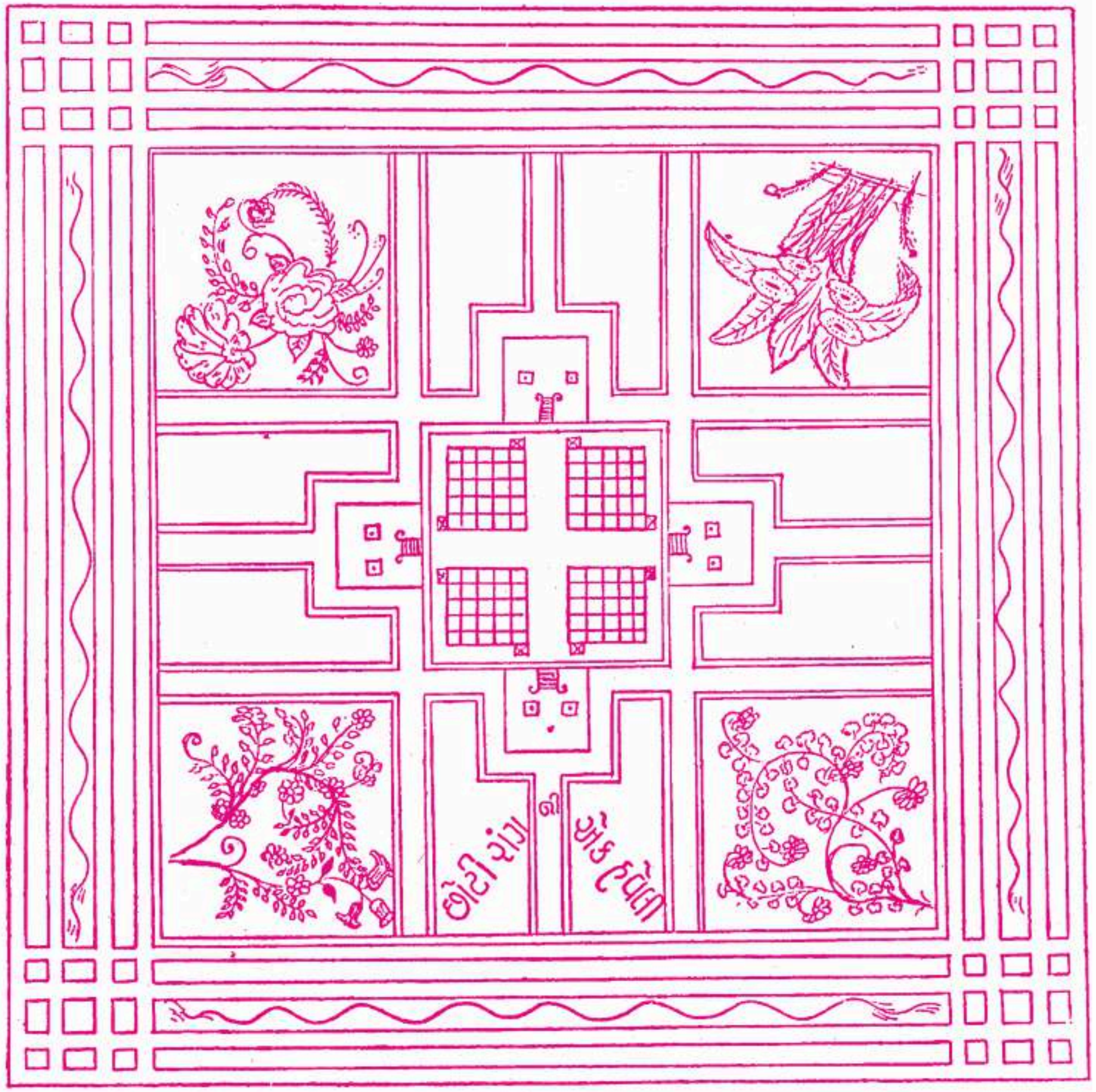

छोटी राँग की एक हवेली

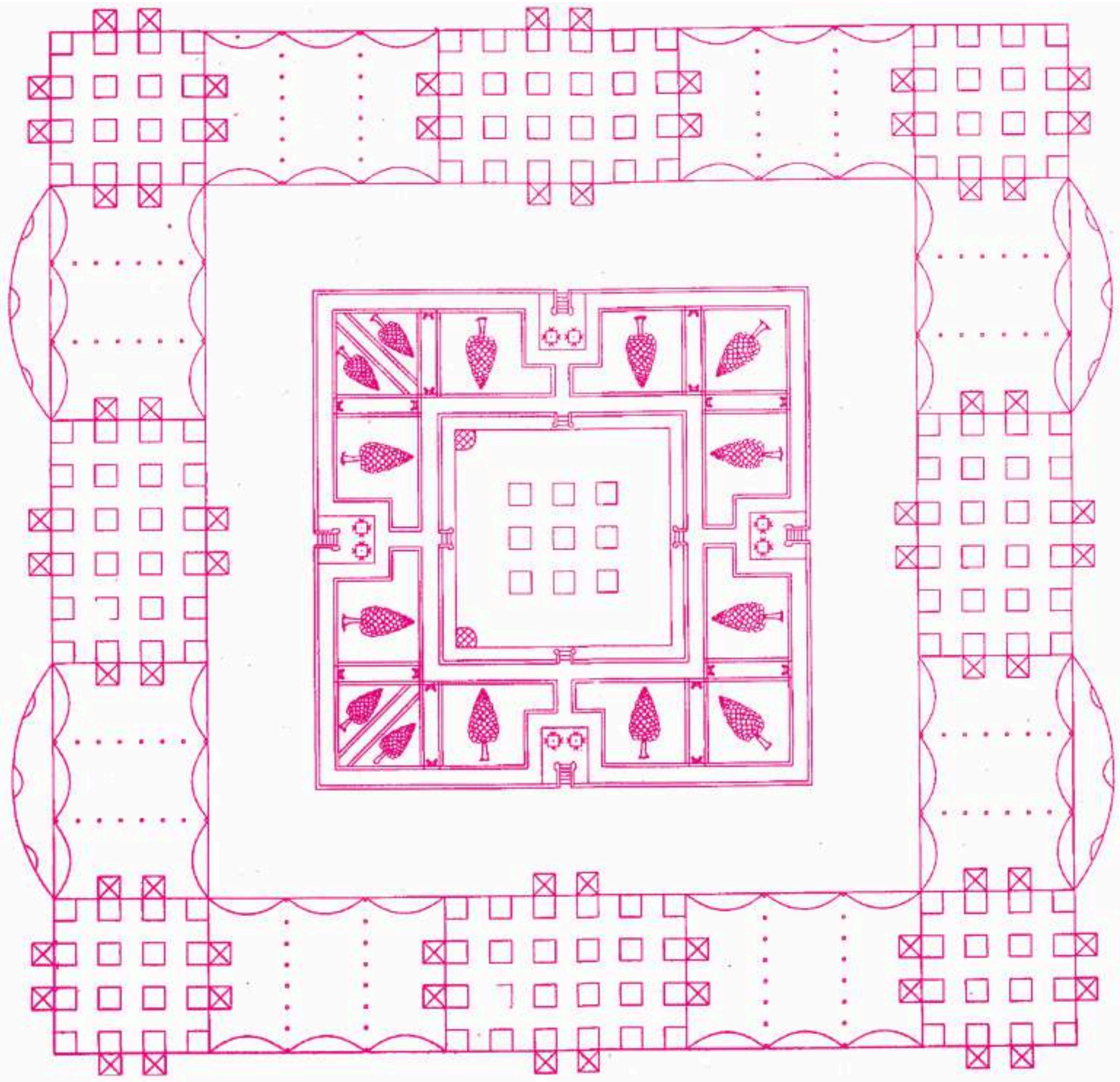

वड़ी राँग (दुर्ग-किला) का एक पहल (ऐसे बत्तीस (३२) पहल फिरे हैं)

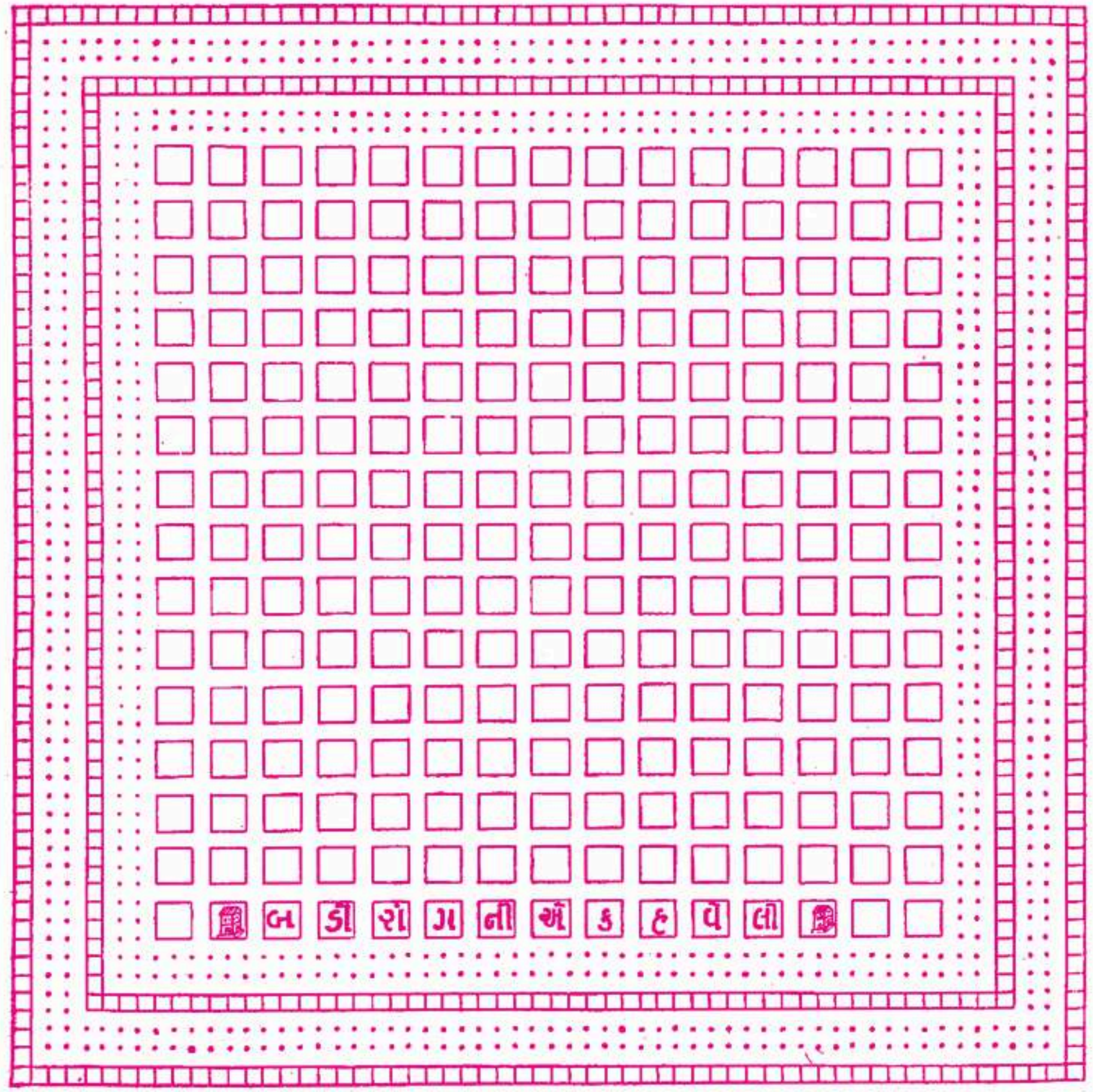

बड़ी राँग की एक हवेली

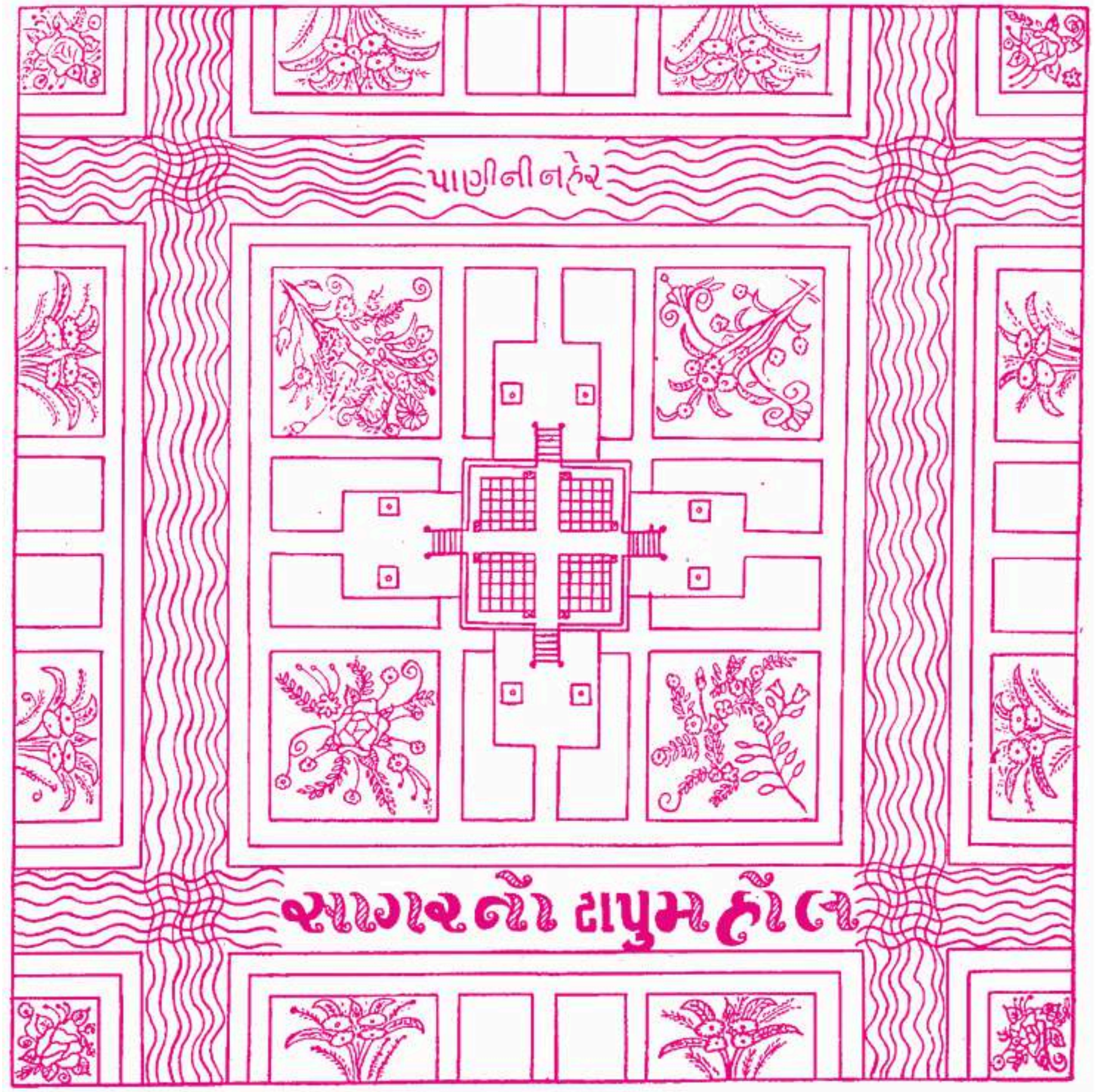

सागर (मध्य भाग की संधियाँ तथा टापू महल)

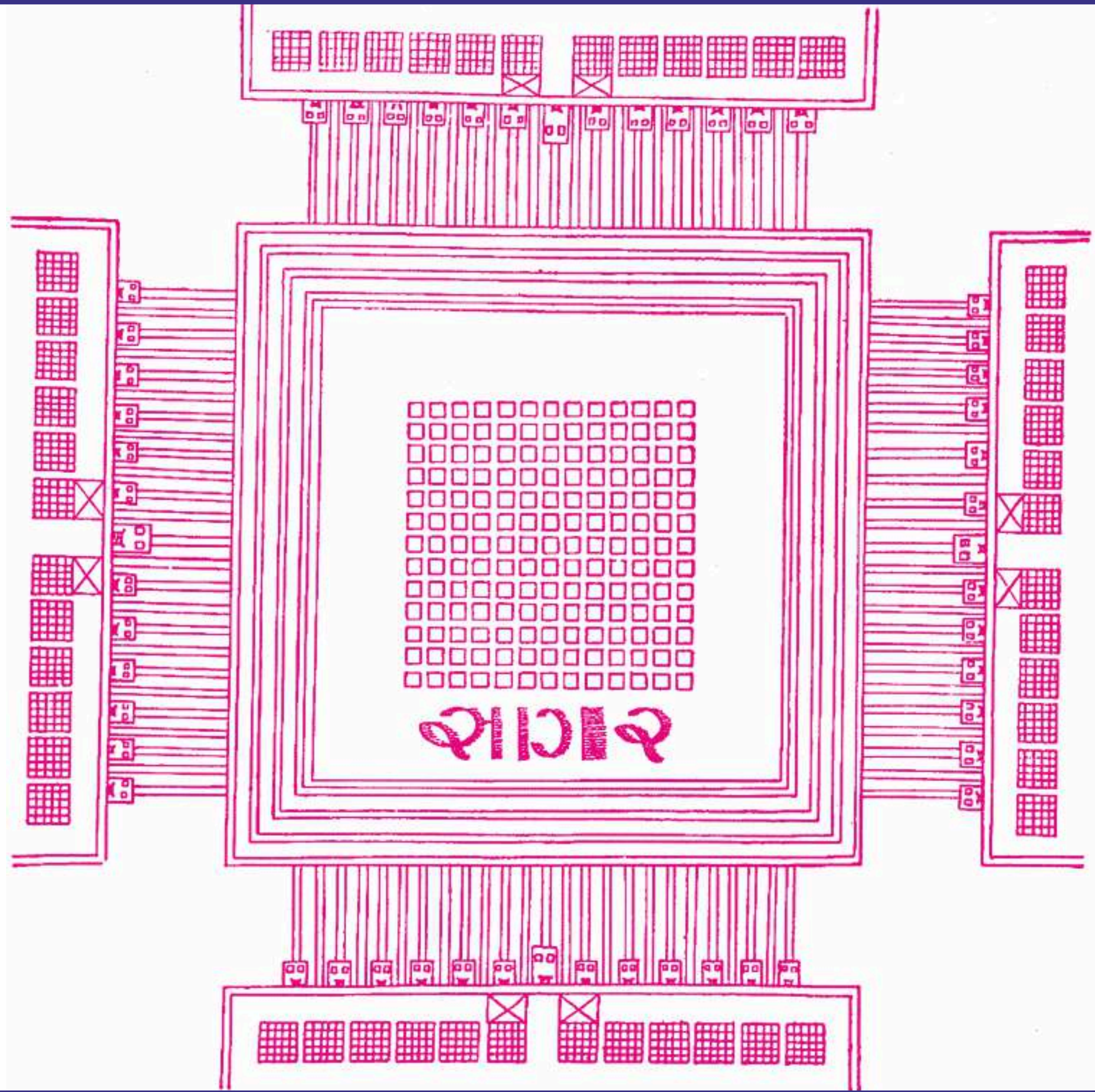

सागर का एक टापू महल

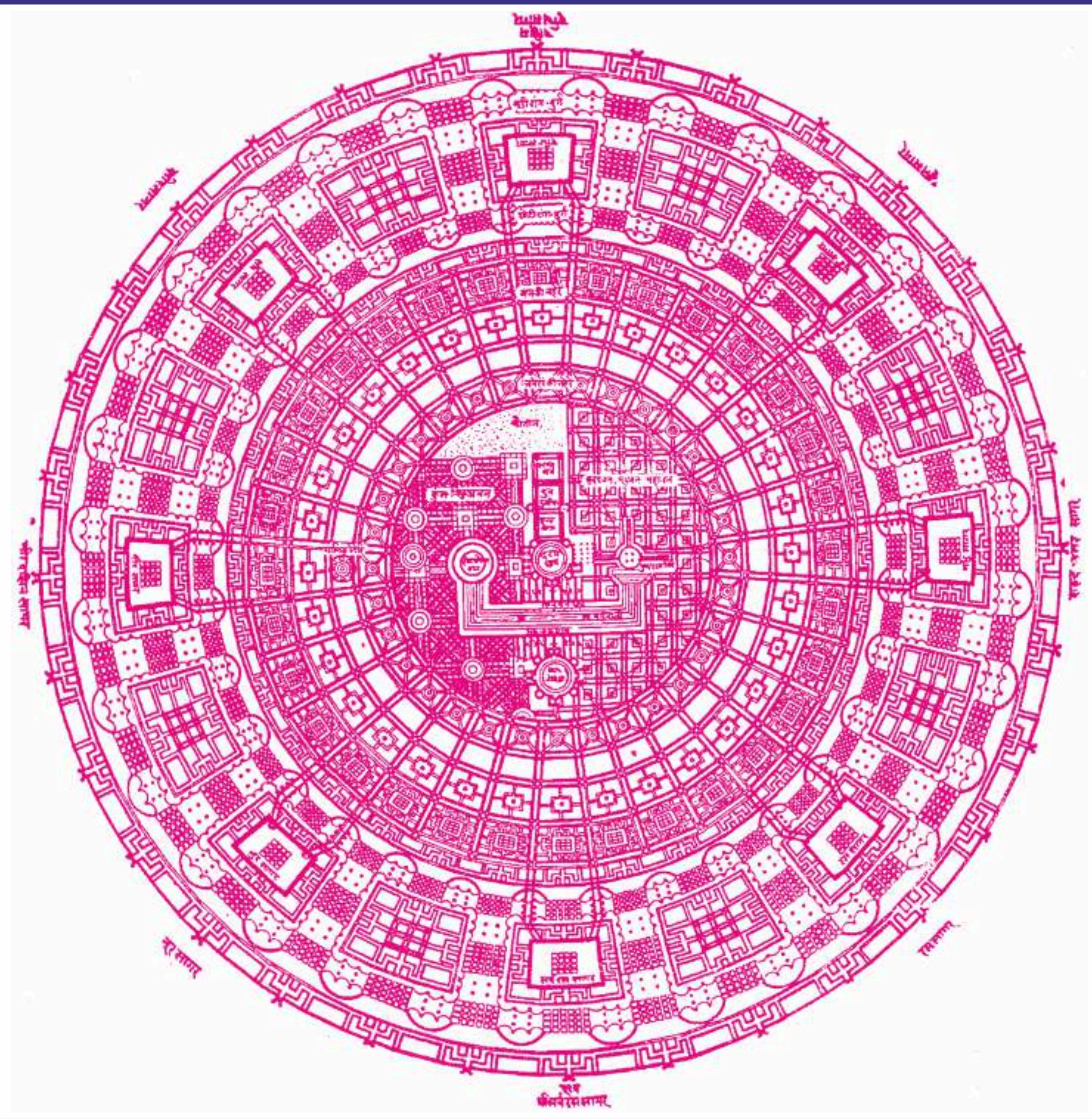

श्री परमधाम के पचीस पक्ष नं. १

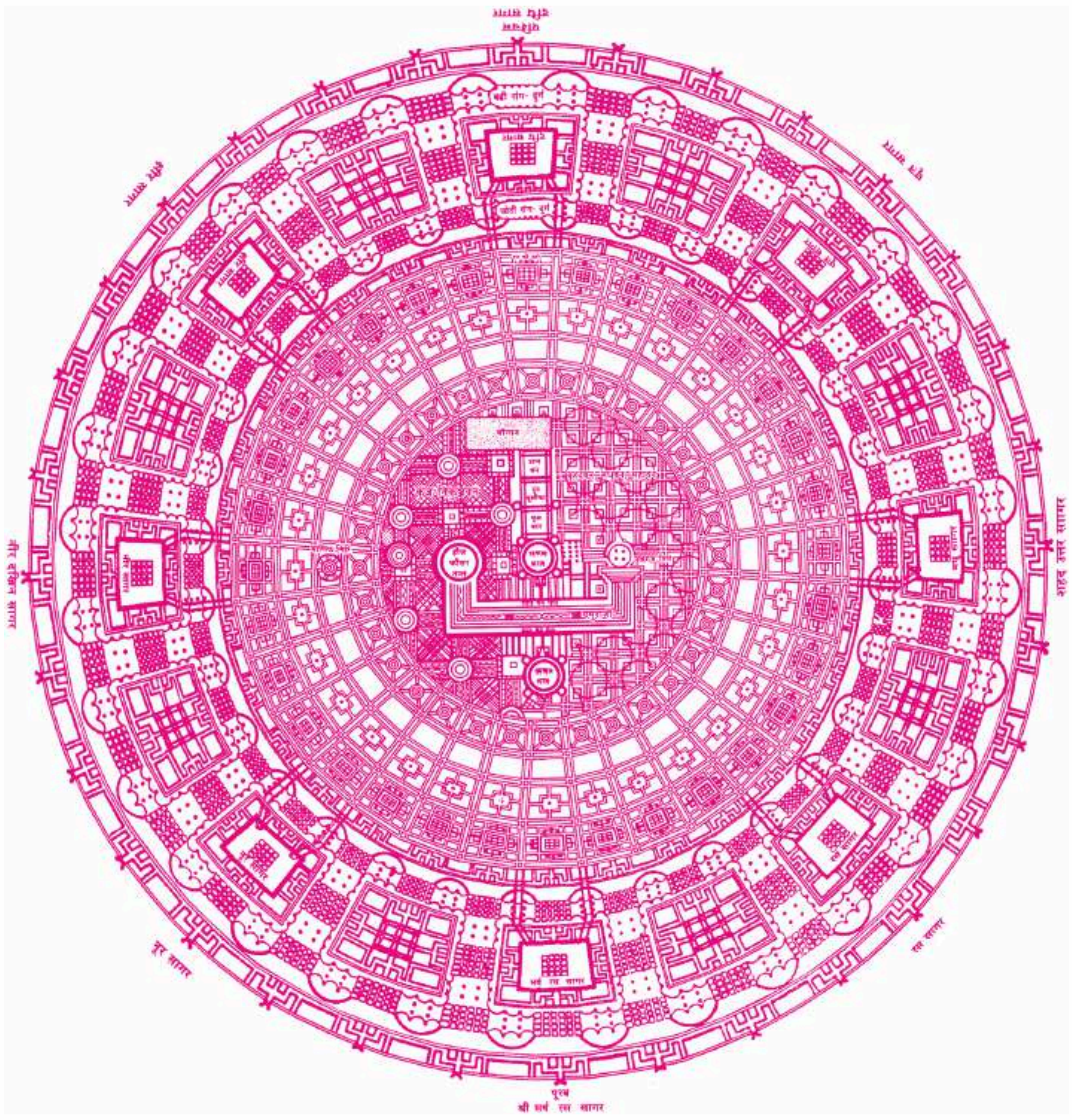

श्री परमधाम के पचीस पक्ष नं. २

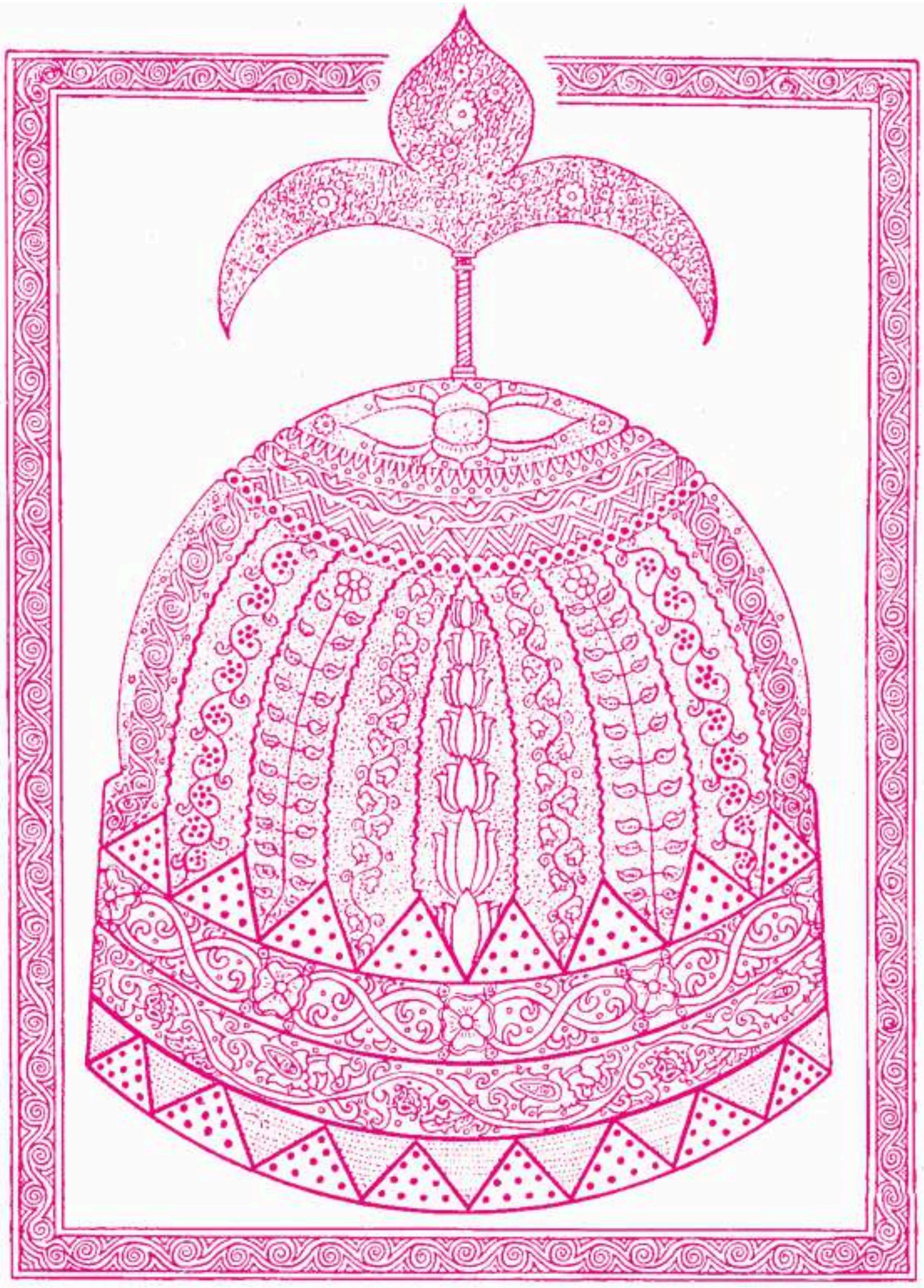

"दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन ।
दो तीन पर एक दो पर, ए जाने दस रंग रूह प्रवीन ।।"
-(सिनगार, प्र. २१ / चौ. १६९)।

मुकुट में स्थित त्रिकोण आकार की काँगरी में सर्वप्रथम चार रत्नों की पंक्ति है। उसके ऊपर क्रमशः उत्तरोत्तर तीन, दो एवं एक रत्न सुशोभित हैं। चतुर आत्माएँ ही इन दसों रंगों की शोभा जान सकती हैं ।

श्री राजजी का मुकुट